भाषाग्रंथक्रमसंख्या—४०

विदग्धमाधववार्त्ता

प्रकाशक :—
बाबा कृष्णदास
(ग्वालियर मन्दिर)
कुसुमसरोवर
पो० राधाकुंड (मथुरा)

दशमी)
०१६

समर्पणापत्र

परमस्नेहभाजन, हरिगुरुपरायण, भक्तवर,
नित्यधामप्राप्त, आगरा निवासी प्रसिद्ध
"डाक्टर" गोकुलनारायणजी व्यास
के पुनीत स्मरण में यह
ग्रन्थ प्रकाशित होकर
समर्पित है ।

(कृष्णदासबाबा)

प्राक्कथन

महाप्रभु चैतन्यदेव की कृपा से उनके पार्षद गोस्वामियों ने ब्रज को अपनी साधना-भूमि बना कर राशिभूत ग्रंथों का सृजन किया तथा अपनी मधुर-भक्ति से समस्त ब्रज-प्रदेश को रसप्लावित कर दिया। इनके ही शिष्य-प्रशिष्यों ने अनेक श्रेष्ठ काव्य-ग्रंथों का प्रणयन किया। जहां तक ब्रजभाषा-काव्य का सम्बन्ध है इनकी परम्परा में शताधिक कवि हुए हैं। इनमें से कई कवियों की रचनाएं कुसुमसरोवर निवासी भाववरिष्ठ श्रेष्ठात्मा बाबा कृष्णदास जी देहातीत कठोर परिश्रम करके हिन्दी-संसार के समक्ष प्रस्तुत कर चुके हैं।

चिन्तक विद्वान् डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने एक साहित्येतिहास में चैतन्य-सम्प्रदायी कवियों की हिन्दी रचनाओं का संकेत दिया था। किन्तु हिन्दी के अनुसंधाता तब पर्याप्त सामग्री के अभाव में इस दिशा में कार्य न कर सके। दूसरे, कतिपय विद्वानों ने ऐसा भी विचार व्यक्त किया कि बंगाली टोल ब्रजवासियों से सदा पृथक् रहा आया। अतः उनके आनुगत्य में ब्रजभाषा रचनाओं की उन्हें सम्भावना भी क्यों कर हो सकती थी ! वस्तुतः चैतन्य सम्प्रदाय के कवियों की परम्परा तथा काव्य प्रकाश में न आने के कारण ही ऐसा विचार उन्हें अवश्य बनाना पड़ गया होगा। यद्यपि 'भक्तनामावली' 'पदप्रसंगमाला', 'भक्तिसुमिरिनी' 'भक्ति-रसबोधिनी टीका' आदि ग्रंथों के देखने से स्पष्ट लक्षित होता है कि उक्त ग्रंथों में वर्णित अनेक भक्त चैतन्य-सम्प्रदाय के कवि हैं।

ब्रजभाषा गद्य की अपेक्षा ब्रजभाषा का पद्य साहित्य विपुल परिमाण में उपलब्ध है। ब्रजभाषा-गद्य का सर्वाति-प्राचीन रूप गुरु गोरखनाथ के ग्रंथ में उपलब्ध होता है। फिर दो सौ वर्ष के अन्तरिम के उपरान्त अर्थात् वि० सं० १७०० से बल्लभ-सम्प्रदाय का वार्ता-साहित्य उपस्थित होता है जिनमें मुख्यतः गो० गोकुलनाथ जी, गो० हरिराय जी, द्वारिकेश जी उल्लेखनीय हैं। राधावल्लभ-मत में दामोदरहित, प्राणनाथ, अनन्यअली, गो० चतुरशिरोमणि लाल और नागरी दास जी उल्लेखनीय हैं। संत कवियों की शिष्य परम्परा में दामोदरदास, मेघराज आदि जैसे गद्यकार हुए हैं। इसी जैन-धर्मानुयायियों में बनारसीदास, हेमराज पांडे आदि की हिन्दी गद्य सेवा उल्लेखनीय हैं। रीतिकाल के पूर्व हिन्दी का ब्रजभाषा-गद्य साहित्य प्रायतः भक्ति-उपासना से सम्बन्धित है। स्वतंत्र मौलिक ग्रंथों के साथ अधिकतर भावानुवाद, टीका, वचनिका आदि लिख कर ब्रजभाषा-गद्य का भण्डार भरा गया है।

चैतन्य-सम्प्रदाय द्वारा भी ब्रजभाषा गद्य की रचनाएं हुई हैं। इस सम्प्रदाय में जितना विशाल रसपूर्ण तथा पाण्डित्यपूर्ण साहित्य सृजित हुआ है उतना कृष्ण-भक्ति से सम्बद्धित अन्य वैष्णव सम्प्रदायों में उपलब्ध नहीं होता। इस सम्प्रदाय की साधना पद्धति तथा रस सिद्धान्त के प्रभाव की ओर आ० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह ने सर्व प्रथम हिन्दी के विद्वानों का ध्यान आकृष्ट भी किया था किन्तु अभी तक उस प्रभाव की ओर हिन्दी साहित्य के अध्येयताओं का ध्यान आकृष्ट हुआ नहीं है। इस सम्प्रदाय में संस्कृत तथा बंगला ग्रंथों के अनेक पद्यात्मक अनुवाद बाबा जी महाराज ने छपवाए थे। इनमें

रामरायकृत 'गीतगोविंदपद', रसजानि वैष्णवदास कृत 'भाषा-भागवत', वृन्दावनदास कृत 'गोविन्दलीलामृत भाषा', 'प्रेमभक्ति-चंद्रिका' तथा 'विलापकुसुमाञ्जलि', सुबलश्यामकृत 'श्रीचैतन्य-चरितामृत' आदि ग्रंथ महत्व के हैं। बाबा बंशीदास जी ने श्री भगवंतमुदित कृत प्रबोधानंद सरस्वती के 'वृन्दावन शतक' का अनुवाद काफी पहले प्रकाशित कराया था। इससे यह सुस्पष्ट है कि संस्कृत तथा बंगला आदि भाषाओं के न जानने वाले भावुक रसिक-भक्तों को, उन ग्रंथों में समाहित मधुररस-राशि का अनुभव कराने के लिए ही, उनके अनुवाद में प्रवृत्त होना पड़ा है। ध्यान देने की बात है कि गद्यात्मक अनुवाद की अपेक्षा पद्यबद्ध अनुवाद जटिल होता है किन्तु उपर्युक्त ग्रंथ पद्यबद्ध ही हैं। इससे यह अनुमान होता है कि चैतन्य-सम्प्रदाय में गद्य रचनाएं काफी परिमाण में हुई होंगी। प्रस्तुत गद्य वार्ता उसकी एक कड़ी है। पूज्यपाद बाबा कृष्णदासजी के पास 'चैतन्य-चरितामृत' नामक प्रसिद्ध बंगला महाकाव्य का विशाल ब्रजभाषा-गद्यानुवाद भी मेरे देखने में आया है। वृन्दावन निवासी गो० यमुनाबल्लभ जी के पास 'सत्संगचर्चा' तथा 'बारहवैष्णवन की वार्ता' की प्रतिलिपियां भी सुरक्षित हैं जिनका वे प्रकाशन कराने वाले हैं। मेरा अनुमान है कि चैतन्य-सम्प्रदाय का गद्य-साहित्य वृन्दावन के गोस्वामियों तथा राज्य ग्रंथागारों में सुरक्षित होना चाहिए।

प्रस्तुत वार्ता का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

पुस्तक की लम्बाई ५ इंच, चौड़ाई ६ इंच तथ कुल पृष्ठ संख्या १६२। प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियां। सम्पूर्ण ग्रंथ की लिखाई एक ही हाथ की। बीच बीच में सुधारादि भी उसी लेख में। प्रारम्भिक पत्र एक ओर खाली। वार्ता तथा वार्ताकार का

नाम अज्ञात। पुष्पिका में केवल इसका लिपि का वि० सं० १८७० दिया हुआ है। ग्रंथ प्रारम्भ होने से पूर्व खाली पृष्ठ पर किसी व्यक्ति ने 'गोपेश्वर रूप गोस्वामि संवाद' लिख दिया है।

वस्तुतः किसी व्यक्ति ने हस्तलिखित पोथियों की व्यवस्था करते समय इस ग्रंथ का प्रारम्भ देख कर ही इसका उक्त नामकरण कर दिया गया है। क्योंकि प्रारम्भ में 'ए रात्री मो श्री गोपेश्वर जी रूप गुसाईं सों कहत भये जो कछु प्रिया पीतम की लीला कहौ तव रूप गुसाईं हाथ जोरि कहे महाराज यह लीला अति गोपनीय है तब श्री गोपेश्वर जी फेर आज्ञा करत भये...' दिया हुआ है। यथार्थतः इस वार्ता के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि यह रूप गोस्वामी विरचित 'विदग्धमाधव' का ही अनुवाद है। 'विदग्धमाधव' के प्रारम्भिक अंशों में भी यही रूप मिलता है।

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण।

भो भोः, समाकर्ण्यताम। अद्याहं स्वप्नान्तरे समादिष्टोऽस्मि भक्तावतारेण भगवता श्रीशंकरदेवेन, यथा 'अये ताण्डवकलापण्डित इह किल '

गोपेश्वर, गोपीश्वर और शंकरदेव एक ही हैं। आ० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह द्वारा सम्पादित 'विदग्धमाधव' के पद्यात्मक 'गोविन्द हुलास नाटक' में गोपेश्वर के लिए 'उमांकंत' शब्द प्रयुक्त हुआ है :—

यह अग्या मोको दई उमाकंत भगवंत।
रिद्धि सिद्धि सब जगत गुरु पूरन करन समंत॥

ब्रज मण्डल में चार महादेव प्रसिद्ध ही हैं; वृन्दावन में गोपीश्वर, गोवर्द्धन में चकलेश्वर, कामवन में कामेश्वर तथा

मथुरा में भूतेश्वर। गोपीश्वर महादेव जी ने ही रूप गो०जी को स्वप्नादेश दिया था ऐसा चैतन्यचरितामृतादि में उल्लेख है। यद्यपि यह वार्ता 'विदग्धमाधव' का अविकल क्रमबद्ध अनुवाद नहीं है तथापि इसमें उक्त नाटक के अनेक प्रसंगों को समाविष्ट किया गया है। तृतीय प्रसंग में दानलीला का अत्यन्त रसपूर्ण विस्तृत वर्णन है। प्रत्येक 'प्रसंग' में राधा कृष्ण वियोग के बाद मिलन तदुपरान्त निंकुजविहार का वर्णन किया गया है जो 'विदग्ध माधव' से इसकी किञ्चित पृथकता सूचित करता हैं। दानलीला का प्रसंग रूपगोस्वामि प्रणीत 'दानकेलिकौमुदी' की ही छाया है। इसमें 'भक्तिरसामृत सिंधु' तथा 'उज्ज्वल-नीलमणि' आदि रसग्रंथों में प्रतिपादित उज्ज्वल मधुररस का वार्तारूप से आख्यान किया गया है। 'विदग्धमाधव' की कथा वेणुनाद विलास, मन्मथ लेख, राधासंगम, वेणुहरण, राधा-प्रसादन, शरद्विहार तथा गौरीतीर्थ विहार नामक सात अंकों में विभक्त है, और इस वार्ता की कथा चार प्रसंगांतर्गत वर्णित है। इसमें चौथे प्रसङ्ग में लिपिकार ने नाम नहीं दिया है, शेष तीन प्रसंग हैं 'वनविहार लीला प्रसंग, व्रज वृंदावन लीला सरदविहार' तथा 'वृन्दावन लीला वरसा विहार'।

इस वार्ता की अनेक कापियाँ बीकानेर, दतिया, कांकरोली आदि स्थानों में मिलती हैं। विद्वद्वर अगरचन्द नाहटा ने 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की पत्रिका 'ब्रजभारती' में रूप गोस्वामी कृत 'विदग्ध माधव' के कई गद्यानुवादों का विविध नामों से उल्लेख किया है, 'राधा माधो लीला विलास', 'माधो राधा विलास', 'राधा मिलन', 'पूर्णमासी जी की कथा', और 'विदग्धमाधो'। ये सभी प्रतियाँ अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में सुरक्षित हैं। विद्याविभाग, कांकरोली में इसकी

दो प्रतियां हैं जिसमें एक प्रति अपूर्ण है। दतिया में जो 'शृंगार सुख' नामक रूपसनातन कृत रचना नागरी प्रचारिणी सभा काशी की खोज रिपोर्ट में उल्लिखित है वह भी 'विदग्ध-माधव' का ही अनुवाद ज्ञात होता है।

इन सभी प्रतियों में केवल वार्ता के नाम का भेद है। वस्तुतः 'विदग्धमाधव' की कथावस्तु के आधार पर ही लिपि कर्ताओं ने पृथक्-पृथक् नाम दे दिया है। अधिकांश प्रतियों में ग्रंथ कर्ता 'रूप सतातन' दिया हुआ है। कांकरोली की प्रतियों में पूर्णमासी जी की वार्ता' तथा 'विदग्धमाधव' नाम मिलता है। रूप सनातन एक व्यक्ति न होकर दो पृथक् व्यक्ति थे। प्रतिलिपि कारों के भ्रम या प्रमाद वश ही ऐसा हुआ है।

'ब्रजभारती' के 'रूप सनातन कृत ग्रंथ विदग्ध माधो' नामक लेख में अन्वेषक नाहटा जी ने भ्रम वश उसका लेखक रूप गोस्वामी नाम दिया है। 'विदग्ध माधव' का रचना काल सं० १६०० के पूर्व है किन्तु इन वार्ताओं की सबसे प्राचीन प्रति वि० सं० १७५४ की है जिससे स्पष्ट होता है कि इन ग्रंथों का लेखक रूप गोस्वामी से पृथक् होना चाहिए।

प्रस्तुत वार्ता के 'वृन्दावनलीला बरसाबिहार नाम तृतीय प्रसङ्ग' में 'रसिक प्रीतम' की छाप से दो पद मिलते हैं। पद गद्य के भावानुकूल हैं। इससे अनुमान होता है कि इस वार्ता लेखक 'रसिक-प्रीतम' नामक कवि हैं।

यह वार्ता संक्षिप्त होते हुए भी बड़ी ही रस पोषक है। लीलातत्व तथा ब्रजरस का अत्यन्त भावपूर्ण वर्णन इसमें किया गया है। मधुर रस के साथ वत्सल रस तथा सख्य रस का भी मोहक वर्णन इसमें मिलता है। बसंत ऋतु विहार,

कुंज विहार, जल विहार, फूल लीला, युगल शृंगार, छाक आरोगन लीला, दानलीला, गोचारण लीला, वेणुवादनलीला, राधा-कृष्ण नृत्य-लीला आदि इसके मार्मिक प्रसंग हैं। गद्य होते हुए भी इसकी वर्णन शैली बड़ी ही रसपेशल, सुबोध और प्रवाह-पूर्ण है जो पद्य का सा आनंद देती है। एक दो उद्धरण द्रष्टव्य हैं :

"ब्रन्दावन के वृछ देषौ तौ फल फूल के भार तें नय रहे हैं।"

"पहले ही श्री कृष्ण कों नाम सुनि और मुरली धुनि सुनि व्याकुल हती दर्सन की अभिलाषा वढ़ी हती और जब श्री कृष्ण को महामोहन सरूप देष्यौ राधा जी के हृदय तें आसू की धारा चलन लागी विचित्र भाव महा अलौकिक सी होत भई।"

"राधा जी ने संकेत वट के तर या प्रकार रस रूप मुरली वजाई जो श्री कृष्ण हूँ या प्रकार कवहुं न वजाई अद्भुत औघट विकट तान वंसी की उठी जो पसु पंछी संकेत वट के सव मोहित ह्वै गई। पवन वंद ह्वै गई श्री जमुना जी को प्रवाह चलत थकि रह्यौ गोवर्द्धन आदिक ब्रज के पर्वत सब द्रवीभूत भए नाना प्रकार के वृक्ष फल फूल सो नमित श्री राधा जी की और झुकि गये। मधु की धारा वहन लागी। सूर्य कौं रथ चलत तें रह गयौ।"

श्री राधा का पत्र

"तुम्हारो नाम रूप चित में मुरली की तान करि तुम्हारो सरूप मेरे हृदय में वसत हें सो ध्यान करि अव लों धीरज

धरि प्राण राखे हो अब जो कृपा करके वेग तुम मोकों मिलो ना तो ये प्राण तुम्हारे पास आवेंगे और वहुत का लिखें तुम चतुर सिरोमण हो कृपा करि वेगे दर्सन दीजे यही वारंवार विनती है "

प्रस्तुत वार्ता चैतन्य-सम्प्रदाय के गद्य-साहित्य का द्वार खोलती है। जिस प्रकार इस सम्प्रदाय का पद्य-साहित्य-प्राकट्य बाबा जी महाराज के कर कमलों द्वारा हुआ है ठीक उसी प्रकार इस सम्प्रदाय के ब्रजभाषा गद्य के प्रथम पूर्ण प्रकाशन का कार्य इस वार्ता द्वारा सम्पन्न होता है। इससे हिन्दी-जगत् उनका चिर ऋणी रहेगा। इस वार्ता की प्रतिलिपि उनकी अज्ञानुसार स्वयं मैंने ही की है और यह उसी रूप में प्रकाशित की जा रही है ताकि उसके गद्य का उचित मूल्यांकन हो सके। पाठान्तर का कार्य अनेक असुविधाओं के कारण सोचते हुए भी सम्पन्न न हो सका। इसमें समय और अर्थ ही सबसे बड़ा अन्तराय था। इस वार्ता का सुनिश्चित नाम उपलब्ध न होने के कारण इसका नाम 'विदग्धमाधव वार्ता' रखा गया है। क्योंकि यह 'विदग्धमाधव' का अनुवाद ही है और वार्ता रूप में लिखित है। अतः दोनों का ही संगम उचित समझा गया है। आशा है, विद्वान इस कृति का उचित अध्ययन करेंगे। अन्त में पुनः पूज्य बाबा जी महाराज के प्रति मेरा मन श्रद्धावनत है।

—नरेश बंसल

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्री रजनी पारेख आर्ट्स कॉलिज,
खम्भात, (गुजरात राज्य)

॥ विदग्धमाधवनाटी ॥

श्री राधा रमनो जयति प्रिय श्री ब्रषभांन कुल कौमदी राधिका श्री कृष्नो जयति नंदकुल चन्द्रमाजयतिरात्री स्वप्न मो श्री गोपेश्वर जी श्री रूप गुसांई सों कहत भये जो कछु प्रिया प्रीतम की लीला कहौ तब रूप गुसांई हाथ जोरि कर कहे महाराज यह लीला अति गोपनीय है यह रस के आस्वादिक तो विर्ली ही है तव श्री गोपेश्वर जी फेर आज्ञा करत भये जो जब आव फूले है तब कोयल तों सुष पावत हे ऊंट अभागो विमुष जीवतो नहीं तातें निसंक होइ प्रिया प्रीतम की लीला गावै तब श्री रूप गुसांई राधा कृष्ण की लीला कहत भये वृन्दावन नित्य विहार जानि के उज्जेन को वास छोड़ि सांदीपनि की माता पूर्णमांसी वाको नाम सों वृंदावन वास कीयो और पोतो एक साथ ले आईं जा पोता को नाम मधुमंगल सो मधुमंगल श्री कृष्ण को प्रिय गोप ग्वालन के संग मिलिकें गाय चरावें श्री कृष्ण कों हसावें षिलावै और नन्द राय जी जसोदा जी मधुमंगल सों वहुत प्रीति करें जो हमारे पुत्र कों हसायन हों प्रसन्न राखत है और नंदी-मुखी नाम गर्ग की बेटी सो पूर्णमासी जी की टहल में रही और वृंदादेवी हू पूर्णमासी जी की टहल करे एक समय बसंत रितु आई सो श्री व्रंदावन की सोभा देषि श्री राधा कृष्ण जुगल स्वरूप की प्रेम हृदय में उदीपन भयो तब पूर्णमांसी जी प्रेम गद्गदवानी से नन्दीमुखी सों वोलत भई जदपि पूर्णमांसी जी और नंदीमुखी श्री कृष्ण स्वामिनी जी जुगल रस जो नित्य नवीन हे सो दोउ के प्रेम में मत्त रहत हैं परंतु तउ वसंत रितु को प्रेम महा उत्तम ते उत्तम सर्व रस के उपर है तातें हृदय में प्रेम बाहर उमगत है श्री राधा जी के हृदय को प्रेम बाहर प्रगट होती है सो पूर्णमासी जी बोली ऐसो मेरौ भाग्य कब

होइगी जी श्री राधा कृष्ण को जुगल रस को बिहार इन नैन सौं दर्सन पाऊंगी तब अपने भाग्य की पूर्णता जान्हूगी तब नंदी-मुखी पूर्णमांसी जी सौं कहे श्री राधा जी की प्रीति श्री कृष्ण सौं उपजाईये श्री कृष्ण की प्रीति श्री राधा जी सों उपजाइये या प्रकार अन्तरंग सखी होय दोउ सरूप की सेव्य दास भाव सों करिये तब जुगल सरूप लीला के सहायक जान के कृपा करि दर्सन देहि सावा बड़ो पदार्थ है तोते कछु सेवा को विचार करो तों जुगल कीसोर प्रसन्न होइ के लीला को दर्सन करावेंगे यह बात नंदीमुखी की सुनि के पूर्णमासी जी बहुत प्रसन्न होय सराहना करी और कहे नंदीमुखी तू धन्य है जो जुगल सरूप की सेवाभावना में प्रेम है तातें अब तू ब्रषभानपुरा जो वरसाने में जाय श्री राधा जी की बिषाखा सषी हे सों मेरी प्राणपिये हे सों तू बिषाखा जी सों मेरी बात कहियो जो तुम श्री कृष्ण के सरूप को चित्र दरसन कराय प्रीति प्रगट करियो काहे तें श्री कृष्ण की ऐसी माधुरी मूरति हे जो श्री राधा देषि के मोहित ह्वै जायगी यह बात तू वरसाने जाय विसाखा सों कहों और में वन में जहां श्री कृष्ण गोचारन लीला करहें तहां जाय के श्री राधा जी को नाम श्री कृष्ण के कान में सुनाय काहेते श्री कृष्ण के हृदय में श्री राधा जी को प्रेम उत्पादन कराउगी काहे तें जहां श्री कृष्ण राधा जी को नाम सुनगे तहां सब खेल भूल जायगे या प्रकार दोउ जनी मन में प्रसन्न होइ विचार करि चली सो नंदीमुखी वरसाने कों गई पूर्णमासी जी नन्दगांव की ओर चली सो दूर ते पूर्णमासी जी देषे तो सगरे सषा सहित श्री कृष्ण गाय लीए नंदगांव सों गोचारन करन के अर्थ आवत है सन्मुख जशोदा जी नन्दराय जी प्रेम में व्याकुल होय अपने पुत्र को गाय के खडिक लों पहुँचा बन को आवत है सगरे सषा सो हा हा करि विनती करत हैं यह मेरो पुत्र

श्रीकृष्ण महामुन्ध है कछु जानत नाहीं तातें तुम नीके राखियौ में सांझ तुम सबन को इच्छा भोजन कराउगी बेगे उजियारे में वन तें आइयो में छाक पठाउगी सो अरोगाइयौ या प्रकार सखा बलदेव जी कों पुत्र कों सौंपि किं पाछे फिरि तब नंदराय जी ने जसोदा जी सों कह्यौ बालक बड़ौ भयौ अब काहू गोप की बेटी बने तो विवाह कीजें तब जशोदा जी बोलीं अबही तों मेरो पुत्र श्रीकृष्ण के मुख में दूध को वास आवत है अवही मुख को दूधहु नहीं सूख्यौ अवही कैसौ विवाह रोयके माखन मागत है अबही पुत्र के पालना झूलन के दिन है तुम व्याह की कहा करत हौ यह बात सब मधुमंगल सुनिकें जशोदा जी की तारी देकें हस्यौ श्री ठाकुर जी सौं कह्यौ जसोदा मात सांच कही तिहारे मुष कों दूध नाहीं सूख्यौ और जाके लालच करि गोप-वधू तुम्हारे मुष को अधरामृत पान करिवे के लीए द्वार द्वार पर ठाढी हैं कहा जानिये इन सों कौन समय मिलनि हौ सो बात की नंद जसोदा कों खबर हू नांही हैं तब श्रीकृष्ण दौरि के मधुमंगल के पास जाय कहन लागे भैया तू बड़ौ मूरख है गुरजन सब सुनत है तू ऐसौ हास्य करत है तोकों झूठ बोलत लाज हू नाही है बड़ेन के आगे ऐसा हांसी कभी हू न करियें तब बलदेव जी ने नंदराय जी सों कही बाबा जू तुम घर कों जाव तो हम गाय लेकें बन में जाय खेलें तब नन्दराय जी ठाढे रहे जसोदा जी कहे बेटा में तुम्हारे लीए षीर करत हौं सो तुम आइवे में अबेर मति करियो खीर सीरी भये स्वाद न लागैगी यह बात कहि नंदराय जशोदा जी घर गई श्रीकृष्ण बलदेव जी मधुमंगल श्री दामा और सुबल आदि अनेक सषा गैया ले आगे बन में पधारे पूर्णमासीजी यह लीला को सुख देषिकें अपुनी पर्ण-कुटी में आई सो विचारि करि एक मटुकी भरिकें लडुआ की मारग में जायकें एक कुंज की लता के भीतर बैठि रही ईहा

श्रीकृष्ण बन लत कुंज की शोभा देषि आनन्द पाय कें श्रीकृष्न बलदेव जी सों कहन लग्यौ ये ब्रंद्रावन के ब्रछ देषौ तौ फल फूल के भार तें नम रहे हें जैसे भगवदीय कों भगबान फल मिले उनकों देन्यता होय नमें हैं और ये ब्रछ नैकें तुमतें वीनती करत हैं जो हमारी ब्रछ जोन छुडावौ तो हमहूँ सखा ग्वाल की नाई सदा तुम्हारे संग रहें यह बात श्री ठाकुर जी की मधुमंगल सुनिकें श्रीकृष्न के सन्मुख आयकें कहन लागे तुम्हारे ये ब्रंदा-बन रूष देषे कहा हमारौ पेट भरेगो हम तौ श्री जसोदा जी की रसोई नाना प्रकार की सामग्री देषि सुष पावत है जाके लीए तें पेट भरे जाके देषे भुष भागे ताके देषे सुष उपजत है तब श्री कृष्न ने मधुमंगल सो कहै भैया तू ब्राह्मण है ताते तोको भोजन करनो बहुत प्रिय है सो यह मेरी कुंजलता ऐसी है जिनकी सूषी वेली लता तिनहू सो लाडपैयत हें तब मधुमंगल बोल्यौ ब्यौ तुम सदा कहत हो जो में झूंठ नाही बोलत परंतु आजु में तुम्हारी परिछा लेत हो यह कहि मधुमंगल नें श्रीकृष्न की भुजा पकर ठाडौ भयौ जो सुखी वेल लता मे ते लडुवा मोकों दिषावो तो तुम सदा सांचे तब श्रीकृष्न एक सुषी वेल हुती जा कुंज में पूर्णमासी जी लडुवा लेके जाय बैठी हुती तहां आइ ठाढे भए तब श्रीकृष्ण मधुमंगल सों कहे तुम लता कों बिनती करो तुमारे मनोरथ सब पूरन होहिगे तब मधुमंगल लता कों डंडोत करि हाथ जोरि के कहन लाग्यौ हे लता तुम वृन्दावन की सूषी वेल हो स्वरूपात्मक अलौकिक हो सो हम भूषे है हमकों लडुवा देहु तों हम भोजन करें हमारी भूष जाय ईतनो मधुमंगल कहत ही कुंजनितें पूर्णमासी जी सुनि लडुवा भरी मथनी मे लेए सन्मुख निकस आई तब श्रीकृष्ण लडुवा लीए पूर्णमासी कों देषि हसन लागे मधुमंगल सों कहे मूरष कछू हमारे श्री वृन्दावन की वडाई झूठी हे देष तोकों लडुवा मिलेगी की नाहीं मे जो बात

कही सो सांची मानियों या भांत कहत हते इतनेह में पूर्णमासी जी नें लडुवा की हांडी श्री ठाकुर जी के आगे राषी और कहे यह लडुवा श्री राधाजी की नानी मुषरा ने तुमकों पठाये हैं या प्रकार पूर्णमासी जी ने कही सो श्री राधा जी को नाम सुनत ही श्रीठाकुर जी के सगरे अंग में रोमंच ठाढ़े भए आनंद हूं में बहुत भयो पाछे मिलन के लीऐ विरह प्रगट भयो परंतु श्री वलदेव जी सषा पास जानि प्रेम को धीरज कर हृदय में ढांकि कें श्रीकृष्न हंसकें पूर्णमासी जी सों पूछन लागे मुषरा ने हमकों वन में लडुवा पठाये है सों आज मुषरा के कहा उत्सव है तब पूर्णमासी जी हंसिके श्री ठाकुर जी सों कहन लागी अहो रसिक-वर श्रीकृष्न तुम तो चतुर सिरोमन हो सो सुनो कीरत जी की वेटी जो राधा है ताकों जटिला को वेटा अभियमन्य सों मागनो भयो हे सो आज बरसाने उत्सव भयो है तब श्रीकृष्न पूर्णमासी जी सों कहे वरसाने उत्सव भयो सो तो हम जाने परन्तु तुम रिषि पत्नी हो यह वसंत रितु आई है सो तुमहू कछु अपने मनोरथ को उत्सव करो जातें तुमकों सुष होइ तुम हमारे पूज्य हो गुरू माता हो लीला में सहायक हो तब पूर्णमासी जी यह भेद के वचन सुनि प्रसन्न होई लीला संबंधी वार्ता श्रीठाकुर जी सु कहन लागी हे नागर चतुर सिरोमणि श्रीकृष्न अब यह वसंत रितु आई है अबतो ब्रज में जीतनी ब्रज सुन्दरी हैं कन्या हैं सो सगरी वन में फूल तोरन कों आवेंगी तव श्रीकृष्न जन में जानें जी पूर्णमांसी परम चतुर है मेरे मन को आसय गूढ जाव जानें तब श्र ठाकुर जी नें बलदेव जी सों कहे तुम ये लडू ले जाय श्री यमुना जी के तीर अपुनो सषान सहित भोजन करो हम श्रीदामा सुवल सहित संकेत छाया नीचे विश्राम करत हैं तब श्री वलदेव जी तो श्रीठाकुर जी के लीला के सहायक हैं सो सगरे सषा गोप कों ले गाय कों आगे करि चले सो श्री यमुना जी के तीर भोजन करन लागे नाना प्रकार के षेल सषान के संग

चलन लागे और पूर्णमासी जी श्री राधा जी को नाम श्रीठाकुर जी को सुनाय विरह प्रेम उपजाय अपुनी प्रेम कुटी में जात भई ईहां श्रीकृष्न नें श्रीदामा सषा के कांधे पर हाथ धर कहन लागे जो में श्रीराधा जी को नाम सुन्यो तबते मोकों श्रीराधाजी बिना जुग समान छन बीतत हैं सो मोकों प्रेम उन्माद प्रबल भयो हैं तातें में तुमसों पूछत हों तुम राधा कों कबहूँ नैन सों देषेहु तब सुबल हंसिकें कहन लाग्यौ है श्रीकृष्न श्रीदामा की तो राधा बहन सगी हैं तब श्रीकृष्न कहे ताही सों श्रीदामा राधा की अनुहार है सो जहां तहांई राधा न मिले तहां तांई श्रीदामा सो मन लगाय काल काट निर्वाह करयत हैं यह कहि एकांत कुंज में श्रीठाकुर जी जाय बैठे अकेले श्रीराधा जी को ध्यान करि प्रेम में मगन होइ कें महाविह्वल भये मुरली में श्रीराधा राधा रटन लागे और नंदीमुखी बरसाने जाइ विसाषा सों मिलि कें कही तुम कों पूर्णमासी जी ने अर्सिवाद कहयो है और यह कहे जो श्रीकृष्न मूरति को चित्र श्रीराधाजी कौ दरसन करावोगी तब लीला को विस्तार होयगो तब लीला कों सुष तुमहूं अनुभव करोगी और हमहूं को अनुभव होइगो इह विसाषा जी सुनत ही श्रीकृष्न को चित्रि लिषि सुन्दर श्रीराधा जी के पास आई सो हसत आई तब श्री राधा जी नें विसाषा सौं पूछ्यो आजी अैसी बस्तु कहां पाई हैं जो बहुत हसत हो तब विसाषा जी ने कही एकांत में चलो तो तुमकों एक अलौकिक बस्तु दिषाउँ तब श्री राधा जी सब सषिन के मंडल तें उठि एकांत घर में आई तब विसाषा जी ने श्री राधा जी कों श्रीकृष्न की मूरत कों चित्र दरसन करायो सो राधा जी दरसन करत ही चित्र हृदय सों लगाय भूम पर हा हा कृष्न कहिकें गिरी परी विरह के उसास भरन लागी नेत्रन तें जल की धारा बहन लागी सगरे अंग में पसीना भयो तब विसाषा जी डरपी जो

कीरत जी कहूं आवें तो यह दसा देखि कें कहा कहें यह विचार विसाषा जी श्री राधा जी कों गोद में ले कान में कहे जो हमतो श्रीकृष्न के मिलाइबे को जतन कसो हे तुम उलटो अेसो दुष पायो सो गुरजन कोई आइकें यह दसा तुम्हारी देषेंगे तो श्रीकृष्न के मिलन में और विलंव होइगो तातें गाढो मन करि धीरज धरो तो सकल मनोरथ सिधि होइ तब राधा जी विसाषा जा के यह वचन सुनिकें मन गाढों कीयो नेत्र के आंसू पोंछि कहे हे प्राण प्यारी सषी अब श्रीकृष्न कौन प्रकार मिले उपाय सों मोकों वताबो तब विसाषाने कही अब वसंत रितु आई है सो सुगम उपाय हैं घर घर तें सगरी सषी गोपन की बेटी फूल वीनन को जाहिगी सो आपुनेहुं बन में चलेंगी तहां श्रीकृष्न सों मिलाप होयगो तातें इहां ते सषीन के मंडल में प्रसन्न ह्वै कें चलो जो यह हृदय कों प्रेम कोइ जानें नाही तव श्रीराधा जू दर्पन हाथ में ले वेदीं तिलक सव सवारि अंजन नैन में सवारी आभूषण सवारि विसाषा कों संग ले सषिन के मंडल में आय बैठी तब व्रषभान्पुर में श्री राधा जू ने अपुनी सखी ललिता विसाषा आदि सबसों कह्यो जो बन में जाय वसंत रितु के फूल गुंजा ले आवें तब ललिता विसाषा कीरति जीं सों हाथ जोर कें विनती करी जो अपुनीं बेटी को संग देहु तो वसंत रितु के फूल वन तें ले आंवै औरहूं व्रज कीं सवरी गोपी फूल वीनन को गई हैं तब कीरत जीं कहे प्रसन्न होयके लली को ले जावो परन्तु नीके राषियो यह मेरी बेटी भोरी सुन्दर सुकुवार बहुत हे याको छिन छिन में नजर लागत है सो तुम जतन राषियो तब ललिता विसाषा श्री राधा जी कों लैकैं व्रषभांनपुरा तें वन में आई सो वन की सोभा देषत जहां श्रीठाकुर जी कुंज में मुरली नाद करत है ते ताहं कुंज के पिछवारे आई तहां सुंदर व्रछ भांति भांति के फूल फूले है तहां

सुंदर आइकें ठाढी भई सो गुंजा की वेल में ते गुंजा लेन लागी कछुक फूल तोरे इतनी ही में मोहन मुरली की मधुर धुनि श्री राधा जी के श्रवनन में परी सो सुनत ही श्री राधा जी के सर्वांग में रोमांच भरे सो महाप्रेम में व्याकुल होइ श्री राधा जी ने ललिता विसाषा जी सों पूछन लागी यह कौन की मधुर मुरली धुनि हें मोकों आनन्द मोह दोउ उपजावत हे तब ललिताजू हसिकें बोली यह श्री कृष्न की मुरली वाजत है तव श्री राधा ने कही हम तो वहौंत मुरली के शब्द सुने हैं परन्तु ऐसी मोहन नाद नाही सुन्यो हे सषी यह तो आकर्षन मंत्र है जाके सुनत ही चित्त में व्याकुलता होत है और या मुरली के सब्द में मेरो नाम को अछर सुनियत हें सो मानों यह मंत्र करि मोकों अपुने निकट खेंचत हैं तब ललिता हसिकें फेर बोली आजु श्रीकृष्न तिहारे प्रेम में महा व्याकुल हैं तातें तिहारोई नाम मुरली में रटत हैं और तुम्हारे दर्सन की लालसा उनके मन में होइ रही हें जो श्रीकृष्न जाने जो मेरे कुंज के पिछवारे राधा हें तो अवही दौर आवे तुमको प्राण समान जान हृदय सों लगाय फेर छोडेगे नाही तब यह बात सषी की श्री राधा जी सुनिकें मन में डरपी कहे हे ललिता विसाषा इहां ते वेगे भाजिकें अपुने घर चलो वे श्रीकृष्न प्रेम में व्याकुल होय मोकों आय पकरें तो उनको कहा विगरे अपुनी लजा जाय उनको नाम सगरे ब्रज में धूत प्रघट ह्वै चुक्यो हें तातें ईहां ते वेगे घर चलो और उपाय कोई है नाही यह कही सषिन सहित राधाजी घर कों चली सो घर के द्वार पर एक कदंव को ब्रछ ताके नीचे आय ठाढी भई तहां सुंदर छाया सीतल मंद सुगंध वयार देष तहां बैठी सखी सहित सो बन तें लाज करिकें आई तो सही परंतु श्री राधा की मन श्री कृष्न के सरूप में लुभाय रह्यो हे विरह सह्यो जात नाही तातें श्री राधा जी ललिता विसाषा सों

बोली जो मेरो हृदय में वेदन पीड़ा उठी हें सो तुम कहो तो में ईहां सेन करूं यह सुनिकें विसाषा ने कही हे श्री राधा तुम्हारे हृदय की वेदन दूरि करवे की औसध मूर मेरे पास हें कहो तो दिखाउं तब श्री राधाजी ने कही वेगे दिषाबो में पींडा सों व्याकुल हों तव विसाषा जी नें उठ पहले ही श्रीकृष्न मूर्ति को चित्र महासुन्दर सो श्री राधा जी कों फेरहि दिषायों सो एक तो पहले ही श्री कृष्न कों नाम सुनि और मुरली धुनि सुनि व्याकुल हती दर्सन की अभिलाषा वढ़ हती और जब श्रीकृष्न को महा मोहन सरुप देष्यौ तव श्री राधा जी के हृदय तें महाप्रेम विरह रूप बाहर प्रगट भयो सो नेत्रन तें आंसू की धारा चलन लागी विचित्र भाव महा अलौकिक सा होत भई इतने में मुषरा कीरत जी सगरी व्रद्ध गुरजन घरतें बाहर आयकें देषे तो श्री राधा जी की चेष्टा ओर ही प्रकार की हो रहां हें तब मुषरा ललिता सों पूछन लागी आजू मेरी राधा कों अेसो मोह क्यों भयो हें यह कहि मुषरा रोवन लागी तव ललिता विशाषा नें कही अबही हमारे संग वन सोभा देषि कें गुंजा फूल लेके आछी भांती यहां आइ सो या रूष तर वेठी सो ईहां वेंठत ही राधा कों मूर्छा प्राप्त भई सो कछु को कछु मुष तें वकत हें सों इतने ही में देषें तो पूर्णमासीजी और नन्दीमुषी सहित नंदगांव तें नंदराय जी के घरतें अपनी पर्णकुटी को जात देषे तव मुषरा पूर्णमासीजी कों देखि कें पुकार के रोय उठी तव पूर्णमासी जी मुषरा के पास आयकें पूछयों कहे मुषरा तू अेसों क्यों रोवत हें तब मुषराने कही यह राधा जबकी इहां वन में आईहें तबतें मूर्छा कों पाई हें कछु की कछु वकत है मेरे तो सर्वस जीवन प्राणधन यह राधाइ हें मे मरुगी नातरु वेगे कछु विचार उपायो देषो राधा को कोन ग्रह लाग्यो है अेसी दया

करो जौ राधा वेग ही नीकी होइ तब पूर्णमासी जी ने पूछी राधा कहा वकत हें तब मुषरा ने कह्यो कबहु तो यह कहत हो तुम मेरे आगेतो जाव कबहूं कहत तुम अपनी माला लेहू मेरी सषी देषेंगी तो हसेंगी कबहूं कहत हे तुम बडे छली हों कबहूं कहत हें तुम वडे कपटी हो कवहूं कहत हें तुम्हारे स्मरण करत करत मेरो प्राण आधो ह्वे गयो अैसें अदृष्ट अछर कहत हें तव पूर्णमासी जी ध्यान करी देष्यो श्री राधा के हृदय में श्रीकृष्न को प्रेम विरह प्रगट भयो हें सो विना श्रीकृष्न के पायें सावधान न होइगी यह विचार पूर्णमासी जी ने मुषरा सों कहे मुषरा नंदीश्वर में नंदराय जी को बेटा श्रीकृष्न हें वाकी, दृष्टि जो तेरी नातनी राधा पर परे तो अवही नीको ह्वे जाय कृष्न दृष्टि अेसी हे जहा दानव भूत प्रेत छाया कछू रहे नाही यह सुनिकें मुषरा पूर्णमासी जी कों दंडोत कर कहन लागी हम तो तिहारे आश्रय रहत हें तातें तुम ही कृपा कर नंदराय जी को बेटा श्रीकृष्न कों इहा कोई उपाय कर कें ले आवो जा प्रकार राधा वेगी नीकी होइ सो उपाय करो तुम विना हम्री गति और कोई नाही तव पूर्णमासी मुषरा कीरती सों कह्यो तुम आनंद पायकें अपने घर जाहु बेटी की चिंता मति करो मे सोंई उपाय करूंगी जा प्रकार राधा वेगे ही नीकी होइगी जैसै राधा तुम्हारी वेटी तुमकों प्राणप्रिय हे तेसे ही राधा हम्हारी बेटी प्राणपिय हें तातें तुम घर जाय अपुनो काम काज करो तव मुषरा कीरति जी आनंद पाइ पूर्णमासी जी कों डंडोत करि अपने घर जाय वेठी तव पूर्णमांसी जी श्रीराधा के पास आय श्रीराधा जी के कान में वात कही राधा जी तुम वड़े गोप की बेटी हो तुमकों अैसी दुष न वूझियें तव श्रीराधा जी नेत्र षोल पूर्णमासी जी और चिते कहन लागी माता जी

मोको तो तिहारो बडो भरोसो हे और तुम अेसे वचन कहो तो मेरो वड़ो अभाग्य है तुम हमारे पुज्य हो जो निठुर वचन तुम कहे ता करि मेरो मरन निश्चय ही हें जीवन नाही यह श्रीराधा जी के वचन सुनि पूर्णमासी जी ने कही पुत्री जो तिहारे हृदय में मनोरथ है सो सब वेग ही पूर्ण होहु यह आसिर्वाद तुमकों वेग ही फलत होउ तव श्रीराधा जी पूर्णमांसी जी को दंडोत करि हाथ जोरि विनती करिकें कह्यो माता तुम मेरी सहाय होउ मेरो मनोरथ तो तुम सव जानत हो तुमसों षोलि कें कहा कहूं एक श्रीकृष्न सो प्रीत लागी है सो तुम्हारी कृपा तें प्राप्त मोकों होइ यह सुनत ही पूर्णमासी जी कहे तुम धीरज राषो में नंदीश्वर में जाय श्रीकृष्न के तुमको मिलाउगी यह कहि पूर्णमासी नंदीश्वर कों गई ईहां श्रीराधा जी ललिता विसाषा सों कहे तुम चलो तो श्रीयमुना स्नान को जैयें तव ललिता विसाषा नें राधा सों कहे बलि जाउ भली बात हें आप पधारो तब श्री राधा जी ललिता विसाषा की वांह गहि उठि कें श्री यमुना जी स्नान कों चली सो मारग में श्रीराधा जी नें ललिता विसाषा सषी सों कहे तुम मेरी हितू हो तुम सों एक विनती में करत हों तव ललिता विसाषा सषी नें कही वलि जाउ कृपा करिकें कहिये तव श्रीराधा ने कह्यौ में अब बहुत दुषी हो सो अब मोसों नित्य को दुष सह्यौ नाही जात हे तातें में अव कालिंदी में प्रवेश करूंगी तुम मेरी माला हार आभूषण अपुनें गरे में पहिरो यह सुनि ललिता विशाषा दोउ सषी प्रीति सों रोय उठी और तद्गदवानी सों कहन लागी हे श्रीराधा जी जा दुष तें तुम अैसी वांछत हो सो दुष हमसो कृपा करिकें कहो हम विचार कें उपाय करें और अैसो विरह दुष तुमकों क्यों भयो हे तव श्री राधा जी कहे तुम तो मेरी

प्यारी सषी प्राणहु तें अधिक प्रिय होय तातें तुम सो अपुने हृदय को दुष कहत हो मेरी अवस्था तुम मन लगाय कै सुनो एक तो श्रीकृष्न को नाम सुनत ही मेरे हृदय में प्रेम प्रगट्यो पाछे श्रीकृष्न की मुरली सुनि रोम रोम में प्रेम छाय गयो तीसरे श्रीकृष्न को सरूप चित्र में दर्सन पायो सोव अवंलो श्रीकृष्न को नाम रुप कों ध्यान करि या आधार तें प्राण राषे परंतु अव मोकों धीरज हृदय में होत नाही तातें अव मेरो जीवन नाही तव ललिता विसाषा हसिकें श्रीराधा जी सों कही यह तो तुमकों दुर्ल्लभ नहीं हें तुम हमकों एक पत्र लिष दहु और अपने गरे की गुंजा हार दहु उह तो नंदनंदन हे मुरलीधर रसिक सिरोमन हें तुमकों वेहु चाहत हें तातें हम आनि मिलावेगी तुम धीरज हृदय में धरो तव श्रीराधा जी हंसिकें ललिता विसाषा कों कंठ लगायकें मिली पाछे एक व्रछतर वैठी कें पत्री में अपनी विरह की गाथा लिषी तुम्हारो नाम रूप चित में मुरली की तान करि तुम्हारो सरूप मेरे हृदय में वसत हें सो ध्यान करि अवलों धीरज धरि प्राण राषे हों अब जो कृपा करकें वेग तुम मोकों मिलो नातो ये प्राण तुम्हारे पास आवेंगे और बहुत कहा लिषें तुम चतुर सिरोमन हो कृपा करि वेगि दर्सन दीजे यही बारंबार विनती हे यह पत्री में गाथा लिषि कें और गुंजाहार अपने कंठ तें उतारि कें ललिता विसाषा सषी कों दे कहत भई तुम मेरी परम हितकारिनी प्राण प्रिय सषी हो सो नंदनंदन मुरलीधर से कहो तव ललिता विसाषा पत्री ले दोउ सषी वन कों चली सो आगे जाइकें देषें तो सुंदर कुंज के द्वार पर लता छाय रही हे तहां कदम के व्रछ के नीचें सुवल श्रीदामा मधुमंगल श्री वलदेव जी सहित श्रीकृष्न ठाढे हें चिंता विरह युक्त श्रीराधा जू को मारग निहारत हें हृदय

में श्रीराधा नाम कों जप करत हें तहां इतने ही मे ललिता विसाषा सन्मुष आय श्रीकृष्न कों नमस्कार करि ठाढी भई तव मधुमंगल ने कही ललिता विसाषा नित तुम हमारे वन के फूल तोरिकें ले जात हो सो कोई दिन चोरी पकरेंगे और आज तुम वन में अकेली दोउ जनी आई हो एकांत में ताको कारन कहा हे तव विसाषा जी ने कही मधुमंगल तुम जीभ सभारकें वोलो तुम्हारो वन कहातें आयो यह वन तो हमारो हे तामें तुम गाय चराय कें सुष पावत हो और हम तो श्रीकृष्न कों पत्री देन ईहां आई हें यह कहि विसाषा जी श्रीकृष्न के हाथ में पत्री दे यह कहें भैया तुम ब्राह्मण हे सर्वज्ञ हे वडो पंडित हे तातें यह पत्री कों नीकी भांति वांचकें अर्थ कहि तव मधुमंगल हसिकें पत्री लायो वाचकें अर्थ विचार करिकें श्रीराधा जी की प्रीत श्रीकृष्न कों सुनायो तव श्रीकृष्न मन में विचारे जो बड़े भाई वलदेव जी बैठे हें तातें प्रेम वाहर प्रगट करनो उचित नाही हें तातें कछु रूषे वचन कहनो उचित हे या समय या प्रकार श्रीकृष्न विचार हृदय में तो प्रेम भर्‌यो हें उपर तें क्रोध करकें वचन वोले विस सों अरी विसाषा मोकों तुम्हारी सषी राधा सों दृष्टि हूं को मिलाप कवहूं नाही भयो यह प्रेम की बात कही सो केसे में तो कछु जानत नाही तातें तुम भोली हो भूलिकें हमारे पास आई हो और तुम्हारी सषी को मन कहूं और ठोर प्रीत करवे की चलाय मान भयो होयगो हमतो कछु प्रेम की वात जानत नाही तव ललिता रिसाकें क्रोध सों वोली अहो नागर रसिकवर चतुर सिरोमणि अेसी अनुचित वानी मत्ति कहो श्रीराधा तो कुल कन्या हें तुम विना और को सुपने में जानत नाही और तुम विना उनके मन को आकर्षन कोन करें तुम जव वर्स सात के भये गिरि गोवर्धन उठाय

सुरली वजाय अधरामृत को दान दीये ता दिन तें तुम सौं दृढ प्रीत सगरी ब्रज की गोपी की तुम्हारे स्वरूप मे लगी हें ता दिन तें सगरी गोपी तुम सों प्रेम करि चित वाध्यो हे यह सुनिकें श्रीकृष्न मधुमंगल सषा सों कहन लागे हे मधुमंगल मे ईन्ह गोपिन के डर तें तुम्हारे संग लग्यो वन वन में फिरत हो मोकों ईन स्त्री जन की वातें हूं सुहात नाही तव मधुमंगल ललिता सों कह्यो अरी ललिता ये हमारे मित्र श्रीकृष्न वाल-ब्रह्मचारी हें तव विसाषा हंसिकें मधुमंगल सों कह्यो सो या बात के साक्षी श्रीयमुना जी के तीर के कदंव आदि ब्रछ हें जैसे तुम्हारे ठाकुर साचे तैसे साषी भरन कों तुम सरिषे मित्र सांचे और हमारी सषी तो मुग्ध हें भोरी कछु समझत नाही यह कहि ललिता विसाषा के आंषि में सुप्रेम के आंसू चले जो कौन प्रकार श्रीकृष्न कों राधा जी सों मिलाप कराउं कछु उपाय तो वनत नाही तव मधुमंगलने कही हमरे वनमें क्यों रोवत हो रोवनो होय तो अपुने घर जाय रोवो ईहां तो सगरे आनंद श्रीकृष्न के संग ते पावत हें तुम कों दुष क्यों भयो तव ललिता ने मधुमंगल सों कह्यो जैसे दिन कों हम रोवत हें अैसी हा रात्रि में तुमहूं रोवत हो यह श्रीकृष्न ने सगरे ब्रज में काहु कों रुदन कराये विना छोड्यो नाही यह कह दोऊ सषी ललिता विसाषा मिलि कें मन में विचार कीयो जो हम योंही षाली हाथ फिरिकें श्री राधा जी पास जाइगी तो श्रीराधा प्राण न राषेगी तातें श्रीराधा जी की गुंजा माला श्रीकृष्न कों दे श्रीकृष्न की रंगमाला पचरंगी सो कोई प्रकार लेकें चलें तो राधा कों धीरज होइ यह विचारि कें ललिता जी गुंजाहार श्रीराधा जी को हाथ में लेकें श्रीकृष्न सों कहन लागी हे नंदकुमार यह गुंजाहार हे सो हमारी सषी राधा को मन रूप

हे सो पहरा तो अनुराग रूप तिहारे ही कंठ जोग्य हे सो तुम पहिरो यह कहि गुंजाहार श्रीकृष्न के कंठ में पहिरायो तव श्रीकृष्न प्रेम में मगन होइ अपुने कंठ की रंगमाला परम सुंदर पचरंगी उतारिकें ललिता के हाथ में दीयो और कह्यो जैसो तुम गुंजाहार राधा के मन रूप मोकों पहिरायो अव यह गुंजा म कबहु कंठ तें न्यारी न करूंगो तेसे ही यह रंगमाला मेरे मन रूप तुम श्रीराधा जी कों पहिराय कें धीरज दीयो तव ललिता रंगमाला लेत ही छिपाय कें धरि राष गुंजाहार श्रीकृष्ण के कंठ में रहन दीयो तव श्रीकृष्ण कहे ललिता तू हम सों छल कीयो एक गुंजाहार के पलटे हमारो सर्वस रंगमाला लीयो सो हम कों फेर देहु अपुनी गुंजाहार तव ललिता सों विसाषाने कही अब वेगे चलो इहां तें यह अलौकिक रंगमाला श्रीकृष्न के मन रूप हाथ लगी हे सो श्रीराधा के कंठ में पहिराय श्रीराधा जी को आनद प्रीति उपजावें या रंगमाला के लीये श्रीकृष्न आपही श्रीराधा जी सों मिलेंगे यह कहि ललिता विसाषा श्रीकृष्न के पास तें भाजी सो श्रीराधा जी के पास आई ईहां मधुमंगल श्रीकृष्न जी सों कहन लाग्यो तुम भली न करी तुम्हारो मनोरथ रूप व्रछ के अंकुर भयो हतो सो अंकुर तुम तौरि डारो अब यह सषी श्रीराधा पास जाय कहा जानिये केसी बात कहे श्रीराधा जी की कौन दसा होय श्रीराधा तुमकों मिलिवे कों उपाय कीयो हतो तुम कठिन वचन कहे सो आछी न करी तव श्रीकृष्न मधुमंगल सों कह्यो मैया में गवालन की नाई मूरषता किनी अब तो मधुमंगल भैया तुम मेरो प्राणपिय सषा हो सो तुम कछु अैसो उपाय मन में विचार कें मोकों बताचो जामें श्री राधा जू दुष न पावे और मेरो मनोरथ सुफल होइ जा प्रकार वेगे श्रीराधा मोकों मिलें सो उपाय

वताओ तव मधुमंगल श्रीकृष्न कों मतो दीयो जो द्वादसादित्य को मंदिर हे तहां निकट पूर्णमासी जी को पर्णकुटी हे तहां जितनी श्रीराधा जी आदि ब्रज की सुंदरी हें ते सूर्य पूजन कों आवेगी उहो श्रीयमुना जी के तीर निकट जायकें तहां ब्रछ लता फूले हैं सघन लता हें तहां कुंज में चलिकें वेठ रहो ध्यान कों सषिन सहित श्री राधा जो तहां अवस्य आवेंगी सो सूर्य कुंड में स्नान कर पाछे फूल फल तोर सूर्य पूजन करेंगी और पूर्णमासी जी को नमस्कार करन कों जावेंगी सो हे मित्र तहां राधा को दर्सनहूं होइगो और मिलापहूं होइगो यह मधुमंगल को मतो श्रीकृष्न सुनि रीझ कें मन में बहुत प्रसन्न भइ अपुने कंठ तें फूल की माला उतारि मधुमंगल के कंट में पहिराये पाछे श्री वलदेवजी सों कहे तुम ईहां गाय चरावो हम वन की सोभा देषिकें आवत हें यह कहि मधुमंगल श्रीदामा सुवल सहित बंसी बजात तें चले सो सूर्य मंदिर के पास बन हतो तहां आइकें बेठे यहा ललिता विसाषा दोउ श्रीराधा जा के पास आई देषें तो श्रीराधा जी नेत्र मूदे वाहो ब्रछ के नीचे ही बैठी हें दोउ सषी ललिता विसाषा ठाढ़ी हें आगे राधा जी तो श्रीकृष्न के स्वरूप के ध्यान में मग्न हें नेत्र मूदे हें कछु सरीर की सुधि नाहीं हें तव ललिता विसाषा यह दसा श्रीराधा जो की देषि-ललिता नें विसाषा सों कही जो श्रीकृष्न की प्रसादी रंगमाला हें सो तुम श्रीराधा जी के कंठ में पहराय देउ और नासिका में अघ्रान करावो तव श्रीराधाजी सावधान होइगी तब विसाषा सषी रंगमाला हाथ में ले श्रीराधाजी के नासिका सों अघ्रान कराय पाछे कंठ में पहिरायो तव ही श्रीराधा जी की आंष उग्घर गई सो देषें तो दोउ सषी आगे ठाडो हें तब श्री राधा जो नें विसाषा जी सों

पूछ्यो जो तुम ऐसी कहा वस्तु लेआई जाकी सुगंध तें मेरी मूर्च्छा जात तब ललिता ने कही यह मोहन मंत्र औषधी है श्रीराधा कृष्न के मन रूप औषधी हें अलौकिक तब श्रीराधाजी ललिताजी सों कहे उह कहांहे हमकों दिषाउ तब ललिता नें कही मोहन वंसीधर स्यामकिसोर श्रीकृष्न की प्रसादी रंगमाला परम अद्भुत तुम्हारे कंठ में पहराई हे ताकरि तुम्हारी मूर्छा जागी हे तब श्रीराधाजी अपुने हृदय में माला देषि रोम रोम आनंद पाय ललिता विसाषा सों कहन लागी हे सखी अेसो मेरो भाग्य कब उदे होइगो जो जाको प्रसादो माला हें तिन को दर्सन पाउगो यह कही रगमाला जो वन-माला आषिन सों लगाय रही हृदय सों बारंबार दावन लागी इतने में मुषरा घर तें नीकसी सो तहां आइ देषें तो राधा ललिता विसाषा तीनो परस्पर प्रसन्न होइकें वातें करत हें तब मुषरा षीझ कें कहन लगी अरी मुग्धा दोय प्रहर दीन चढ्यो दुपर भयो तोहुं तू सूर्य पूजन करन कों आजु तू भूल गई पूर्णमासी जी पेंडो देषत होंयगी तातें वेगी जाव यह सुनिकें ललिता विसाषा के मन में बडो आनंद भयो जो या बुढिया के कहे सूर्य मंदिर में जाहिगी सो कोई मनें न करेगो ओर कीरत जी हू ढूढेगी नाही जो सूर्य पूजन कों गई हें तहां श्री कृष्न सों मिलाप होइगो पुन्य को फल उदे होयगो यह विचार कें तीनों जनी द्वादसादित्य के मंदिर में चली अर उहां श्रीकृष्ण पहलें ही मधुमंगल के कहे आय सूर्य मंदिर के पास कुंज में श्री यमुना जी के तीर निकट लता ओटि में वेठि रहे जव ये तीनो निकट आय पोंची तब श्रीराधा ललिता विसाषा सों कहन लागी जो अरवर जब हम या वन में आवती तब यह वन रातो दीसतो ओर आजु यह वन मोकों स्याम दीसत हें सो काहे तें तब ललिता हसिकें श्रीराधा

जी सों कह्यो हे श्रीराधे जु आजु तेरे हृदय कमल में श्रीस्याम जो श्रीकृष्न वसे हें तातें आजु तुमकों सगरो वन स्याम ही दीसत हें तव श्रीराधा जी नें कही विसाषा जो तुमनें श्रीकृष्न जो वडो धूर्त छली को स्वरूप मनोहर चित्र मोकों दिषायो सो उह धूर्त श्रीकृष्न या वन में कहूं आयो हें कहे ते में जान्यो जो या वन की सूषी वेल हत सोउ फल फूल सों ऊमि रसरूप भई हे तव श्री ललिता जी नें कह्यो श्रीराधे तुम्हारो वडो भाग्य हें तेरे भाग्य की महिमा करिवे कों ब्रह्मादिकहूं समर्थ नाही हें तातें कहा जानियें आजु या वन में श्रीनंदनंदन पधारे होइ तो तेरो ध्यान सकल मनोरथ सुफल होइ यह रस वार्ता करत तीनो जनी चली जात हुती सो दूरतें ललिता नें पहिलें ही मधुमंगल कों देखो वहुरि श्रीराधा जी नें श्रीकृष्न कों देख्यो सो चंद्रिका को मुकट दृष्टि में झलक परी तव ललिता सों श्री राधा नें कह्यो चलो उतावली सूर्य मंदिर में जाहि पूर्णमासी जी कों नमस्कार करि मिलें यह कहि उतावली चली तव श्रीराध जी कें पायन के नूपर को धुनि सुनि श्री कृष्न को हृदय कंपायमांन भयो काम रस सर्वांग में छाय गयो इतने में मधुमंगल पुकार कें श्रीकृष्न जी सों कह्यो अहो व्रजराज कुमार जा हरनीके वागुरा षोजत हो जाके लीए यह वन षोजत हो या वन को सेवन करत हो सो हरनी आय हाथ चढीहे यह मधुमंगल के वचन सुनि श्रीकृष्न आगे आइ मारग रोकि ठाढे भये सो राधा जी ललिता विसाषा के वीच मे चली आवत हती सो कृष्न ने चकोर की नाईं देषि रहे तव श्रीराधा नें ललिता जी सो कही अरी ललिता विसाषा यह तो महा सघन वन है और यह नंद को वेटा महा ढीठ हे तातें तुम इहा तो उतावली चलो यह सुनि के श्रीकृष्न वोले अरि तू ललिता विसाषा तू हम कों ठग के वातन में भुलाय कें

गुंजाहार हे हमारी पंचरंगी अलौकिक रंगमाला ले गई सो हमको वेग दे अपुन गुंजामाला लेजा हम तिहारो पेडें कब के बेठे देषत हें और तेरे लीए या वन में आय कें सेवन कीयो है सो भली भई तुम तीनो जनी इहां मिली तब ललिता विसाषा बोला जो तुम अेसे भोरे कब के भए जो माला दीई हमतो तुम्हारी माला जानत नाही जहां तुम्हारी माला होइ तहां तें ले लेहु तब श्रीकृष्न देषें तो श्रा राधा जी के कंठमाला हे सो माला के मिस श्रीकृष्न दौरि कें श्रीराधा जी के पास आय माला लेन को लीए हाथ पसार्‌यो तब श्रीराधा जी लज्जा पाइ भाजि कें ललिता जी के पीछे छीपी तब ललिता जी षीझ कें कहन लागी हे नंद के चंचल धत श्री कृष्ण तुम्हारे अंग ब्रज की गोपवधून सों जूठे होइ रह्यो है और हमारी राधा पवित्र श्रीयमुनाजी में नहाय अपरस वस्त्र पहिरे सूर्यपूजा करने कों आइहें तामें तुम हमारी राधा कों मति छुवो तब श्रीकृष्न ने कही मेहूं परम पवित्र हो अपरस में बेठो राधा नाम को जप करत हों तातें श्रीराधा जी के छुवे में कहा चिंता हें और तुम कहो तो में फेरि श्रीयमुना जी में स्नान करि पवित्र होइ आउं और में तो काहू गोप वधू को परस नाही कीए हों तुम कों प्रतीत होइ तो तुम जैसी जानो तेसा सोह लेहु तब ललिता विसाषा ने कही हमारी सषी के अंग मे रोमावली सर्पनी हे तापर चौकी मनिन जटित है सो सर्पनी की मनि हे सो या सर्पिनी मनि पर हाथ धरो जो तुम्हारो हाथ कंपायमान होइ तब हम कों प्रतीत होइ तब श्रीकृष्न ने कही अरी ललिता विसाषा तू बडी डीठ हे थोरी बात के लीए सर्पनी के मांथे हाथ धरावत हे यह सर्पनी कों देषत भाज मेरो सगरो अंग कांपत हें धीरज छूट गयो तू हाथ धरन की कही सों कैसें धरूँ तब श्रीराधा जी ललिता विसाषा

सों बोली जो तुम भूली हो जो ऐसी सोंह ईन कों दीयो येते वडे गारूडी हैं ईन कों यह सोंह कहा कठिन हें अघासुर को मारे कालीनाग सरिषे नाथे ताते यह सोंह मति केहु तब ललिता विसाषा हसिकें बोली तुम बड़े पराक्रमी हो गोवर्द्धन उठाये सब ठोर सब जस प्रगट कीए और नंदकुमार छेल हो सो हमारे देषत ही अपुने मस्तक को मुकुट भूमि में छुवाय हमारी श्रीराधा कों प्रनाम करो राधा पायन कों तव तुम माला पावो तब श्री ठाकुर जी दोरि कें श्रीराधा के चरण कों प्रनाम कीयो तब ललिता विसाषा जी दोरि कें श्रीराधा के चरण कों प्रनाम कीयो तब ललिता विसाषा दोउ सषी भजिकें कुंज की ओट ह्वे गई श्रीकृष्न के सषा सुवल श्रीदामा मधुमंगल गाय चरावन कों गये तब श्रीकृष्न श्रीराधा जी कों अंक में उठाइ उहां कुंज मंदिर में पधारे तहां अलोकिक चदोवा पिछवाई तामे सुनेहरा जडाउ काम मोतिन की झालर परदा परे हें फूलन की सेज्या पावडा नाना प्रकार की सामग्री सीतल सुगंधी जल बीडा अरगजा पशु पछी सब स्त्री रूप भवरी के गुंजार ह्वे रहे हे फूल फल झूम रहे सीतल मंद सुगंध वयार वहत हैं छहो रितु आज्ञा कारी हे असो सुंदर कुंज मे नाना प्रकार के रत्न षचित सेज्या तापर दूध फेनवत कोमल वस्त्र चारो पायन सों कसना कसे हें ता सेज के ऊपर दोउ जुगल रूप पधारे हास्यरस बातरस केलि रस सुरतिरस संग्राम में मग्न भए तव श्रीराधा जी नें श्रीकृष्न सो कहे अहो गिरधारी जी जबतें तुम्हारी बंसी को शब्द श्रवण मे पर्यो और तुम्हारो नाम सुन्यो और तुम्हार रूप चित्र में विसाषा ने दर्सन करायो तव तें तुम विना मोकों एक छण जुग समान कोटि जुग समान कछु गनती नाही या प्रकार बीती और तुम तो महा दयाल कहावत हो

इतनी कठोरता करी तुमतें इतनी ढील कैसें भई तब श्रीकृष्ण हृदय में लगाय कहे हे राधे तेरी मेरे दसा नेत्र और मेरो हृदय जानत हैं जैसी तुम विती परंतु कहा बिना करियें मर्यादा रूप मुषरा बड़ी वाधक जब तब अंतराय करत हैं ये गुरजन की लज्जा डर बहुत हे तातें ढील होत हे ये जितने गुरजन हैं सो विरह रूप प्रेम प्रगट करन के अर्थ आडे रहत हैं तातें ढील होत हैं या प्रकार परस्पर रस वार्ता बिहार करि महा आनंद दोउ सरूप पाए जैसें नदी समुद्र में मिल एकरस तन मन प्राण भाए।

इति श्री वन बिहार लीला प्रसंग प्रथम १

या प्रकार श्रीराधाकृष्न कुंज महल में बिहार रीति विपरीत रससों कीए सो बिहार करत में दोउ जुगल सरूप के शृङ्गार अस्त विस्त भये तब श्रीराधाजा श्रीकृष्ण सों बोलत भई हे प्राणनाथ मेरो शृंगार सगरो अस्त विस्त भयो सो मेरी सषी सब देष कें हांसी करेंगी व्यंगवचन कहेंगी सो नवीन सिंगार फूल कों जैसो पहिले हतो तैसो ही करि देहु पांइन को महावर छूट्यो नेत्रन को काजर छूटे मांग कों सिंदुर छुट्यो वेणी पुल गई हे कचुकी फाटी हे सो मे सषिन सों वहुत डरपति हों तातें अैसो करो जो सरजी जाने नहीं यह वचन श्री ठाकुर जी श्रीराधाजी के सुनि लाल फूल को रस निचोरि महावरि चरणन मे दीए नेत्रन मे अंजन वनाये माथे में सिंदूर भरे इतने हि में ललिता विसाषा दोउ सषी आइ गईं तब श्री ठाकुर जी मुसकाय कें लाज पाय भाजिकें कुंज लता के आडे जाय ठाढे भए तब श्री राधा जी सों कह्यो हे श्री राधे तुम बड़े गोप की वेटी हो और तेरो सगरे ब्रज में बड़ाई है यह दसा कीरतरानी और मुषरा देषेगी तो कहा कहेगी तब श्री राधा नें संकोच सहित ललिता विसाषा सों कह्यो यह दसा मेरी या वन में तुमही तो कराई हैं

और तुम अैसी बात क्यों कहत हो इतनो सुनत ही कुंज लता की आड तें श्रीकृष्ण निकसि ललिता विसाषा के पास आय कहन लागे देख ललिता विसाषा तेरी सषी ने हमारी रंगमाला छीनी के अज्ञान सी होइ बैठ रही सो हमारी माला तुम दिवाइ देहु तब ललिता विसाषा हसकें बोली बलि जाउ आपनी माला लेहु परंतु हमारी सषी को सिंगार जैसो पहिले हतो तेसी कर देहु जो कीरत और मुषरा यह जाने नाही जो आजु राधा श्री कुष्ण के हाथ परी तब श्रीकृष्ण श्रीराधाजी के केस सवारि काक-पछ सी पाटी फुलेल लगाय पारी सगरो शृंगार नष सिषा नोतन कर दीयो तब श्रीकृष्ण राधा जी सो कहे यह सिंगार कीये को बदलो हमकों देहु काहे ते सेवा करी देनो उचित है तब श्रीराधाजी ने कही यामे बदलो काहे कों तुमनें मेरो सिंगार अस्त विस्त कियो हतो सो बनाइ दीयो और तुम्हारें कंठ की माला पहिरे हति सो मों घन में आइ अैसी दसा कीनी औरत पर रीझ मांगत हो सो अब कहा लेहुगे। कहो तो मैं तुम्हारो सिंगार सवार देहु तब श्रीकृष्ण नें कही यही बदलो मागत हो तब श्रीराधा जी ने फेर मुकट सवारि कें अलकन में कुसुम मोती गुहे कुसुम को तिलक सवारे काछनी सवारिकें पहिराय नव सिष भूषण पहिराये तब श्रीकृष्ण प्रेम में व्याकुल होइ श्री राधा जी कों हृदय सो लगाइ गाढे अलिंगन कीयो तब श्रीराधा जी नें कही यह कहा कीयो दोउ सषी हसत हैं अब ये दोऊ सषी कों हसे नाहीं अैसी कछु लीला करो तब श्री ठाकुर जी ललिता विसाषा दोऊ सषिन कों दोय सरूप प्रगट करि गाढे अलिंगन चुंबन बिहारादि कियो तब श्री राधा जी सुमिकाइ कें बहुत प्रसन्न भई कहे अब मोकों ये नहीं हसेंगी तब ललिता विसाषा दोउ सषी मन में परम आनंद पाय कें उपर ते खीझि

कें श्री राधा जी सो बोली हम जान्यौ यह सब तुम्हारीई काम हें आज पाछें हम तिहारे संग बन में कबहु न आवेगी हमारी लज्जा मरजादई सब नास पाई या प्रकार परस्पर रस वार्ता आपुस में सषी करत हें इतने में मुषरा उह वन में शाइकें ललिता विसाषा राधा नाम लेकें पुकारयो तब श्रीकृष्ण भाजि कें जहां सुबल श्रीदामा सषा हतै तहां श्रीयमुना जी के तीर आए और ललिता विसाषा राधा तीनों जनी भाजि कें सूर्य के मंदिर में गई पाछे सूर्य पूजन करि पूर्णमासी जी के पास आय नमस्कार कर बैठी पूर्णमासी जी आसिर्वाद दीयों तुम्हारो मनोरथ जेंतें आजु सफल भयो तेंसें सदा पूर्ण होउ यह असीस सुनि राधा ललिता विसाषा तीनो प्रसन्न भई पाछें मुषरा तहां आइकें देषें तो पूर्णमासी जी के निकट तीनों जनी बैठी हैं तब मुषरा पूर्णमासी जी सों कहन लागी देषो दुपहरी भई हे ब्रषभान जी आदि गोप राधा विना भोजन नाहीं करत और ये तीनो जनी बन में षेलत हों सो आछो नाही और मे यार सों बहुत डरपति हों जो या वन में दुपहर कों नंद जसोदा को बेटा श्रीकृष्ण गायन कों पानी प्यावन को ईहां आवे हे सो उह श्रीकृष्ण के नेंनन में मोहिनी वसत हे सो मेरी नातिनी राधा महा भोरी हें सो वासों कहू भेठ हो जाय तो आछो नाही उह श्रीकृष्ण महाछली धूत हे सगरे गोपन की बेटी वासों डरत हें ईतने ही में श्रीकृष्ण सषान सहित तहां आये सो पूर्णमासी जो कों नमस्कार कर पाछे सुबल सषा के कांधे पर भुजा रापि ठाढे भये और श्री राधा जी कों तहां बेंठी देषि श्रीकृष्ण मधु-मंगल सों कहन लागे अरे भैया मधुमंगल यह मुषरा के पास नई त्रिया कोंन बेठी हैं या को तो कहू देष्यो नाहीं कौन गोप की बेटी हे इतनो सुनत ही कछुक रिसाइ कें मुषरा बोली अरे

ढ़ीठ तो नाहि जानत यह ब्रषभान गोप की बेटी हे याको नाम राधा हे याको दर्सन दुर्ल्लभ हे तव श्रीकृष्ण पूर्णमासी जी को नमस्कार कीयो तव पूर्णमासी जी नें आसिर्वाद दीयो हे ब्रजराज कुवर तुम्हारो मनोरथ पूर्ण होउ ईतनो सुनत मुषरा श्रीराधा जो वांह गहि घर को चली श्रीकृष्ण उहांई ठाढें विरह सों देषि रहे सो श्रीराधाजी हूं मन में विरह करत मुषरा के संग चली मन में कहे यह बुढिया कहां ते आई रस में विरस कियो तव श्रीकृष्ण मुषरा कें संग राधा कों जात देषि कें पूर्ण-मासी जी सों कहे चन्द्रमा को अमृत पान करिवे चकोर आयो होतो सो बदरिया बीच में आडे आइ गई तव पूर्णमासी जी हसिकें श्रीकृष्ण सो कह्यो अहो नागर चतुर सिरोमणि अकुलाव मति आजु जब चंद्रमा उदे होइ तव वंसीवट के तेर जाय वंसी की धुनि करो जा जा गोपी को अकर्षन मंत्र नाम लेकें मुरली में बुलावोगे तव सगरी ब्रज सुंदरी तुम्हारे पास आवैगी यह कह पाछे कहे हे श्रीकृष्ण अवतो तुम अपुन गाय चरावो तव श्रीकृष्ण सषान के संग गायन में आये मन में विचार करन लागे कब संझा होइ चंद्र उदय होय कब बंसीवट नीचे जाय वेणु नाद करू अैसें करत संझा भई तव गाइ सषा सहित वन ते ब्रज में आए तव जसोदा जी द्वार पर आइकें आरती कर पुत्र कों हृदय सों लगाय मुष चुंवन करि अपुने अचल सों श्रीठाकुर जी के मुष उपर की रज पोंछ भीतर ले जाय उष्ण जल सों स्नान कराय अंग वस्त्र वरि नाना प्रकार की सामिग्री सेन भोग का अरोगाये दूध पान कराये वीडा आरो-गाय पोढाये अपुनी सषी कों सोंपि सावंधान कर पाछे जसोदा जी अपुने घर में जाय पोंढी तव श्री ठाकुर जी मध्य रात्रि को उठि वंसीवट के तरे जाय रस सो मुरली वजाये सो गोपी

घर घर में मनोरथ करत हुती सो सरद रितु आई अव श्रीठाकुर जी हमकों रास कव षिलावंगे इतने में मुरली की धुनि सुनी सो धुनि को मारग पकरि घर घर ते गोपी सव उठ दौरी श्रीराधा जी चंद्रावली जी ललिता विसाषा पद्मा चंपकलता भामा स्यामा कामा आदि सषी सब रात्रि कों रास विहार लीला कीए पाछे घर प्रातःकाल जान आतुर होइ गई सो श्रीराधा को नीलांबर श्रीठाकुर जी पर रह्यो श्री ठाकुर जी को पीतांवर राधा पास रह्यो सो अपुने अपुने घर जाय सगरी गोपी सोय रही श्रीराधा ललिता विसाषा ये तीनो व्रषभांन जी के घर सोय रही श्रीठाकुर जी अपने घर जाय पोढि रहे सो सवेरो भयो तव मुषरा आइकें श्रीराधा जी के निकट ठाढी भई इतने में श्रीराधा ललिता विसाषा तीनों जागी तव मुषरा नें राधा जी कों पीतावंर ओढे देष्यो सोचत रहि पाछे मुषरा क्रोध करि राधा सो कह्यो अरि चंचल कहीओ यह पीतांवर कौंन को हे तव श्रीराधाजी डरपि ललिता विसाषा के पीछे भाजि गई तव मुषरा ललिता विसाषा सों कहन लागी अरी परछालनहारी मेरी नतिनी राधा घर को द्वार हू नांही जानत महामुग्ध हे तू दोउ लंपट या राधा कों लेकें कहा गई हुती यह पीतांवर कहां तें ओढाय के ले आई हे सोच वताव मे राधा कों पीतांवर सहित कीरत जी व्रषभांन जी पास ले जाऊंगी तब तेरी देष कहा हवाल होयगी तव ललिता विसाषा वोली तू वडी मूढ हे वुढिया भई सो तेरी बुधि सव नास भई अैसी कलंक की वाणी बोलत हे तू जानत नाही ये दीप-मालकाके दिन सो सगरो व्रज की किसोरी रात्रि कें वन में हरद रोरी सो षेल षेले हें अलोकिक रंग वरषायो जूवा षेलें आंष मीचनी षेले हरद कुमकुम पलास कुसुम के रंग छीटे सो राधा को सगरो वस्त्र

चित्र रंग में भयो ओढनी पीली भई हे सो तू तो आधरी हे तूकों सूझत नाही और तू जा बात सो डरपावति हे सो पूर्णमासी जी जाने हें न मानें तो पूर्णमासी जी सों जाय कें पूछ राधा भोरी को डर पायौ यह भाजि कें मेरे पास आई सों तू एक की चार लगायो वेगे पूर्णमासी जी पास चल अवही तोकों साची झूंठी कर दिषाऊं तव मुषरा ललिता विसाषा को मुष चूम कें कह्यो बेटी तुम मेरे कहें को बुरो मत मानों मेरे सरवस राधा है सो तुम्हारे भरोसे हे सो यह राधा जा प्रकार दूष न पावे ता प्रकार गोपी जन के संग षिलाइयो मे उह चंचल नंद के वेटा सो डरपति हों वाकें पास मति आवन दीजों उह स्त्री को मन चुराय लेत हे यह कहि मुषरा गोवर थापन कों गई पाछे श्री चंद्रावली जी की सषी पद्मा श्री राधा जी के पास आई सो देषें तो श्री राधा जी श्रीठाकुर जी को पीतांवर ओढें बैठी हें तव पद्मा हसिकें बोली अहो व्रषभान नंदनी तुम श्रीकृष्ण सो हमारो वदलो लीयो कुंज में श्री ठाकुर जी कों प्रेम में वस करि पितांवर लीयो तव ललिता हसिकें कह्यो अरी ढीठ पद्मा अैसी ढीठ चंद्रावली जी हूं हें उनकी चोरी में जानत हों श्रीकृष्ण के कंठ को मुक्ताहार लीयो सो अवतांई नाही दीयो सदा उर में पहिरे फिरत हे सो कहो तों प्रगट करों तव पद्मा ने कही तुमसों कौन जीते में तो हांसी मे कही या वात को बिलग मति मानियों यह कहि पद्मा हसत हसत अपुने घर गई उहां नंदीसुर में जव प्रभात भयो तव सगरे श्रीठाकुर जी के सषा जूथ एक ठौर होइकें नंदराय जी के द्वार पर आये घर घर मे गोपी सव दधि मथन करन लागी सो सब्द परम सुन्दर मानों मेघ गाजे गोपी जन श्रीकृष्ण लीला को गान करत हें सो गान सुन देवता की स्त्री लज्जा को पावत हें गाय सव आतुर भई

षछुरा को ओर देष हूंकार करत हें या प्रकार गोपि दधि मथन करि मांषन षिलोंना आभूषण वस्त्र ले लेकें गोपी नंदराय जी कें घर आई श्री वलदेव जी पहिले जागे सो श्रीकृष्ण के पास आईकें देषें तो नीलांबर ओढे हें इतने में जसोदा जी आइ श्रीकृष्ण को जगायो तउ न जागे तब गोपी जन के नूपर को सब्द सुनि जागे सो नीलांवर देषि श्री ठाकुर जी मन में सकुचे जो जसोदा जी पूछेगी जो पीतांवर कहां गयो यह नीलांवर कोंन को हे तव में कहा जुबाब देउगों यह विचार आपही वलदेव जी सो कहे तुम पीतांवर लीयो सो ल्यावो अपुनों नीलांवर लेऊ तव वलदेव जी नें कही तुम्हारो पीतांवर में श्रीदामा कों सोंपो हो सो देऊगो अब तो वेगो कलोउ करि गोदन करो तव जसोदा जी मन मे जानें जो यह वलदेव की पीतांवर हे पाछें मंगला भोग आरोगिके गोदोहन की तहां दूध पान करि स्नान करि कें श्रृंगार धराये पाछे श्री वलदेव जी सषान सहित गाय लेकें वन में पधारे तव व्रंदादेवी और पूर्णमासी जी सन्मुष आई सो श्रीकृष्ण की सोभा पर्म अद्भुत देषि बलेंया लेन लागी अंग अंग में पुलकावली भई प्रेम रूप आनंद मे आसिर्वाद दीए तुम्हारो मनोरथ पूर्ण होऊ तव पूर्णमासी नें श्रीकृष्ण सु कही तुम वाही वन में जाव तहां रस को अनुभव होइगो यह समस्या पाय श्रीकृष्ण पूर्णमासी जी कों नमस्कार करि कें गाय सषा सहित वाही वन में आए इहां राधा ललिता विसाषा श्रीयमुना जी के स्नान करन के मिस उह वन में आई सो श्रीकृष्ण को दरसन करि प्रेम में एका ठाढी देषीहें तव कीरत जी मुषरा सों कहे तुम जाय बेटी कों समुझावो जो फेर असी ढीढ के वन में न जाय तव मुषरा रिस सों सारंगी सो वोली हे बेटी सारंगी तू मेरे संग चलि के ललिता सहित राधा कों दिषाव यह करि

सारंगी कों संग ले मुषरा तहां ते चली सो वन में आयकैं देषे तो गायन के मध्य श्रीकृष्ण ठाढे हे कदंब की छाया के तर श्रीदामा सुवल मधुमंगल सषान के संग आगे श्रीकृष्ण के ललिता विसाषा श्री राधा जी प्रेम में ठाढी मुरली नाद के रस में मग्न हैं मुषारविंद की सोभा परस्पर श्रीराधा कृष्ण अवलोकन करि आनंद कों पावत हें सो मुषरा दूर तें देष रीस करिकें दौरी श्री राधा की बांह पकर लीनी कहन लगी तू लाज सरम सब छोड़ दीयो अरी पर घर घालनि तू छोटी सों छोकरी मेरे आगे उपजी बड़ी भई अब मेरी आषिन में धूरि डारिकें जहां तहां बन वन में नंद को बेटा जो महा धूर्त ताके पीछे फिरत है मैं नित्य तोकों वरजत हों मेरो कह्यौ करत नाही अब मैं ललिता विषाखा महित तोकों तीनों जनीन कों पकरिकें कीरत जी वृषभान आदि गुरुजन पास ले जाउगी सो मुषरा तीनों जनी की बांह गहि तहां तें लै चली घर कों तब श्रीकृष्ण डरपिकें मधुमंगल सों कह्यो भैया यह बुढ़िया निगोडी अब कहा जानिये कैसी करेंगी नित्य विहार में विघन करत है आजु कोई प्रकार राधा मुषरा ते छूटे तो बड़ी बात है यह कहि श्रीकृष्ण जहां **वृन्दादेवी और पूर्णमांसी** जी हती तहां **आये** तब श्रीकृष्ण नें **सब बात वृंदादेवी और पूर्णमांसी** सो कह्यो जो आज मेरे आगे ते मुषरा राधा को पकर ले गई तो एक की दस लगावेगी सो तुम सहाय कर राधा कों उह बुढिया तें छोडावो तव पूर्णमांसी जी और वृंदादेवी नें कही तुम आनंद पाय कें सघन लता कुंज में बैठो तहां जाय ये वन के मर्कट कोकिल मोर आदि पछी लता वृछ सब तुम्हारी लीला सहायक हैं सो मुखरा ते डरपो मति सब आछी होइगी तब श्रीकृष्ण सुवल श्रीदामा मधुमंगल महित सघन वन में वट के वृछ नीचे आये मधुमंगल

सों रस की बात कहने लागे नित्य या वन में आवत हते सो या वन हरो अत्यंत सीतल लागतो आज तो यह बन में अत्यंत तातों लागत हे तब मधुमंगल नें कही आजु तुमको विरह हृदय में है तांते वन सगरो सीतल तें तातो भयो है और अब यह वन हरे सो पीत लगेगो तब श्रीकृष्ण ने कहीं भैया मधुमंगल तू मेरे मन की बान भली जानी मोकों अब यह बन पीरो सब दीसत है तब मधुमंगल नें कही तुम श्रीराधा को ध्यान करि विरह तें सगरा ईंद्री मन राधा रूप ह्वो गयो हो तातें तुमको सगरो बन पीरो लागत है या प्रकार वार्ता मधुमंगल सों इहां श्री ठाकुरजी करत है उहां मुखरा राधा ललिता विसाषा कों लेकें चली रीम सों अनेक बचन कहत हे आजु देख तो तीनों जनी को संग सगरे गुरुजन में कैसी न करूंगी तब राधा ललिता विसाषा तीनों डरपी जो जो आजु या बुढ़िया को मन किस प्रकार छुटे या प्रकार विचार करत हैं तीनों जनी एतने एक गढेला आयो तामे मुषरा को पाव जाय परयो सो मुषरा गिरि पाव में कांटो लगो सो तीन जनी को छोडि कांटा निकामन लगी तब राधा ललिता विमाषा तीनों भाजी सो कुंज लता में धसि गई तहां देखें तो वड के व्रछ नीचे श्री ठाकुर जी सषीन सहित ठाडे हैं तब तीनों जनी कों आवत देखि मधुमंगल श्रीकृष्ण सों बोले हे भैया यह वन वहुत तपत हतो सो ताप मिटावन के लिए पूर्ण चन्द्रमा उदय भयो तब श्रीकृष्ण बोले हे भैया मोकों श्रीराधा के मिलन कों वऊत विरह हतो मे राधा के प्रेम ते विकल हों सो यह पूर्ण चन्द्रमां नाही हे यह चंदावली जी है सो मोको विरह जानि आई है यह वचन राधा जी सुनत ही ललिता विसाषा सों कह्यो तुम उतावली ऐसी हो क्यों श्रीकृष्ण पास जात हो ये तो चन्द्रावली कों चाहत है

हमको चाहत नाहीं तातें चलो अपनी घर कों जाहि मैं तो इहां न रहूँगी यह करिकें श्री ठाकुरजी तहां तें दौरि कें श्राराधा जी के सन्मुख आप आडे ठाडे भये तब श्रीराधा जी ने कही तुम लंपट कपटी मेरे आगे आडे क्यों आये जा चंद्रावली को नाम मुषतें कहत हो जाको ध्यान करत हो वाके पास वेग ही जाव तब श्री ठाकुरजी श्रीराधा जी को हाथ पकरि लीयो तब श्रीराधा जी रीस करि हाथ छोड़ाकें ये भाजी सो अपुने घर आई तब ललिता विसाषा श्रीराधाजी कों घरमें पऊचाय कीरत जी पास अपुने घर पाछे दोऊ सषी गई पाछे ललिता विसाषा विचार करचो जो घर में कहा करेंगी चलो पूर्णमांसी जी पास कछु राधा जी के मनाइवे को विचार करिये यह विचार कर ललिता विसाषा पूर्णमांसी जी के पास चली इहां मुषरा को कांटा लगे सो निकासन लागी येतने दस बीस बंदरा आय मुषरा को घेर डरपावन लगे कपरा पकरिकें षेंचें मुषरा व्याकुल होई कह्यो है देव मोको महांदुख पर्‌यो अब में बंदरा सों कैसे बचौंगी ललिता विसाषा राधा तीनों महाकपटी मोको छोड़ि अकेलि भाज गई अब मैं कैसी करूं यह कहि मुषरा पुकारकें रोवन लागी तब तहां अभिमन्य गोप आय गये सो मुषरा कों रोवत देष बंदरा कों मार पथरान सों ढारि मुषरा की भुजा पकर उठायो तब मुषरा ने कही राधा की प्रीत नंद के बेटा सों लगी है सो वेगे कछु उपाय करो तब अभिमन्य ने कह्यो में हुं जहां तहां गोप गोपी बात करत सुनें हों सो ब्रज छाड़ मथुरा जाय बसेंगे तब श्रीकृष्ण सों बचेंगे सो पूर्णमांसी जी की आज्ञा ले विचार करे तब मुषरा और अभिमन्य पूर्ण-मांसी जी को नमस्कार करि अभिमन्य ने कही माता जी हम मथुरा वास करन कों तुमसों आज्ञा मागत हैं कुटुम्ब सहित

मथुरा जाय बसेंगे तब पूर्णमांसी जी नें अभिमन्य सों कहे तुम मथुरा वास करन कों विचार कीए ताको कारन कहा हे ? ब्रज में तुमकों ऐसो कहा दुष है तब अभिमन्य नें कही नंदराय ब्रज में राजा कहावत हैं सो नंदराय के वृध समय श्रीकृष्ण पुत्र भयो है सो श्रीकृष्ण बड़ो धूर्त है लंपट महा है नंदराय पुत्र को सभे द्वार के ऊपर सदा मडरात हैं सो लोग राधा सों लगाय कलंक कि वारता करत हैं सो हमसो सही नाही जात तब पूर्णमासी कहें तुम काहु लोग के कहे ऐसी बात मानो मति अपुनी आषिन सों देषिये तब जानियें ब्रज के लोग तो तुम जानत हो एक की चार लगावत हैं तातें इनकी बात मानो मति और तुम मथुरा जाय कें कहा करोगे कंम तहा है जाकी मृत्यु आय पहुँची है सो कछुक दिन में मरेगो सो कहा जानियें कैसी होई ब्रज को तुम्हारी जन्म को वास हतो छोड़ोगे तो दुष पायोगे कहुं बैठन की जागा और ठौर भी मिलेगी नहि तातें ब्रज तें कहुं जाइवे को नाम मत लेऊ और लोगन की बातन कों सुनो मति श्री राधा परम पवित्रा है सो राधा को नाम लेय सोउ पवित्र होय जाय यह बात रिषिश्वरी की सुनि दोऊ पूर्णमासी जी के चरन में परिकें डंडोत कियो कह्यौ अब हमकों विस्वास दृढ़ भयौ काहु की बात ना मानंगे तब मुषरा पूर्णमासी जी सों विनती कीयौ तुम्हारे आसीर्बाद तें चंद्रावली जी को भरता गोधन गोप है सो वाको लाष गाय भइ हैं तीस हजार भैंस भई हैं सो अब बड़ो वैभव भयो है तेसे ही मेरी नतीनी राधा कों काहू देवता पूजा करावो तो अभिमन्य की कछु वैभव बढ़े तब पूणमांमी जी मुखरा सो कही तेरी नतिनी कों या वन की देवी गौरी ताकी पूजा करा-ऊंगी ताकरि राधा के सकल मनोरथ पूर्ण होइगे तब अभिमन्य पूर्णमासी जी सो कह्यो तुम मधुमंगल को आज्ञा देऊ जो देवी-

मंडप में पूजा की सामिग्री ले जाय नित्य राधा कों पूजा करावें तब पूर्णमासी जो कहे तु निश्चिंत होय आनन्द पायके अपुने घर बैठो मे जा प्रकार गौरी राधा के अपुने उपर प्रसन्न होइगी सोइ उपाय करूंगो तब मुषरा अभिमन्य अपुने घर गहेये तब पूर्णमांसी जो देषे तो ललिता विशाषा अनमनी ठाढी हें तब पूर्णमांसी जी दोउ सो पूछे जो तुम दोउ आजु चिंता आतुर सी क्यौ ठाढी हैं तब ललिता विसाषा वोली आजु श्री राधा जी कृष्ण कों झूठेई अपराध लगाय घर रूठि आई है सो हमको संताप उपज्यो है श्रीकृष्णजी अकेले सघन वट ठाढे हैं राधा राधा रटत हैं यह सुनत ही पूर्णमांसी जी वृंदा सखी और ललिता विसाषा कों संग ले सघन कुंज लता में आय देखें तब श्रीकृष्ण के नेत्रन तें विरह ते आंसू परत है मुख सों श्रीराधा श्रीराधा रटत है हृदय में राधा जी के स्वरूप के ध्यान में मगन हैं तब पूर्णमासी जी वचन सुनत ही श्रीकृष्ण के पास आय के कान में कहे श्रीराधा तुमकों मिलेगी यह पूर्णमासी जी के वचन सुनत ही श्रीकृष्ण प्रसन्न होइकें नेत्र खोलो सो देखे तो आगे पूर्णमासी जी आशीर्वाद दीये तुमारे मनोरथ सर्व पूर्ण होउ तब वृंदादेवी श्रीकृष्ण के निकट आय कान में कह्यो वलि जाउ तुमकों ब्रजराज जी की सोंह है तुम्हारे मन में कहा चिंता है सो तुम मोसों कहो तो मिलि कें पूर्णमासी जी सों उपाई विचारों तब श्रीकृष्ण ने कही मोको श्रीराधा जी कों कोइ उपाय सों मिलावो तब वृंदादेवी ने कही एक उपाय में विचारो हों सो तुम करो तो श्रीराधा जी तुमकों मिले तब श्रीकृष्ण ने कही वृंदादेवी तुम सर्वज्ञ हो हमारी लीला के सहाय करो तुम सब जानत हो तातैं तुम कहो सोइ मैं करूंगो तब वृंदादेवी ने कही बलि जाउ तुम सखी को रूप करो और या बन की

देवी गौरी है ताके मंदिर में जायके बैठो तहां श्रीराधाजी गौरी पूजन को आयगी सो पूर्णमासी श्रीराधा जी के संग आवेगी सो तुमको देवी के मंदिर राधा सषी भेष देष के हमसो पूछेगी जो यह कौन है तब मैं कहुँगी जो मेरी बहिन है निकुंजविद्या याको नाम है तुम यह निकुंजविद्या को मिलौगी तब निकुंज-विद्या तुमको श्रीकृष्ण को मिलावेंगी तब श्रीराधा तुमकों मिलेगी यह उपाय विचारयोह तव श्रीकृष्ण यही बात ब्रंदा-देवी की सुन मन मे बहुत ही प्रसन्न भए कहे वृंदादेवी सों कहे सषी भेष में करूगो सो और तो सव सिंगार बनेगो परन्तु में स्याम हों सो स्याम ते गोर बने होउ सो उपाय विचारो तब वृंदादेवी ने कही यह तो सुगम है तब श्रीकृष्ण ने कही सुगमह तो बतावो तब वृंदादेवीने कही मधुंगल अपुने घरते पीरो केसर घसि के गौरी की पूजा कों ले जात हे सो तुम उह केसर सर्वांग में लगावोगे तो गोरि होईगे रंच स्यामता झलकेंगी तउ चिंता नाही आभूषण वस्त्र पहरि कें बेठि रहो हम जाय श्राराधा जी कों घरतें ले आवत हें या प्रकार तूमारो मन-बांछित फल सिधि होइगो यह मतो करि श्रीकृष्ण गौरि के मन्दिर में जायके सुन्दर वनिता को रूप करि के बैठे वृंदाजी जहां श्री राधाजी अपुनी सषी चंचकलता सों अपुने मन कें मनोरथ की बात करत हें जो मैं रीस करिकें श्रीकृष्ण की भुजा छुटाय कें भाज आई परन्तु मोकों उह छेल छबीलो गिरिधारी विना रहों नहि जात एक छण जुग समांन वीतत हे सो अव मे कोन उपाय सों नंद कुमार प्राणनाथ सो मिलो यह वात करत हें इतने वृंदा देषि कै श्रीराधा वृन्दा सों पूछन लागी वृंदा तुम तो जानत होउगी उह नंद को वेटा छेल अब कहां हैं मौकौं कैसें मिलें तब वृंदा ने कही उह तो वहु नायक हे तुम जानत

हो तुमको कौन पावे जाको पूर्ण भाग्य उदै होय सो पावै तब ललिता विशाखा वृन्दा सो कहे तुम श्री बृन्दावन की देवी हो सो तुम्हारी कृपा होय तो श्रीकृष्ण को दरसन दूर नाही । यह सुनि के वृन्दा जी के मन में दया उपजी । मन मे जान्यो ज्यों श्री राधा जी श्रीकृष्ण के मिले बिना दुख पावत हैं तब वृन्दा ने कही तुम गौरी की पूजा करन कौ चलो तहां पूर्णमासी जी हैं सो उनसो हम मिलकें विचार कर उपाय करै तुमकों श्रीकृष्ण मिलावेंगी यह सुनि श्रीराधा जी ललिता विशाखा विंदा आदि सखी अंतरंगी संग ले गौरी के मंदिर पूजा करन को चली सो आगे जायकें देखे तो तांडवीक नाम मोर श्रीकृष्ण को गौरी के मंदिर के आगे रास मंडल के ऊपर निर्त्त करत हे सो उह तांडवीक नाम मोर को यह नेम है जहां श्रीकृष्ण निकट कहूँ होइ तवू ही उह निर्त्त करे ता मोर कों श्रीराधा जी निर्त करत देष के चारों ओर देखन लागीं जो श्री कृष्ण इहां कहूँ पास हें ताते मोर नाचत हे तातें ठाढी ह्वै रहीं तव वृंदानें श्रीराधा सों कह्यो तुम मोर कों निर्त्त करत ठाढ़ी क्यों भई श्रीकृष्ण तो इहां कहुं दीसत नाहीं ताते तुम वेगे चलो गौरी की पूजा तो करो तव श्रीराधा जी चारों ओर देषो परन्तु श्रीकृष्ण कों देषे नाहीं तव गौरी के मंदिर में गई एक सखी तहां मंदिर में बैठी देखी और कोई नाहीं तव श्रीराधाजीने वृन्दा सो पूछी जो इह सुन्दरी कौन गौरी के मंदिर मे वेठी हे सो याकी कांति श्री अंग की गौर छटा सगरे फैली है वीच वीच मे स्याम छटा झलकत हे तव वृन्दा ने कह्यौ अहो श्रीराधा जी इहां यह वैठी है । यह भाडीरवन की देवी है यह श्री कृष्ण की परम हितू है तुम इतने दिन सो नाहीं मिली तो अव इन सौ मिलो यह देवी तुमकौ कृष्ण मिलावेगी तव ललिता विशाखा श्री राधा की

बांह पकरि गौरी के मंदिर में गई। वृन्दादेवी संग है । तब श्री राधा सहित सबका निकुंज विद्या देखि वृंदा सो बोली हे वृंदा राधा सों मोसों बहुत वार भेट भई हे परंतु राधा मोसों कबहुं प्रीति सों नाहीं मिली ताते अब में राधा सौं न मिलौंगी ! यह निकुंज विद्या जब कह्यौ तब श्री राधा जी निकट आई हाथ जोरि दडौत करि दैन्यता सों स्तुति करनि लागी हम तो तुम्हारे भरोसे तुम्हारे आश्र ब्रज में वसति हों । विना मोल की तुम्हारी में दासी हों तुम्हारी कृपा तें श्री कृष्ण कौ प्राप्त हैं। तातें तुम हमसो न मिलो तो कैसें बनें मेरो अपराध छिमा करो। अब मोसो लज्जा छोड़ि निसंक होइ मिलो । यह कहि श्रीराधा जी भुजा पसारयौ तब निकुंजविद्या उठि कै मिलन लागी। तब सखी सब बाहर आइकै ठाढ़ी भईं । सो दो स्वरूप गाढ़े हृदय सो लगाय कें मिली तब राधा जी के रोम रोम में आनन्द ह्वै गयौ। सर्वाङ्ग सीतल भए। तब राधा कांपत डरपत वृंदा यह तिहारी बहिन कैसी है यह तो ऐसें मिली जैसें पुरुस मिले सगरे अङ्ग मेरे चिन्ह ह्वै गये । तब वृंदा हँसिके श्री राधा जी सों कह्यौ हे राधा हे निकुंज विद्या श्रीकृष्ण की प्राणवल्लभा है तुम यासौं अन्तर कछु मति राखौ यही तुमकौ श्रीकृष्ण मिलावैगी। यह वृंदा के बचन सुनि कै श्रीराधा जी फेरि गौरी के मंदिर में जाइ निकुंजविद्या के सामुहे हाथ जोरि के ठाढ़ी भई इतने में दोपहर दिन चढ्यो दुपहरा आई सो मुखरा अभिमन्यु की महतारी जटिला के संग गौरी दरसन कूं आई। सो पहिले ही द्वार पर देखे तो श्रीकृष्ण को मोर नाचत है। सो मोर को देखि मुखरा की छाती फाटन लागी। सो छाती कूट्यौ तब अभिमन्यु ने कही मैया तू छाती कों क्यों पीटत हो। तब मुखरा ने कही बेटा यह मोर तांडवीक

नाम हे सो याको ये नेम है जो यह नंद को बेटा महाछली ताकौ संग छोड़त नाही और मेरी नातिनी पूर्णमासी जी के कहे या मंदिर में गौरी की पूजा करन को आई है सो वह श्रीकृष्ण यहां कहुंक होय तो वाकी डीठ बुरी हे सो राधे को लागे तो भली नाही। उह नंदकुमार महालंपट है। तव अभिमन्यु मुखरा सौं वोल्यौ गौरी के मंदिर भीतर चलो तहां राधा होइ तो वांह पकरि वाहर ले जाय अपुने घर जैये। जो उह नंद को बेटा होय तो पकरि कै पूर्णमासी जी को दिखाइ सगरे गोपन कौं दिखाय नंदराय कों उरहनो दीजे। यह कहि आगे मुखरा पाछे अभिमन्यु गौरी के मंदिर के भीतर गये। तव तहां जाय देखै तो श्री राधाजू निकुंजविद्या को हाथ जोरें ठाढ़ी हैं। वात करत हैं। सो मुखरा कौं और अभिमन्यु कौं आवत देखि श्रीराधाजी विरह दुख करि मूर्छा खाय के गिरि परी। तव पूर्णमासी जी दौरि श्रीराधाजी कों गोद में उठा लेकें निकुंजविद्या सों विनती करन लागी हे देवी तुम भक्तवत्सल हो श्रीराधाजी तुम पे हाथ जोरि कैं मागत हे सो तुम प्रसन्न होइ कें उह वात पूर्णमासी की सुनि मुखरा ने वृंदा सो पूछ्यो जो राधा कों कहा संकट परयौ हे। तव वृंदा ने कही परसो के दिना राजा कंस अभिमन्यु कों वुलाय देवी दुर्गा के वलि देयगो यह वात की सांति होय सो राधा देवी पर मांगत है। यह वात सुनत मुखरा जटिला छाति पीटत रोवत श्रीराधाजी के पास आय कहन लागी हे राधा दोउ कुल नंदनी तू धन्य हे जो तोसो देवी साक्षात वार्ता करत है तोपर प्रसन्न है तू देवि सू मागि जाय हमारो घर रहे और जो देवी कहै सो हम करैं। फेरि पूर्णमासी जी के पायन परि मुखरा कहन लागी हम एक तुम्हारोई आश्रय कियो है तुम अेसी कृपा करो जो हमारो

घर रहे । तब इतनेई में निकुंजविद्या बोली हे राधा तेरी सेवा तें मैं बहुत तेरे ऊपर प्रसन्न हों तू मेरी अति प्यारी हे यह सुन मुखरा जटिला अभिमन्यु तीनों जनी निकुंज विद्या के आगे हाथ जोरि ठाढ़े भये । हाथ जोरि डंडौत कीयो । तब राधा जी को आगे करि पूर्णमासी और वृंदादेवी निकुंज विद्या सों विनती करि कहन लागी हे देबि तुम सर्व सामर्थ से युक्त हो थोरी सेवा ते प्रसन्न होत हो सो यह राधा जो बीनती करि वर मागे सो याको मनोरथ पूर्ण करो अेसी कृपा करो जो अभिमन्यु के प्राण बचे और जो तुम हमको आज्ञा करो सो माथे पर धरि प्रीति सों करें तब सबके सुनत ही निकुंज विद्या श्री राधाजी सो बोली हे राधे मोको ब्रह्मा महादेव आदि रिषि मुनि कोटि साधन करे परन्तु कोउ मोको वस न करे परंतु तेरी भक्तसुसीलता तेरी प्रीति में वस हों । तुम श्रीवृंदावन में बसिकें नित्य मेरी सेवा करोगी । यह देवी के मुख ते बचन सुन्यौ तब सगरी जनी निकुंजविद्या कों डंडोत करन लागी । धन्य निकुंजविद्यादेवी तुम्हारो प्रगट प्रताप ब्रज में हे तब जटिला मुखरा अभिमन्यु देवी सो विनती करन लागे । हे निकुंजविद्यादेवीजी राधा इहां सगरे दिन तुम्हारी सेवा करेगी यांही कुंज मंदिर में श्री राधा ने हमारे सबके प्राण राखे हैं । हमारी जीवन प्राण राधा है । राधाजी ने हमकों कृतार्थ कीए । अब हम कबहूँ वृंदावन छोड़ मथुरा जायवे को नाम न लेंहगे । यह कहि निकुंज-विद्या देवी कों डंडोत किए । पूर्णमासीजी सों आज्ञा मांगी । तब पूर्णमासीजी अभिमन्यु सों कहो देख बेटा श्रीराधाजी को झूठी ही कलंक लगाए तो आयु घटे अब तू अपनी आखन सों देख्यौ । श्रीराधाजी के प्रताप तें तू बलिदान तें उबसौ नाही तो मथुरा में मारो जातो । ताते यह श्री राधा अब सगरे ब्रजबासिन को

भक्त जनन कों पूज्य हे तुम कबहुं श्रीराधाजी सों कुभाव मति राखो। श्रीराधाजी सेवा तें तुम्हारो सर्वकार्य सिद्ध होयगो। यह कह उनकी विदा कीनी। तब पूर्णमासी जी कों डंडौत कर ललिता बिशाखा कौं श्रीराधाजी के पास राखि जटिला मुखरा अभिमन्यु घर को चले। पूर्णमासी जी निकुंजविद्या के सन्मुख श्रीराधाजी को ठाढ़ी करि जुगलस्वरूप को दर्शन कीयो। अंचर पसार वलैया लेकैं जुगल स्वरूप सों यह विनती कीयो वलिजाउ सुन्दर जोरी पर याही प्रकार सदा वृन्दाबन में नित्य-विहार करि निज भक्तन कों सर्व सुख देऊ। हम यह तुम्हारी सुन्दर जोरी को दर्सन करि सदा हृदय में ध्यान करें सुख पावें और तुम्हारी लीला सुने गान करें भवें सो ताकों कृपा कर तुम उनके सकल मनोरथ सिद्ध पूर्ण करो जुगल स्वरूप के चरण कमल में दृढ भक्ति देउ। या प्रकार जब पूर्णमासीजी नें प्रीति सों जुगल स्वरूप की विनती करी तब निकुंजविद्या देवी को रूप प्रकट कर श्रीराधाजी कों वाम भाग पर राखि पूर्णमासी सों श्री ठाकुर जी बोले हे पूर्णमासी जी मैं ब्रह्मादिक सिवादिक कै वस नहीं हौं परंतु श्रीराधाजी के प्रेम कर आतुर हों और तुम्हारी भक्ति अलौकिक है ताते तुम्हारे वस हो यह विहार लीला को अनुभव तुमको करावति हों मैं सदा याही प्रकार वृंदावन में करत हों तुम जा जा भावना सों मन लगाय मेरी लीला को दरसन पाय सुख पावोगी समरन कर ध्यान करोगी लीलासों और तुम जापर कृपा करोगी तापर हमहुं कृपा करेंगे। ब्रज वृंदावन को वास दे विहारलीला को अनुभव करावेंगी। तब या प्रकार श्री कृष्ण प्रसन्न होयकें कहे तब पूर्णमासी जी ललिता विशाखा वृंदादेवी कुंज की ओट में ह्वै गईं। तब श्रीकृष्ण राधा जी की भुजा पकरि के सेज्या पर जाय नाना

प्रकार के विहार कीये। तव श्री ठाकुरजी को हृदय नीलमणि वत् परम सुन्दर तामें श्रीराधा जी अपनों प्रतिविंव देखि रीस करि मुख फेर कहे हृदय में दूसरी सुंदरी को वैठार राखे हो मोको तुम मत छीवो तव श्रीठाकुरजी कहे तुम तो बड़ी भोरी मुग्ध हो इहां दुसरी सुंदरी कहां हे। यह तो मेरो हृदय दर्पन की नाईं चमकत है तामे तुम्हारो प्रतिविंव वसो तुम फेर देखो। तव फेर श्रीराधाजी सन्नुख ह्वै श्री कृष्ण के हृदय में अपने रूप देखि हंसि हंसि कें उह प्रतिविंव कों मारन लागी कहे ये प्रतिविंव मोकों बहुत लीला में विघ्नावत हे। जव तब मे जो कोई ओर स्त्री हे यह कहि कवहू प्रतिविंव को मुख पकरें कवहु हस्त पकरें या प्रकार अनेक ख्याल करि मन में वड़ो आनंद पायो पाछे विहार प्रभु के संग करि तन के ताप नसाये। तव श्रीराधा जी ने श्री कृष्ण सो कह्यो मेरौ शृंगार ओर भांति भयो सो सवारि देहु। तव श्रीकृष्ण श्रीराधाजी को शृंगार सवारयो श्रीराधाजी ने श्रीकृष्ण को शृंगार सवारयो इतने में ही पूर्णमासी जी ललिता विशाखा वृंदादेवी सब श्री ठाकुर जी पास आई। तव श्रीराधाजी लज्जा करि घूघट करि वैठी। तव श्रीकृष्णजी ललिता विशाखा सों कहे अव तुम अपनी सखी कों लेके घर जाहु उहां वृषभान जी कीरतिजी भूखे श्रीराधाजी के लीये पेंड़ो देखत होंइगे। तुम अपुनी सखी को भोजन कराय कें हम पास ले आयो दुपहरी भई है मैंहु श्रीजमुनाजी के तीर जांउगो जसोदा मैया जी नैं छाक पठाई होयगी सो सखा बलदेवजी सहित भोजन करूंगो पाछे कुंज मंदिर में विश्राम करूंगा। या प्रकार लीला विसाखा सों कहे तव ललिता विशाखा श्री राधा जी की भुजा पकरि उठायकें लै चलीं। सो राधा जी प्रेम में विकल होंय वार वार फिरि फिरि कें श्री

ठाकुर जी की सोभा देख हृदय में धारन करत हैं। मन में कहे विधि महाकूर हे। ऐसी सूरत दिखाय फिरि वियोग क्यों करत हे। वियोग कों दुख विधि जानत नाही। काहे तें विधि कों वियोग संजोग कछु जानत नाहीं तातें उ रच्यौ और नेत्र दोय रच्यौ कोटि कोटि नेन चहिए सो जड़ है तातें दोउ नेत्र पर पलक आडा रच्यौ वियोग रच्यौ सो सनेही कों दुख है। नीरस कों कहा सुख दुख या प्रकार प्रेम सों विचार करत श्रीराधाजी घर गईं सखी सहित। तव श्रीकृष्ण उह सखी भेष के आभूषन वस्त्र सव उहां कुंज में राखि कें गोप भेष सों श्री जमुना जी के तीर सुवल श्रीदामा मधु मंगल सहित पधारे सो उहां देखे तो जसोदा जी नें छाक पठाये हैं। और वृज भक्तन के घर की छाक आई है श्री वलदेवजी सगरी छाक न्यारी धरि श्री-कृष्ण कों मारग देखत हैं। इतने ही श्री कृष्ण पधारे सो ग्वाल मंडली करि मध्य में श्री ठाकुर जी वलदेव जी सवसो छोटे सखा श्री ठाकुर जी के आस पास तिनसों बड़े नेकु दूर तिनसों बड़े नेंक और दूर सवसों बड़े बड़े गोप। सो सबके पीछे या प्रकार ग्वाल मंडली करी जामें सबको श्रीकृष्ण कों दरसन होइ और यह जताए जितने बड़े कहाए लोक लाज में ते प्रभु सों दूर जितने छोटे कहाये तिन प्रभु के निकट या प्रकार सगरे सखा हास्य विनोद करत श्री कृष्ण वलदेव जी सहित छाक आरोगत हैं सामिग्री को सवाद गुण वर्णन करत हैं। पूर्णमासी जी नंदीमुखी वृंदादेवी अपनी पर्ण कुटी में गई।

इति श्री ब्रज वृंदावन लीला सरदविहारो नाम
प्रसंग द्वितीय।

———

या प्रकार सुखमय श्रीवृंदावन में दोउ श्रीराधाकृष्ण परम प्रीत सों विहार करत हैं। अपुनि भक्तन को परम सुख देत हैं। एक दिन नंदीसुरते श्री ठाकुर जी गाय लेकें सखान के संग नंदगांव वरसाने के बीच कदमखंडी में कंदव को वन है तहां गाय सखन सहित श्री कृष्ण आयके ठाढे भए। तव श्रीकृष्ण उह कदंव वन की सोभा देख मधुमंगल सुवल देख श्रीदामा सखा सों कहे ये कदंव के फूल अत्यन्त सुगन्धित हैं तुम तीनो सखा मिलिके यह कदंव के फूल तोरि कें सुन्दर वनमाला वनाइकें मोकौ पहिरावौ। मैं इहां कदंव के तरे तवताईं ठाढो रहूंगो। यह सुनिके सुवल श्रीदामा सों श्री ठाकुर जी ने कह्यौ तुम कदंव के रूख ऊपर चढ़ वरसाने को पेड़ो देखो। श्रीराधा जी बरसाने तें यह कदमखंडी की ओर आवत हैं कि ओर वन मे जात हैं। जा वन में श्री राधा जाही ता वन में सुपनें हू चलेंगे। तव श्री दामां ऊचो कदम को वृक्ष ताके ऊपर चढ़ कैं वरसाने की गैल देखन लाग्यौ और श्री कृष्ण जी नें मुरली हाथ में लीए चारौ ओर दृष्टि कर देखत जो कहुं राधा दृष्ट परे तो नेत्र सीतल होय। पाछे मुरली में श्रीराधा राधा की धुनि ऊंचे स्वर सों गान कीए। और इहां ललिता विशाखा को संग ले श्री राधाजी फूल तोरत वही कदंव वन में आईं। तव श्री राधा जी ने कही मेरी गोद फूलन सों भरि गई अव फूल मति तोरो चलो कदंव की छां तरे वैठ कै एक सुंदर माला करिये तव ललिता विशाखा श्री राधा जी कों आगे कर चली। इतने ही में श्रीकृष्ण की मुरली वाजी। वह धुन श्रीराधा जी के कान में परी तव श्री राधा जी मुरली की धुनि सुनत ही प्रेम में व्याकुल भई तव ललिता विशाखा सों कहन लागी हे सखी इहां निकट कहुं गोपाल कों दरसन इन नैंन सों करिये। यह

सुनिकें ललिता बिशाखा प्रसन्न होय कहे अहो प्यारी जहां तुम्हारी इच्छा होय तहां चलौ तुम्हारे पीछे हमहुं गोपाल को दरसन करेंगी । या प्रकार तीनों जनी श्री कृष्ण के निकट चलीं। तब श्रीदामा तीनों जनी को आवत देख कदंब के ऊपर तें उतर श्रीकृष्ण के पास आयकें कहो भैया उह देखो ललिता बिशाखा के संग श्रीराधाजी फूल तोरे गान करत आवत है। यह सुनिकें श्रीकृष्ण मन में महाआनन्द भयो सों रह्यौ न गयौ दौरि कें श्रीराधा जी के सन्मुख आइ एकटक चकोर सी नाईं मुख चन्द्रमा कों देखन लागे। पाछे श्रीकृष्ण श्रीमुख सों कहे हे प्राणप्रिया मोको तुम्हारे दरसन विना एक क्षण जुग समान कोटि जुग समान वीतत हैं। सो तुम भली करी जो मोकों कृपा करिकै दर्शन दीए। अब अजु वरसारितु कों आगमन है रसरूप रितु आई हे सो आज में हुं पहिलैं ही या वन में आयो हूं । और हमारो तुम्हारो या वन में मिलाप पहिलें ही भयो है । तातें आजु यह कदंब वन में फूलन की सेज बनाय कें लीला करि यह वन रसरूप करिये। और सुवल श्रीदामा मधु मंगल फूल लेन को गए है सो जहां तहांई वे फूल लेके आवें तहांताईं तुमसो खेल करें। यह कहि श्रीराधा के कंठ से अपुनी भुजा मेलि हसत हसत प्रेम की बार्ता करत कुंज मंदिर को चले। तब ललिता बिशाखा दौरि कै कुंज में आईं । आगे फूलन के सबसत सवरि फूलन कौ सज्या परम सुंदर चित्र विचित्र कीए। फूलन के तकिया फूलन के गेंदुवा फूलन के महल बंदनवार चंदोवा पिछवाई षरदा फूलन की चौकी फूलन के आभूषन दोउ स्वरूप के अनेक भोग सामग्री वीडा अरगजा फूलन के पंखा या प्रकार अलौकिक सामर्थ प्रकट करि सगरो रसरूप अस्थल सवारि कें। आगे दोउ स्वरूप के समुहे पधावन कों

आई। आयकें श्रीठीकुर जी सों श्री स्वामिनी जी सो विनती करिकै कह्यौ वलजाउ कुंज महल में कृपा करि पाउ धरिये। तव श्रीकृष्ण राधाजी सों कह्यौ देखो सखी केसी सेवा में तत्पर हैं। इतने में कुंज लता सवारि कें पधरावन आई। तब श्री राधा जी ने कही ये सखी जन के बड़े भाग्य हैं। काहें तें दोऊ स्वरूप के रस को अनुभव करत हैं हमको तुम्हारे स्वरूप को अनुभव तुमको हमारे स्वरूप को अनुभव है सखी जनको दोउ स्वरूप की लीला को अनुभव है ताते ये वड़भागी हैं। तव श्रीकृष्ण कपोल परस करि श्री राधा जी सों कहें प्यारी तुम्हारो मुख चद्र देखत पून्यौ को पूर्ण चंद्र तुछ लागत हे। ताते जा ठौर तुम मोको बास देकै बसावो ता ठौर मैं सदा रहौं। यह सुनिके श्रीराधा हसिकें कंठ लगाय कें मिली तामें यह जताये तुम हमारे हृदय में वास करो या प्रकार रस वार्ता करत कदंव वन के निकुंज मंदिर में प्रसन्न भये सीतल मंद सुगंध सुंदर काम-रूप वयार के लगत दोऊ स्वरूप प्रेम सों विहार करन लागे। पाछे श्रीराधा जी काम भाव के अनेक आसन कोककला की चातुरी सव प्रगट करी। श्रीकृष्ण को प्रेम सों वस कीये तव श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न होइ श्री राधाजी सों हसि के कहे मैं तुम्हारे प्रेम सो वस हों कहो तो में तुम्हारो सिंगार करौं। तब श्री राधाजी नें कही प्यारे प्राणनाथ तुम मोकों चंदन की चोली पहिरावौ और फूलन सों मेरी वेणी गुहो और फूलन को मुकुट मोको धरावौ। पायन में महावर देहु मेरो शृंगार करो और अपनो शृंगार मोकों पहिरावो फूलन की काछनी मोको पहि-रावो। ऐसो शृंगार करो सखी सखा मोको देख के रीझे। और ऐसे शृंगार हमसों कबहु न बने या प्रकार सो सुनत ही श्रीठाकुर जी वैसे ही अद्भुत सिंगार किये पाछे श्रीठाकुरजी कों श्री राधा

जी नें सुंदर शृंगार कियो । या प्रकार परस्पर दोऊ स्वरूप अलौकिक सिंगार करि भुजा सों गलवाहीं दीये मंद मंद चलिके कुंज के द्वार पर दोउ सरूप आयके ठाढे भये । कंठ में वाह मेलें इतने में ललिता विशाखा दोऊ सखी आई सो दोउ सरूप की सोभा देखि कें मोहित ह्वै गई । आपुस में दोऊ सखी कहन लागीं देखो हमारी सखी श्री राधा की शोभा जाके दर्शन के लिए ब्रह्मादिक सिवादिक बड़े बड़े मुनि अनेक कष्ट कर तप करत हैं तिनको ध्यानहु में एक क्षण आवत नाहीं ऐसे श्रीकृष्ण महा दुल्लभ हे तिन को श्री राधा जी अपने प्रेम करि तनक चितवन में अपने वस कर लीये या प्रकार सखी सोभा देखत हैं । प्रेम सों वार्ता करत हैं । और वे दोऊ मधुमंगल और सुबल को फूल लेन कू श्री कृष्ण पठाये हुते सो दोऊ जने बहुत भांतके फूल ले हार माला वडी गूंथ वहुत भांति कें आभूषन और छोटे फूल सुंदर सुंगधित ल्याय श्री कृष्ण के सन्मुख आय कहे भैया ये हार आभूषन हैं सो तुम श्री राधा जी को पहिरावौ तुम पहिरौ और छूटे फूल हें फूल की गेंद हें लकुट हे नवला सी हें सोउ भी राधाजी को देहु तुम लेहु अंगीकार करो तो हमारो श्रम सुफल होय तव ललिता विसाखा ये आभूषण ले श्री कृष्ण को पहिराये श्रीराधाजी को पहिराये । छूटे फूलन की ऊपर वरसा करी । इतने कदंव वन के वृक्ष वड़े भगवदी सो प्रेम सो कंपायमान होइ मधु की धारा वही उपरतें फूल झरझर कें नाना प्रकार के रंग के गिरन लागे । अद्भुत वर्षा रितु की सोभा भई नाना प्रकार के पसु मृग आदि ठाढ़े ह्वै रहे और फूल वचे सो श्रीकृष्ण ने अपनी गोद में लिए और श्री राधाजी नें अपनी गोद में राखे । पाछे श्रीराधाजी की चितवनि नेत्र कटाछ सो श्रीराधाजी नें श्रीकृष्ण सों कहे तुम्हारी गोद में

फूल बहुत है सो थोरो सो मोकों आपुनी गोद में ते फूल देहु । तब श्रीकृष्ण प्रेम में मगन ह्वै गये सो फूल गोद में ते ले श्रीराधाजी की गोद में देन लागी । सो हाथ सो मुरली श्रीराधा जी की गोद में गिरी सो श्रीकृष्ण को सुध नाहीं । तब श्रीराधा जी मुरली गिरी जानि गोद में छिपाय के ललिता विशाखा दोनों सखी के पास आय कें कहन लागी सखी चलो घर तें निकसें बडी वेर भई है सो अपुने घर जैयैं । काहे ते कीरतमैया खीझेगी हमारी वैरन मुरली है सो आजु मेरे हाथ आई है सो याको उराहनो देहुगी यह मति करि राधाजी ललिता विसाखा सखीन संग चली सो कृष्ण की ओर वारम्वार प्रेम सों चितवत जाय श्रीकृष्ण प्रेम सो चकित होइ ठाढे हो रहे मन में विचार करन लागे जो श्री राधा अकस्मात मेरे निकट सों क्यों चली और राधा जी सखीन संग चलिकें एकान्त मालती को कुंज हतो घर के द्वार पर तहा जाय कें बैठी । तब मुरली कों श्रीराधा जी अपुने हाथ में लेकैं उराहनो देन लागी प्रेम में मग्न हो सखी पास ठाढ़ी हैं । तब श्रीराधा जी मुरली सों बोला तोमें गुण तो एक नाहीं हे सात तो तेरे छिद्र हैं और हृदय तेरो सून्य है महाकठिन है गांठ गठीली है ऐसी तू देखत में है परन्तु श्रीकृष्ण के अधरन एर हस्त में कटि में तू तीनों ठिकाने लगी लगी रहति है सो तेरो केसो कहा पुन्य है ? श्रीकृष्ण को अधरामृत हे तामे हमारो लीये धन तू निधरक ह्वै पान करत हे और तेरे सुर सों हमारे अंग अंग में छेद होत हैं ऐसे जर तेरे में भरोह सो का करन कहा । तब ललिता विशाखा यह मुरली कोन भलो कर्म करति हे हम अपुने ग्रह को कार्य करत

है, सौ याको सब्द सुनत ही सब काम भूल जात हैं। तब विशाखा ने कही यही मुरली महा निरदई हे। हमारी लज्जा सरम सब छुडाई या मुरली को घाली घर में एक छन रह नाहीं सकत। मात पिता गुरजन सब निदा करत हैं तऊ हम मान नाही और या मुरली ने जड़ जो पर्वत वृछ तिनकों चलाय-मान करि दीयो। और चैतन्य पसु पछी सब जड़ करी दीयो उलटी चाल वृज में चलाई है परन्तु याको बंस उत्तम हें उरध हे जो या साक्षात पूरण पुरषोतम के हस्त कमल में स्थित है। यह गुण है परन्तु या मुरली में औगुण वडो है जो गोपिन के मन कों सुर रूपी वान करि घायल करि घुमावत है। परंतु तेरे मन में नेकु दया को परस नाहीं है औसी निठुर है और हम रात्रि दिन श्रीकृष्ण के विरह कर दीन होई रही है तिनकें ऊपर तू निति गाजत है ताते यह सिछा तू मुरली को उरहनो दीयो तब सो हम को बताव या प्रकार तीनो जनी तें मुरली बोली मेरी बात सुनो तब उरहनो देहु में जन्म ही ते बन में वास करी एक पाव सो ठाडी रही तपस्या करी सीत बयार धूप जल सगरो दुख में सहन कीयो पाछे गोपाल ने सो को काट के धूप में सुखायो पाछे ताते लो करि मोको छेदो इतनो दुख मैं सहन कीयो ताते गोपाल सोपर कृपा करत हैं। सो मेरे मन में यह बहुत अभिलाष हुती जो श्रीकृष्ण को अधरामृत तो में पायो परन्तु श्रीराधा जी को अधरामृत मोकों कोई प्रकार से मिले तो मेरो जन्म सुफल है जाई आजु मेरो भाग्य खुल्यो है जो श्रीराधा जी के हस्त को परस तो भयो अब मोकों और हू कृपा करेंगी यह मुरली की सब्द सुन तीनो सखी हसी हसी परस्पर कहै यह मुरली कैसी मीठी वानी बोलत है अपने स्वारथ के लीये। या प्रकार तीनो जनी हवाकी गोद में हंसि हंसि के गिरि जाव

हैं। इतने ही में मुखरा घर तें बाहर आई सो मालती के कुंज में राधा को देख कें छाती सो लगाय लई। कह्यो अहो कुल-नंदिनी निर्मल मुख कमल भूखते कुंभिलाइ रह्यौ है। चलो तोकों जिवाय कें तेरो सिंगार करूं। उहांते जब कदव कुंज तें राधा चली तब ललिता चतुर है सो फूल को मुकट काछनी उतार पास राख्यौ हुतो जो कहु मुखरा देखेगी तो विपरीत होइगी। उहा श्रीकृष्ण से सुबल ने कही चलो श्री जमुना जी के तीर गाय एकठी करि खेलिए। यह सुनि कें श्रीकृष्ण बोले भैया मधुमंगल मेरी मुरली कहां है। तब मधु मंगल ने कही हम कहा जानें तुमनें कहां मेंली तब श्रीदामा ने कही हे नंदराय के लाड़िले मोहन लाल तुम्हारी मुरली मेरे जान में यह आई जो श्री राधा जी ने हरी है। काहे तें प्रसन्न होइ के इहां ते सखीन के सहित भाजी। तब मधु मंगल वोल्यौ सुनो दामा हमारी वात आजु हमारो वड़ो भाग्य है जो श्रीराधा जी ने श्रीकृष्ण की मुरली हरी। अब श्री कृष्ण को अलौकिक प्रेम प्रगट होयगो और मुरली के वड़े भाग्य हैं जो श्री राधा जी के अधर पर विराज के परम सोभा को पावैगी। तब श्रीकृष्ण वोले भैया में मुरली विना गायन कों कैसें वुलाउंगो घेरोंगो। तब मधुमंगल हंसि कें कह्यो मित्र अब मुरली विना ब्रज की वनिता कैसें वस करोगे तब श्रीकृष्ण कदमखंडी तें वरसानें की ओर दौरे सो आगे जायकें देखें तो ललिता बिशाखा श्रीराधा श्रीवृषभान जी के द्वार पर अंवला को वृछ है ताके नीचे ठ ढी है इतने में दूरते मुखरा नैं श्रीकृष्ण कौं आवत देखे सों कछुक मन में उरपी जो यह वड़ो ढीठ लंगर धूत यहां दोरों क्यों आवत। याकी दृष्टि में मोहिनी है सो राधा के मन कों मोंह तो आछे नाहीं यह विचार मुखरा जब निकट आए जानि श्री कृष्ण सों वोली

अरे ढीठ नंद के इहां वालक मेरी नतिनी खेलत है और तू लंपट हो यह दुपहरी में इहां क्यौं आयो तव श्रीकृष्ण कहे अरी बुढिया तू तो वडी प्रमानिक है मुखतें अेसौं कठिन वचन क्यौ वोलति है तेरी नतिनी फूल तोरन कों वन में गई हती सो कदंव तरे तें मेरी मुरली ले आई है तव मुखरा हंसि के श्री राधाजी सों कहो वेटी या नंद के धूत की मुरली तू ल्याइ होइ तो वेगी डार दे याकी मुरली में टोना है सो पास न राखिये जो यह सुरली पास राखिये तो मन यह नंद को वेटा में लागी जाय तव ललिता विसाखा वोलि उठी अरी मैया मुखरा श्री बृन्दावन में कछु लकरी महंगी है मिलत नाहीं हाथ भर के लकुटी सो मुरली ताकों हमारी राधा सखी कहां चुरावेगी। अवही वृषभान जी सो कहूं तो सोने की जड़ाउ लकड़ी वनवाय देय या ढीठ की करी हमारे कौन काम की है और मैया तू जानत नाही आप चोर होइ सो और की चोर जाने। घर घर में तनक माखन दूध ही के लिए व्रज में सगरे चोरी करत फिरत है। तव मुखरा हंसि के कृष्ण सों कह्यौ हे नंद के वेटा धूत तुमकों यह वात कहत लाज न आई। यह वृषभान राय नीकी वेटी श्रीराधा कवहु काहू की वस्तु छूवे नाईं। और भूल के लीनी होती तो मुरली डार देती और तुम चोर हो। उह दिन भूल गये जो घर में माखन की चोरी तव जसोदा जी ने ऊखल सौं वांध्यौ हतो। तेसेई तुम सवके वेटा वेटी कों चोर जानत हो। तातें मेरी नातिनी राधा कों तू चोरी मति लगावे और मेरी वेटी कीरतजी सुनेगी तो तेरी मैया को उरहनो देइगी। तातें वेगे इहां ते भाज जाव नाही तो मेरी कीरत रानी सों जाय कहोंगी। यह वात जव मुखरा ने कही तव श्रीकृष्ण सांचही जान कें फिर चले। जो मुखरा लड़ाई

लगायवे में वडी कुसल है तातें यासों कछु कहनो नाही यह विचार के श्रीकृष्ण तहां ते विचार करत चले । मुखरा श्री राधा जी की बांह गहि कें सखिन सहित भोजन करायवे कों लै चली । श्री कृष्ण फिरि के वाही कदमखंडी में सखान के पास आये तब मधुमंगल श्री दामा सौं कह्यौ मैं श्री राधा पास गयोहु तासौं मुखरा तहां ठाढ़ी हती ताते मेरी चतुराई कछु चली नाहीं । यह कहि विरह चिंतातुर होइ कदम की डार पकर ठाढ़े भये सुवल श्रीदामा मधुमंगल सो कहे तुम सो कछु उपाय वने तो करो मोकौ दोहरो दुख परयो है एक तो श्री राधा जी को विरह है तामें फेर मुरली गई सो अब मेरो मन ठिकानै नहि है । सो यह सव बात एक शुक और एक सारिका नें वृंदा सों सगरी वात कही जो श्री कृष्ण की मुरली या प्रकार श्री राधा जी चतुराय कें ले गई सो श्री कृष्ण श्री राधा विना मुरली विना कदम खंडी में विरह सहित ठाढे हैं । यह सुक सारिका के वचन सुनत ही वृंदा दौरि कै कदमखंडी में आई सो दूरितैं तो श्रीकृष्ण कदम की डार पकरे ठाढे हैं । विरह दुख में मगन हैं । तव वृंदा दूर ही तें श्री कृष्ण कों नमस्कार करत तहां तें श्री राधा ललिता विशाखा पास चली और उहां मुखरा सखिन सहित श्री राधा कों वरसाने ले गई । कीरतजी दूरतें देखत ही दौरि कें आइ श्री राधा जी कों गोद में उठाय हृदय सो लगाय मुख चुंवन करि कहे वेटी भूख तें तुम्हारो मुख कमल कुंभलाय रह्यौ है । तेरो पिता तुम विना भोजन नाहीं करत या प्रकार प्रीति सों श्री वृषभांन जी के पास आई नाना प्रकार के षट्रस के विंजन सखी सहित भोजन कराये । पाछे आचमन कराय मुख वस्त्रकर पोछयौ वीरी आरोगाये तव श्रीराधाजी

ललिता विसाखा सखिन को संग ले संकेत वट के नीचे पधारें तव श्रीराधाजी नें ललिता विशाखा सखीन सों कह्यौ आज मो-को गोप भेष करो तो श्रीकृष्ण को भेष धारन कर मुरली वजाउ। तव ललिता विशाखा जी मन में प्रसन्न होइ दोउ मिलि श्री राधा जी कौं नटवर भेष बनायो। मोर चंद्रका को मुकुट करि माथे पर धराये। तो पीतांवर श्री कृष्ण को प्रसादी ओढ़ायो तव श्रीराधा जी ललिता त्रभंग होई मुरली वजावन लागी। सो वृंदा तहां आयकें देखे तो श्री राधा जी ने श्री कृष्ण के भेष कीये मुरली अधरे वजावत हैं और ललिता विशाखा यह अद्भुत सोभा देखि सन्मुख हाथ जोरि ठाढी हे मानों चित्रिलिखी पुतरी सो वृंदा श्री राधा जी के निकट आइके वलाय लेन लागी सो श्री राधा जी ने संकेत वट के तरे या प्रकार रस रूप मुरली वजाई जो श्रीकृष्ण हूं या प्रकार कबहु न बजाई अद्भुत औधर विकट तान वंसी की उठी जो पसु पंछी संकेत वट के सव मोहित ह्वै गई। पवन की गती वंद ह्वै गई श्रीयमुनाजी को प्रवाह चलत थकिरह्यौ गोवर्द्धन आदिक व्रज के पर्वत सव द्रवी-भूत भए नाना प्रकार के वृछ फल फूल सों नमित श्री राधाजी की ओर झुकि गये। मधु की धारा वहन लागी। सूर्य को रथ चलत तें रह गयो वृंदा हू मोहित भई यह सोभा श्री राधा जी की देख कें इतने ही में मुखरा घरतें चली। चली सो वाहर आई। तव मुरली की धुनि सुन्यों तव जानें या ठौर नंद को वेटा कहुं आयो है सो राधा मुरली सुनि मोहित ह्वै जायगी ताते मैं वेगै राधा पास चलूं। सो उतावली मुखरा चली सो दूर तें श्रीराधा के मांथे मुकुट देख्यौ और पीतांवर देख क्रोध में भर गई जो यह तो कृष्ण सखन के पास मुरली वजावत है। हाय हाय मेरी राधा के यह पाछे

परयौ है यह कहि मुखरा दौरी सो निकट आयके देखे तो श्रीराधाजी कृष्ण को भेख धर मुरली वजावत हैं । सो राधा ललिता विशाखा मुखरा कों देखि उरपि कें कांपन लागी जो अव केसी करें यह बुढिया अब कहां करेंगी तव मुखरा दौरि के श्री राधा के हाथ सो मुरली छिनाय लई और श्री राधा सो कह्यौ अरी चंचल तू गौरी मंदिर पूजा करन कौ नाम लेके घर तें आई सो नंद बेटा की मुरली कहां ते पाई और यह श्रीकृष्ण कौं सिंगार क्यों तू कीयो अव में यह मुरली कीरत जी आदि सगरी वृद्ध गोपीन की सभा में दिखाउंगी । तेरी सगरी वात कहूंगी । मेरे कह कोऊ प्रतीत नाही मानत सो आजु तेरी चोरी प्रकट भई है । यह कहि मुखरा मुरली ले क्रोध तें खीजत चली तव वृंदा और सुवल नें देखो जो मुखरा मुरली लीये जावह तव सुवल वृंदा सों कह्यौ जो यह मुखरा कहुं मुरली लेके कीरत जी आदि वृद्ध गोपीन की सभा में जाय दिखावेगी तो श्रीराधा ललिता विशाखा पर बहुत खीझेंगी महा दुख होयगो तातें कछु ऐसी विचार कर उपाय करो जो मुखरा के पास ते मुरली लीजे । तव वृंदा ने कही तुम चिंता मति करौ पुत्र मैं मुरली या बुढ़िया के हाथ तें लेहुगी यह कहे वृंदा हू मुखरा के पाछे पाछे चली सो मुखरा प्रेमसरोवर के पास आई तव देखे तो सरोवर में निर्मल जल भरो है सो मुखरा को दुपहर की धूप लगी सो प्यासी हुती सो मुरली भूमि में धरि दोऊ हाथनि ते जल पीवन लागी तव एक वंदरिया कष्टी खानि वाको नाम सो सो मुरली ले भागी तव मुखरा उह वंदरिया कों मारन दौरी सो वंदरिया रूख पर चढ़ी सो मुरली वंदरिया के हाथ तें गिरी सो मुखरा मुरली फेर उठाय लीनी तव उह कसटी वंदरिया रूख ते कूद मुखरा के सन्मुख दौरी तव मुखरा ने वृंदा सों

पुकारि के कह्यौ वृंदा यह कसटीवंदरिया महा खोटी कटखानी है मेरे घर ते नित्य माखन खाय जात हे सो मेरे साम्हें काटवे कों आवति है तुम याकौ मारि कैं मोकौ वचावौ। तव बृंदा ने कही यह कसटी वंदरिया महा खोटी है कटखानी है हमहू वहुत याते डरपति है यह कहत ही उह वंदरिया मुखराकौ कपरा पकरि दांतन सों खेच्यौ तव मुखरा उह मुरली खेच कैं मारी सो वंदरिया मुरली कों दांतन सो पकरि एक वड़े रूख पर चढ़ि गई तव राधा ललिता विसाखा वृंदा सुवल सव हसे तव मुखरा सुवल के पास आयकें कह्यौ पूत सुवल मैं तेरी वलैया लेहु तुम यह मुरली वंदरिया पास तें मोकों आनि दें। तव सुवल ने कही मैया मुखरा यह वंदरिया वड़ी कटखनी है ताते मेरे भानजे विसाल गोप है सो गोवर्द्धन पर्वतपर गाय चरावत है तहां वाको यह वंदरिया पहचानत हे ताते तू विसाल गोप को वलाइ ल्याव। तव मुखरा तहां ते दौरि सो गोवर्द्धन पर्वत पर चढो। इहां उह वंदरिया को वृंदा वुलायो सो मुरली लीये रूख पर ते उतर आई तव मुख ते चुचकार पीठ पर हाथ फैर मुरली ले लीनी तव मुरली ले वृंदा श्रीराधा जी ललिता विसाखा के पास आई। इतने में कीरत जी तहां आई तब दूरते ललिता विसाखा कीरत जी कौं देखि गोप भेख उतारि राधा जी को भेख करि दीयो इतने में कीरत जी आई श्री राधा जी को गोद में लेकें कह्यौ वेटी प्राण प्यारी आजु सुहाग पून्यो है सो तुम चलौ तुम्हारौ नौतन सिंगार करूंगी। और गोवर्द्धन व्रज में वड़ो देव हैं तिनकी पूजा तें सुहाग अचल होइगो यह कहि राधा जी कों गोद में लीयो ललिता विसाखा कों संग लेकें घर में आई उवटना सुंदर लगाय तेल लगाय ताते पानी सो न्हवाय अंग वस्त्र करि शृंगार करचौ तव बृंदा सों सुवल वोल्यौ वृंदा हमकौ तो वड़ो दुख आनि के

परयौ है। तव वृंदा ने कही हमसों कहो तुमकों कहा दुख परयौ है तव सुवल ने कही हमारो मित्र श्रीकृष्ण कदमखंडी में कदम के तरे श्री राधा जी के विरह कर ठाढ़े हैं। श्री राधा श्री राधा रटत हैं। मुरली हू हाथ में नाहीं है जो मन दोय घरी वासों लगावें। या प्रकार श्री राधा जी को पंथ निहारत हैं। और श्री राधा जी कों तों कीरत जी ले गइ सो अब केसी होइगी तब वृंदा ने कही जबतांई श्रीराधा शृंगार करि वाहरि आवें नाही तहां ताईं कछु उपाय वने नाही सो अब शृंगार करि सखिन संग गोवर्द्धन पूजन कों आवेगी तव लों मैं एक लीला प्रगट करूं जो तुम मेरो कह्यौ करो। तव सुवल ने कही तुम तो हमारे व्रज की देवी हें लीला में सखी हो जुगल सरूप लीला की साधिका हो तातें या वृंदावन में अेसो को है जो तुम्हारी आज्ञा को भग करेगो। तव वृंदा ने कहि तेरी उनिहार श्री राधा जी सों मिलत हे ताते तोकों श्रीराधाजी भेष वनाऊं और मैं अपुने कौ ललिता कों भेष वनाउं मुरली वंदरिया ते मैं लीनी हे सो तुम्हारे हाथ में देहु। श्रीकृष्ण कदमखंडी में कदमतरे ठाढ़े हैं। तहां जायकें श्री कृष्ण के संग अनेक खेल करिकें श्री कृष्ण को आनंद उपजाउ तहां ताईं सखी संग राधा जी आय जायगी। यह विचार करि सुवल को श्री राधा जी को भेष पहिरायो मुरली हाथ में दीयो और वृंदादेवा ललिता जी को भेष कर दोउ मिलिकें कदमखंडी के श्रीकृष्ण के पास चली वहां कदम तरे श्रीकृष्ण ठाढ़े मधुमंगल सों प्रेम की वार्ता करत हैं हे मधुमंगल जदपि श्री वृंदावन परम सुंदर हे फल फूल सों परमसुंदर अलौकिक सोभा रूप हे सुगंध सो दिसा छाय रही है परन्तु श्रीराधा जी विना मोकों कछु सुहात नाहीं। तू मरो मित्र है ताते तोसों कहत हों। तू अेसो उपाय विचारि के

करो जो श्रीराधाजी इहां कोई प्रकार सो आवे । यह जब श्री कृष्ण ने कही तब मधुमंगल श्रीराधाजी के दर्शन कौ चल्यो सो थोरी सी चलकर तब दूरिते देखे तो श्री राधा जी ललिता मुरली हाथ लीये आवत हैं। जदपि मधुमंगल परम चतुर है परन्तु सुबल कों और वृंदादेवी को भेष पहिचान्यो नाहीं । यही जान्यो जो श्री राधाजी ललिता के संग आवत हैं सो देख मधुमंगल पुकारि कें श्रीकृष्णजी सों कह्यौ हे व्रजराज कुवर हमकौ कछु वधाई देहु । जाको तुम ध्यान करत हुते ते आईं । तब श्रीकृष्ण मन में प्रसन्न होइ आगे आइकें देखे तो वृक्ष की लतान के मध्य में श्री राधा जी आगे मुरली हाथ में लिए आवत हैं। पाछे पाछे ललिता आवत हैं। तब श्रीकृष्ण अपने कंठ की माला महा सुगंध महित मधुमंगल के कंठ में पहिरायो और मधुमंगल कौ हाथ पकरि कैं श्रीराधाजू के सन्मुख चले। जब श्री कृष्ण ने कही अरी ललिता तू राधा जी के आगे आगे क्यों आई एक तो मेरी मुरली राधा चुराय ले गई तबतें श्रीराधा बिना मोकों छण जुग समान बीतत है । मोको इहां राधा जी बिना कछु सुहात नाहीं सो तू बड़ी निठुर है । मेरी खबर हू न लीनी। इतनी बेर लों तू राधा कों कहां खेल में लगाय राख्यो । तब ललिता जू रूप वृंदा सखी बोली हे नंदरायकुमार तुमतो अनेक गोपिन को परस करत हो ताते मेरी सखी राधा परस मति करो अपुनि गाय जाय के चरावो। तब श्रीकृष्णजी ने कह्यौ श्रीराधा मेरी मुरली चुराय के ले गई तापर तुम मोकों छुवन कों वरजत हो में तो अब तुमारो रोकों रहूंगो नाहीं में श्री राधा जी कों अलिंगन दे अपनी मुरल लेहुगो तब मेरे अंग सगरे सीतल होइंगे । यह कहि श्रीकृष्ण श्रीराधाजी के सन्मुख मुरली लेन कों दौरे। तब ललिता रूप

बृंदा सुवलरूप राधा सों बोली यही मुरली मेरी प्राण प्यारी है हे राधे तुम डार देहु। काहे तें चोर की वस्तु राखकें अपने हूं को चोर कहाइहे। और यह मुरली हू हमारे मन कों चुरावति है। और श्रीकृष्ण की माधुरी मूरति हू हमारे मन कों चुरावति है। तातें मुरली हू चोर श्रीकृष्ण हूं चोर सो दोउ चोर एकठे रहे सो करो। तातें तुम या छलिया की मुरली वेगी डार देहु। यह सुनत ही श्री राधा जी वेस सुवल ने ये मुरली उठाय लीनी अरु नेत्रन सों लगाय हृदय सों लगाय कै कहे मुरली तेरो बड़ो भाग है श्री राधा जी के अधरन पर हस्त में हो आई है तातें अब तेरे ऊपर मेरी प्रीति बहुत है। मैं अब तोकों छनक न छोड़ौगो बहुत बेर की बिछुरी प्यारी मुरली में पाई तब श्री कृष्ण ने मधुमंगल तैं कह्यौ यह मुरली राधाजी के अधरामृत सों मिलिके आइ है। ताते तुम कहो तो मेंहु अपने अधरन पर धरके बजाऊ। तब मधुमंगल नें कही बल जाव मित्र वेगे ही बजाय सगरे बन में रस की वर्षा करो। तब श्रीकृष्ण मुरली अधर धर के ऊचे स्वर सों बजाई सो गाय जहां तहां दूर निकट से गई हतीं सो मुरली धुनि सुनि कर्ण उठाय पूछ उठाय कें जहां तहां दौरी सो जहां श्रीकृष्ण वेणुनाद करत हुते तहां चारौं ओर घेर कें ठाढी भईं थनन सों प्रेम करि करि दूध की धारा चली। श्रीकृष्ण के सन्मुख चन्द्र की ओर देखि चित्रवत् ठाढी रहीं। इतने में सारंगी नाम श्री राधा जू की बहिन वृषभान के बड़े भाई महाभानु की बेटी सो श्री राधा जी सो बरस दिन छोटी सो सारंगी खेलत खेलत तहां आई। सो चारों ओर देखें। तो कदंब के वृछ के नीचे श्रीराधा भेष ललिता भेष देखकें मन में कह्यौ इहां राधा ललिता क्यों आईं तब दौरि कै सारंगी राधा भेष पास गई। श्रीराधा के भेष सों कह्यौ अरी राधा तेरी मैया

कीरत नें तेरो सिंगार कर मुखरा के संग गोवर्द्धन पूजन कों और गोरी पूजन कौं पठायो हुतो सो यहां यह ढीठ ललिता छल करि ले आई। अब में जाय मुखरा ते कहौगी तो तेरो कहा हवाल मुखरा करैगी। देवी की पूजाहू छोडी इहांकों आई। यह नंद को बेटा सबके मन कों लूटत है। सो तू श्रीकृष्ण के बस परेगी तो कबहुं इनते छूटेगी नाहीं या सारंगी के बचन सुनत ही श्री राधा बेस सुबल बोल्यौ अरी सारंगा तू इहां हूँ मोकों खिझाइवे कों आई बेगी जा श्रीकृष्ण रूप नहर के मुख में परि। यह सारंगी सुनत ही रोवत घर कों भाजी जहां सब वृद्ध गोपी जन के जूथ में मुखरा बैठी हती तहां जाय पुकारि कें कह्यौ अरी मैया मुखरा राधा ललिता या कदंब के तरे श्रीकृष्ण के पास ठाढी हैं और श्रीकृष्ण से हास्य विनोद करत हैं। सो में तहां खेलत खेलत गई सो में बरज्यौ जो कृष्ण पास तू मति ठाडी रहे। यह सुनकें मेरे ऊपर राधा नें क्रोध करि कें कह्यौ जो तुमहु कृष्ण बाघ के मुख में पर। तब में डरपि कें भाजी तोपें आई हों। यह सुनत ही मुखरा तो क्रोध में भरि उठि ठाढी भई सो सारंगी सों कह्यो बेटा बेग मोकों चलिकै दिखाय दै। तब सारंगी कों संग लै मुखरा कदम खंडी में आई। सो देषे तो श्रीकृष्ण सगरी गायन के जूथ में ठाढे हैं। कदंब तरे सखान सहित मुरली बजावत हैं और श्रीकृष्ण के आगे राधा राधा ललिता हसत हैं।सो मुखरा भेख तो जान्यौ नाहीं दौरि कै राधा भेष की बाह पकरि ललिता सों कह्यौ अरी पर घर घालन हारी कुटिल तू श्रीकृष्ण सों मन लगायो है। मोको खबर है मेरी बात ब्रज में कोऊ सांची मानत नाहीं। आज दोऊन को पकरिकै वृद्ध गोपीन के जूथ में ले जाय सब सौं कहोंगी। यह कहि दोऊ की बांह पकरि कें ले चली। तब श्रीकृष्ण डरपें

मधुमंगल सों कह्यौ मन में तो जानत है जो राधा नाही सुवल है मुखरा झूठी परेंगी। ऊपर ते डरप के कहै भैया मधुमंगल यह मुखरा बुढिया कहा जानि केसी करेगी तू साथ जा मेरी प्राण-प्यारी राधा के समाचार ले आईयो जा प्रकार राधा दुख न पावे सो करियो। मैं इहांताईं ठाढो जव तू आयके सव समाचार कहेगो तव मनमे चैन होयगो। तव मधु-मंगल मुखरा के पाछे पाछे चल्यौ सब खबर लाकर सुनायो कि-"सो मुखरा दोऊ कों पकरि भुजा जहा वृद्ध गोपी के जूथ सव मिलि के बैठे हे जाय क्रोध करि जूथ झूठ मानत हती। कालही तो मैं राधा के हाथ सो मुरली श्रीकृष्ण की छीन लीनी। मैं तुमसो कह्यौ सो झूठ मानी। आजु देखो अवही नंद को वे ढीठ ताके पास ठाढी राधा ललिता हसत हती सो मैं पकरि ल्याई हों यह सुनि सगरी वृद्ध गोपी चक्रित भईं। कीरतिजी के मन में रंचक क्रोध चढ्यौ तव पूर्णमासीजी राधा को मुख उघारयौ सो सुवल सखा ह्वै गयै। औ ललिता मुख उघारयौ सो वृन्दादेयी ह्वै गई। तव जितनी वृद्ध गोपी प्रमानिक वैठी हती सो और कीरत जी प्रसन्न भई। कहे मुखरा तू मेरी राधा कों झूठे ही दोष लगावत हैं। यह कौन को पकरि ल्याई। तू आखसों आंधरी भई निलज होइ कलक की वात राधा सों कहत हों तेरो मुख देखनो उचित नहीं या प्रकार कीरति जी मुखरा सों क्रोध करिकै कह्यौ। इतने में ललिता विशाखा राधा जी कौ गोवर्द्धन पुजाय देवी पुजाय ले आई तव कीरत जी गोद में ले मुखरा सौं कहे मेरी वेटी भोरी कछु लौकिक जानत नाहीं। तू कौन कौ पकरि ल्याई जा मेरे आगे तें टर जावतह कह्यौ तव प्रमानिक वृद्ध गोपी वहुती तिनकौं क्रोध चढ्यौ सो मुखरा कौ मुट्ठी मांह वाह पकरि घर के वाहर जाय धका दियो सो मारग हि वीच गिर परी। इतनें में श्री चंद्रावली सखीन

सहित और नवकिशोरी आई। तव मुखरा वोली वेटी चंद्रावली जी आजु मोको वृद्धगोपीन ने वहुत मारो राधा कृष्ण सों लागी है सो मैं जानत हौं और कोई नाहीं जानत सो मोकों झूठी करि सवनें मारयौ। तव श्री चन्द्रावली जी ने सव नौकिसोरि सों कह्यौ यानै राधा की बहुत निंदा करी है और सव नौकिसोरी कों श्रीकृष्ण के मिलन में प्रतिबंध रूप है सो आजु तुम्हारो दाव परयौ है या मन पावौ सो करौ। आजु याकी पुकार कोई न सुनेगो तव सवरी नवकिसोरी चन्द्रावलीजी मिलि मुखरा की चोटी पकरि लीयो कोई ने सगरे कपरा फारे कोई ने मुख में मारयौ कोउ ने आभूषन उतार के फेंक चलायो। पाछे मुखरा के हाथ पाव वांध गरे सों वांध चन्द्रावली जी कहे अब इहां ते भजो मारग कौ वीच है कोइ आय देखेगौ। मुखरा कौ बंधी छोड़ि सव नौकिशोरी सहित श्री चन्द्रावली जी कीरत जी पास आई कीरत जी के चर्ण परस कीयो कीरत जी आसीर्वाद दीयो तुम्हारो सुहाग अखंड होउ। या प्रकार सव वृध गोपिनें आसीर्वाद दीयो। इतने मुखरा की वहिन सुमुद्रा आय तहा मुखरा कौ देखि हाय हाय करि वंधन छोरयौ कह्यौ यह दसा कोंने कीयो। तव मुखरा लजाय के कह्यौ मोंको मेरे घर पहुचाय देहु। तव सुमुद्रा घर ले गई। तब मुखरा ने कह्यौ चन्द्रावली आदि नौकिसोरी मोकौं मारयौ वाध्यौ। परंतु तौ मेरौ नाम मुखरा जो कोई दिन श्रीकृष्ण के संग विहरत में पकरोंगी। तव सुमुद्रा ने कही मुखरा या प्रकार काहु की वहु वेटी कों कंलक न लगाइये। तव मुखरा नें कही तू कौन सी भूली मनुष्य है तू हूँ कृष्ण सों मिली है। तव सुमुद्रा ने कही मै भूली जो वंधन छोरी घर में ल्याई। इह कही सुमुद्रा हूँ श्री चन्द्रावली जी पास आई तब उहां पूर्णमासी जी कीरत जी आदि सव वृद्ध गोपी सों कह्यौ मेरी

बात सुनकें सत्य मानियो यह श्रीराधा सब की पूज्य है। जो श्री राधाजी की ओर विषम बुद्धि देखेगो तथा कोऊ राधा की निंदा करेगो सो सौ जन्म तक नर्कमें गिरेगो। राधाजी की वडाई सवने करी मुखरा की निंदा भई। पाछे पूर्णमासीजी सब को समझायो जो राधा में दोष बुधि कबहु मति करियो राधा सबकी पूज्य है। तब सब प्रसन्न ह्वै घर गईं। वृन्दादेवी अपनी परनकुटी में गई। श्रीराधा ललिता विशाखा गोवर्द्धन की पूजा करि कीरति जा पास आई" तब में तुम्हारे पास आनंद में नाचत कूदत आयो परतु या बात कों मोकों आश्चर्य है। यह लीला कौन भांत भई जो राधा को सुवल भयो ललिता की वृन्दादेवी भई सो कहो तुमकौं कछु भेद की खबर हे तब श्रीकृष्ण मधुमंगल सों कहे भैया मधुमंगल यह लीलाको रहस्य में तुम सों कहत हौं तुम मन लगाय कें सुनो। श्री राधा जी कों कीरत जी ले जाय सिंगार करो गोवर्द्धन गौरी की पूजा कौ पठायो। मैं श्री राधा विना विरह सों व्याकुल हतो सो मोको दुखी जान मोको दुखसे उद्धार एवं सुख देवे के लिए यह कौतुक वृन्दादेवी ने कीयो। सुवल सखा मेरी राधा अनुहार है सो राधा को भेष कीयो और वृन्दादेवी ललिता कौ भेष कर मेरे पास आय मोकों सुख दीयो तब मधुमंगल ने कही वृन्दा परम चतुर है यह लीला उनहीं सों बनैं या प्रकार कदमखंडी में श्रीकृष्ण मधुमंगल सों बात करत है। यहां चन्द्रावली जी कीरति जी सों कह्यौ गोवर्द्धन और गौरी की पूजा कर आऐ। अब श्री यमुना जी की पूजा करनी है सो अपनी बेटी कौ संग देहि तौ जाहि। तब कीरत जी ललिता विसाखा के संग श्री राधा जी करि दीयो। तब श्री चन्द्रावली जी राधा ललिता विशाखा सगरी श्रीकृष्ण लीला गान करत आयके जमुना जी को पूजा कर यह वर मांगो सब

नें जो श्रीकृष्ण हमारे पति होइ। यह कहि पाछे सगरी गोपी सहित राधा जी कदमखंडी में आई। तब श्रीकृष्ण दूरितें श्री राधा जी कों आवत देख दौरि कै जाय मिले बड़ा वेर सों देखत हते सो मिलके अंग सीतल करे परस्पर गलवांही दे कदंवखंडी के कुंज में आए तव श्री चन्द्रावली जी आदि सखी सव गोपी सेन में श्री ठाकुर जी कों कह्यौ हमारे मनोरथ पूर्ण कव करोगे तव श्री ठाकुर जी ने कही तुम अपुनी अपुनी कुंजन में जाव में आयो तव सगरी गोपी अपुनी अपुनी कुंजन में गईं। श्री चन्द्रावली अपुनी कुंज में गई श्री ठाकुर जी अनेक रूप करि सव गोपी जन के कुंज में पधारे सव कें मनोरथ पूर्ण किये। सुंदरकुंज में श्री ठाकुर जी और श्री राधा जी कदम की डार पकरे ठाढी हैं। मेह आयो तव श्री राधा जी ने कही अपनी कामर मोकों ओढ़ायवो मेरी नौतन सारी है। तव श्री कृष्ण कामर ओढायो। या कीर्तन के भाव सों जाननो:—

(राग मलार)

देषौ माई कुंज कुटी के द्वार।
ठाढे हैं गिरधर संग राधा गहे कदंव की डार ॥ १
वड़ी वड़ी वुंदन वरखन लाग्यौ तव प्यारी सुसकानी।
अपनी कामर मोको उढावो नौतन सारी आनी ॥ २
सुनत वचन मोहन कर अपुने कामर तुरत उठायो।
रसिक प्रीतम यह सोभा निरखत सखिन वन मंगल गायो॥३

या प्रकार श्री कृष्ण कमरिया ओढाय कैं कहैं श्री राधा जी सो मेरी कामर न होती तो तुम्हारी साड़ी भीजती। तव श्री राधा जी ने कह्यौ कामर उतार के दूर धरो हम तुम दोऊ भीजे देखे को हारे। तव मोहनलाल हसि के कामर दूर धरि दीयो भीजन लागे दोऊ। या कीरतन के भाव तें जाननो :—

(राग मलार)

देखो माई भीजत रसभरे दोऊ ।
नंदनंदन वृषभान नंदिनी होड़ परी है जोऊ ॥ १
सुरंग चुंदरी राधा जू की भीज्यौ हे रस भारी ।
गिरधर पाग उपरना भीज्यौ यह छवि ऊपर वारी ॥२
वात ही वात होड़ परी भारी ललितादिक समुझावें ।
दोऊ झगरत मानत नाही एकों सखि मिलि वुंद वचावें ॥३
तव मोहन ही हारे सिर नायो हसी सकल व्रजनारी ।
रसिक प्रीतम यह लीला निरखत तन की दसा विसारी॥४

या प्रकार भीजे तव दोऊ कों सीत लगो सो कुंज महल के भीतर पधारि भीजे वस्त्र उतारि सुंदर सूखे वस्त्र पहरि नाना प्रकार की कोटिन कोक कला रीति विपरीत विहार कीये । पाछे सिंगार कीये । तव श्री राधा जी नें श्रीकृष्ण सों कही वडी वेर भई हैं मैया कीरत जी खीझेगी । तव श्रीराधा ललिता विशाखा के संग वरसानें गई । कीरत जी नें नाना प्रकार की सामग्री करि श्री राधा जी कौं पैडो देखत हुतीं इतने में श्री राधाजी आईं । तव कीरत जी दौरि कै गोद में ले कहे वेटी प्राण प्रिय इतनी वेर यमुना पूजन में लगायो । मैं कवकी तुम्हारो मारग देखत हो रसोई करी है । तव श्रीराधाजी कहे मैया यमुना पूजा करत मेंह वरष्यौ सो कात्याइनी देवी के मंदिर में ललिता विसाखा ले गईं सो अव वूंद थमी सो मैं दोरि आई । तव श्री राधा जी को मुख चूमकरत माता सखिन सहित श्री राधा जी कों भोजन करायौ ॥ इहां कदंमकुंज में तें श्रीराधा चंद्रावली जी आदि गोपी अपुने अपुने घर गई । तव मधुमंगल ने श्रीकृष्ण सों कह्यौ भैया भूख लागी है औ मेह उनेदौ आयौ है तातें वैगै घर निकसि चलो तो नंदीश्वर

जाहि जसोदा जी के हस्त सों भोजन करें तव श्रीकृष्ण सगरी गाय मुरली वजाय बुलाय कें घेर कें श्री वलदेव जी सखान सहित चले सो घर आये। जसोदा जी द्वार पर आयकें आरती कर भीतर ले गई । नाना प्रकार के भोजन सखा वलदेव जी सहित श्रीकृष्ण कौं करायो।

॥ इति श्री वृंदावनलीला वरसाविहारनाम
त्रितीय प्रसंग ॥

घर में श्री यशोदा जी नाना प्रकार के पकवान, खीर, दार, भात, साग, विलसारु, सिखरन, सधाना, कचरिया, वडि, पापर, पूरी-कचौरी षटरस विंजन सीध करि अपुने पुत्र श्रीकृष्ण को गोद में ले वार वार वलैया लेकै अपुने अंचल सो मुखार-विंद की रज झारि कें छाती सों लगाय मुखरांचव उवटना लगाय ताते जल सो अस्नान कराय अंग वस्त्र करि सूक्ष्म सिंगार करि सखा सहित वलदेवजी कृष्ण कों प्रीति पूवक भोजन कराय सखान कों वीडा दे विदा कीये। कहे कल प्रात काल वेगे आइयो में तुम पर बहुत प्रसन्न हों मेरे पुत्र को तुम नीकी भांति राखत हो खेलावत हो तातें मोकों म्हारे सखा प्राणहु ते प्रिय हो। यह कहि सखान की विदा कीये पाछे। वलदेवजी कों जुदे ठिकानो ह्वै तहां श्री वलदेव जी कौ पौढायो पाछे जसोदा जी श्री कृष्ण कों संग लेकें सेज्या पर पौढी नाना प्रकार की कहानी कही पुत्र को पोढ़ायो जव जाने पुत्र को नींद आई तव जसोदा जी सोरह हजार गोप कुमारी कों घर में हेरयो अंतर भक्त हैं तिनकौं सोकें कह्यौ मेरौ पुत्र व्यारू आछी भांति नांही कीयो हे सो रात्रि के जागतो नाना प्रकार की सामग्री धरी है सो अरोगाइयो। या प्रकार कहि अपुने ठिकाने जसोदा

जी जाय कें पौढी। या प्रकार आनंद में पौढे रात्रि कौ बिहार हे सो रसिक जन अपुने हृदय में अनुभव करत हैं सो कह्यौ न जाय पाछे प्रातकाल भयो। तब सगरे सखा गोंप जागे सो अपुने घर तें उठि उठि कें नंद राय जी के द्वार पर आय श्रीकृष्ण की लीला को गुणगान करन लागे। जसोदा जी भोर भयो जानि श्रीकृष्ण कों वहुत जगाये परंतु जागि के पौढि रहे। तव गोपी घर घर तें सामग्री लैकें आई तव श्री राधाजी ने जगायो पाछे मंगला भोग धरयौ। मंगला भोग आरोगाय पाछे सुंदर सिंगार कीये। तव श्री कृष्ण लकुटी और मुरली हाथ में लें सखान कें मंडल में वलदेव जी सहित आये। गोपिन सों समस्यामे कहे हम आज सांकरी खोर जायेंगे तहां तुम दही वेचन के मिस आइयो तहां नाना प्रकार की लीला करेंगे। यह कहि गाय सव वृषभान पुरी की ओर हांक सखान के संग नाचत गावत चले सो साकरी खोर के परवत पर जायकें ठाढे भए। आस पास सव सखा भांति भांति के रंग विरंगे वस्त्र आभूषण पहिरे ठाढे हैं। तब श्रीठाकुरजी गोपी-जन को बुलायवेके लीए गायन की गिनती के मिस सखा सो वोले हे सखा श्रीदामा सुवल मैं गायन को नाम ले लेके मुरली में सव गाय वुलावत हों। तुम सगरी गाय गिन सजैयो। आजु हमारे नंदवावा के घर वडो महोत्सव है। सगरे गोप गोपी को न्यौतो कीयो है सो दूध गौरस वहुत चहिए। सो गाय एकठी करि गोदोहन करि दूध नंदराय जी के हां पठावेंगे। और वरसानें की गोपी सिंगार करि के दही वेचन कौ आवेंगी सो उन सगरी गोपी कौ तुम दान के मिस यह सांकरी खोर मैं रोकियो। यह मतो श्रीकृष्ण ने सखान सों कीयो। पाछे साकर खोर पर ठाढे होइ मुरली की धुनि ऊंचे स्वर सों कीयो।

श्री राधाजी कौ ध्यान मन में लागि रह्यौ है जो कब आवेंगी। तब मुरली की धुनि सुनि सगरी गाय पूछ उठाय कर्ण ऊंचे करि दौरी सो श्रीकृष्ण के चारों ओर आय कें ठाढी होइ श्रीकृष्ण के मुख चंद्र की ओर सब एक टक देख रही प्रेम सों विह्वल भई। और वरसाने में सगरी गोपी मुरली की धुनि सुनत नाना प्रकार के सिंगार सोने के अनेक रतन के कीए,केती श्रीकृष्ण को सुमरन करत हती सो दही मटुकी रतन जड़ी इडुंरी पर धरि लेके श्री राधा जू श्री चन्द्रावली जी, ललिता, विशाखा, चंद्रभगा, संझावली, स्यामा, भामां, कामा, चंपकलता आदि सगरी गोरस वेचन के मिस चली मन में यही मनोरथ जो कब श्रीकृष्ण को दर्शन होइ। और आजु सुंदर मीठो दही नंद कों वेटा श्रीकृष्ण ताको आरोगाय जन्म सुफल करि जाने श्री कृष्ण के संग नाना प्रकार के खेल खेलि या प्रकार विचार करत श्री कृष्णलीला गान करत श्रीराधा जू कों आगें करि जहां श्री कृष्ण साकरी खोर पर ठाढ़े हुते तिनके सामुझ चली तब दूर तें कंकन किंकिनि नूपुर आदि के सुंदर धुनि सुनि श्रीकृष्ण श्रवण लगाय एकाग्र मन करि सुनन लागे अपुनी मुरली को गान करन भूल गये। तब श्री कृष्ण सखान सों वोले हे सुवल श्रीदामा मधुमंगल यह रस लीला कौ प्रेम ब्रह्मादिकन कौ दुर्ल्लभ हैं जो रस व्रज वासिन कों दीयो ताते तुम सगरे सखा मिलि कें नेंकु आगे ठाढे होइ कें सगरी गोपी कों दान के मिस रोकियो। आजु तुमहुं कौं दही दूध सों भली भांति सों अघाय कें आरोगियों। तब सगरे सखा सुंदर लाल छरी लेकें ठाढे भये। मारग सगरो रोक लीयो। इतने में सगरी गोपी निकट आई तब सगरी गोपिन कों सखा घेरि कें कहे गोपाल की दुहाई है गोपाल को दान दे कै आगे जान पावोगी

तव श्रीराधा जी डरपि के ललिता के पाछे जायके छिपी तव श्रीराधा जी ने ललिता सौं कह्यौ अरी ललिता यह गहवर वन हे वायें दाहिने कोउ मनुष्य नाही तातें कोऊ और मारग पावे सो निकस भाजो । अव तो साकरी खोर में सवन को सखान ने घेरचौ । मेरी माता पिता सुनेगी तो खिझेगी में डरपति हों। तव ललिता ने कही हे राधा तुम काहे के धिराये धिरो नाही और मैं तुम्हारे संग हों सो तुम डरपौ मतो या प्रकार श्री राधा जीं कौ समाधान करि ललिता विशाखा सगरे सखान के सन्मुख आय ढाढी भई। उहां श्री ठाकुर जी हाथ में मुरली लकुटी लिये मोरपछ को मुकुट अमोलक नग लगे हे सो कोटि चंद्र सूर्य की कांति को हरत हैं पीतांवर के छोर दोऊ ओर फरकत हैं मानो घन के दोऊ दिसि सौदामिनी चमकत है या प्रकार कीरति सोभा की माह मंद मंद हास्य करत श्री राधाजी की ओर कुटिल कटाछ चलावत ललिता विशाखा के पास आय कहं हमारो दान इहां घाटी पर लगत हे सो तुम सों कई वेर दान मारि गई हो सो आजु वावा नंदराय की दुहाई है सव दिन को दान चुकाय के जान देहोंगो । यह सुनि ललिता ने कही हे नंद के लाला तुम दान हम पै कौन वात मांगत हौ। हम कछु लौंग, सुपारी, जायफल केरा नातो लादे नाहीं हैं दान कौन सी वस्तु कौ देहु और गोरस दूध दही को दान तो आजु ताईं सुनो नाहीं। तुम नये दानी प्रगट भये मन में अपुने कों राजा मानत हौ इतनी ठकुराई कौन पै जनावत हौ । तुम तो वही कृष्ण हो तनक सो दही जसोदा जी को भूंम पर डारचौ तव जसोदा जी नें तुमकौ ऊखल सौं वांधो हतो सो हम सगरी कौतुक देख हसत हती। अव तुम ऐसे ढीठ भये जो वृषभान जू सगरे वृज के राए ताकी कुमारी लाडिली श्री राधा जी कौं

वन में रोकि कें दान मांगत हो। परन्तु तुम सांचे हो हमारी टहल वालपने में करते रंच माखन के लीये नाचते अव तनक बड़े भये सो इतराय चले हो । यह कहि श्री राधा की वाह गहि ललिता नें कही अपुने घर फिर चलो । तव श्रीकृष्ण ने कही भैया मधुमंगल ये गोपी हमारे वन के फूल वहुत तोर ले जाती ताके वदले इनको मोती को हार वेगे ले लेहु और लाल फूल के वदले इनके सब आभूषन ले लेहु । इननें लीयो हमारो दिन दिन को दान मारि गई तातें इनको छोड़ो मति । तव विसाखा वोली अहो ढीठ ग्वालिया जेसे तुम ठाकुर हो तैसे हम जानत हैं : यह सुनत ही श्रीकृष्ण दौरि कै राधा जी कौ अंचल पकरयौ । श्री राधा जी के मुखारविंद की ओर देखन लागे । तव श्री राधा जी नेत्र कटाछ करि श्री कृष्ण के मनकों मोहि लिये । काम भाव सो विवस भये । सो ललिता ने देष्यौ जो श्रीकृष्ण की दसा मोहित भई है वह जानि हसिके ललिता वोली अहो नंद के दुलारे छैल तुम तो मोहन हो सवके मन को मोहित करो हो सो तुमहुं मोहित भये । यह वड़ो आश्चर्य है । और अवही तो तुम्हारी मसहुं भीजी नाहीं है ताते रंच लजा तो गहौ । यह सुनि श्रीकृष्ण हसि के ललिता सों कह्यौ अव तो हमसो तुमसो विगरी । तव ललिता ने कही तुमसो हमसों कहा विगरे । तुम ग्वालिया हमारे वृषभान के आश्रित रहे हौ व्रज में नंदराय जी वृषभान राय जी वड़ी कान राखत हैं सो तुम वालक हो तातें इतनी सहत हैं नाहीं तौ हमसौं कौन वोल सके । यह सुनि श्रीकृष्ण रंच क्रोध करि टेढी भृकुटी सों ग्वालन की ओर देखिकें कह्यौ देखौ या वन के हम राजा है । हमसों ये वरसाने की गोपी ललिता भौह सकोरि कैं वोली ठोली डारत हैं सो भली नाहीं । तव ललिता भौह सकटाय के वोली ऐसी

ठकुराई जो बनावत हो मानों कोई तुम्हारी कोई लौंडी हैं। तब श्रीकृष्ण ने कही आजु तुम वर्चिकै जाव तौ वरसाने वधाई बांटियो अब तौ मेरे फंदे में क्यौहू आइ हौ। तब विसाखा जी हँसिकै कह्यौ तनक फूलन के लिए श्रीकृष्ण तुम इतनी रार मचाई है। तब चंद्रभागा हसि कें कह्यौ हे श्रीकृष्ण तुम अचरा पकरे हो मुख की ओर चितवत हो परंतु जानत हो जो ये कौंन हैं। ये वृष भान गोप की बेटी है। सगरे ब्रज में श्रेष्ठ जैसे वृषभान जी हैं राजा तैसेई सगरे ब्रज की सुंदरी गोपिन में ये श्रेष्ठ हैं। इनकी बरावर और कोऊ नाही है तुम नंदराय चार गांव के जिमीदार हो कछु राजा नाही। दस गाय अधिक भई तासों इतराय कें इतनी ढिठाई श्री राधा जी के आगे मति करो। तब श्री चन्द्रावली जी चमकि कैं आय हाथ श्रीकृष्ण को पकरि कै कह्यौ तुम दान कैसे लेहुगे सूधी दृष्टि तो करौ दांन पीछे लीजो। तब श्रीकृष्ण ने श्री चंदावली जी के कंठ को मोती को हार पकर्‌यौ उर को परस कर्‌यौ और कह्यौ ये मोती हमारो तुम कहां पायो मैं बहुत दिन तें ढूंढत हतो जो मेरौ मोती की माला कौन ले गयौ। तब श्री चन्द्रावली जी उरके परसे प्रेम में विह्वल भई सो लाज छोडि श्री कृष्ण कों हृदय में गाढे दावि कैं कहे माला कैसी है मैं ऐसे गज मुक्ता लगे हे जो एक मोती ऐसे नंदराय जी के घर में कहू निकसो नाही और यह कुंडल में मोती लटकत है सो हमारो है या मिसि कपोल श्री ठाकुर जी के दोऊ हस्त सों दोऊ पर किये तब श्रीकृष्ण ने कही यह नक बेसर तो में तुमको बनवाय दीयो या प्रकार मिस करि श्री ठाकुर जी नें श्री चन्द्रावली जी के कपोल परस किये। तब श्री चन्द्रा जी भ्रकुटी चढ़ाय क्रोध करि कुटिल कटाछ रूप बान चलाय वचन कहे तुम वन वन में गाय चरावन

हारे ग्वालिया छाक के खान हारे तुम पराई वहु वेटी कों वन मैं घेरत हो सो मथुरा में कंस वसत है सो सुनेंगो तो कैसी करेंगे। यह सुनि श्रीकृष्ण ने कही सुनो चन्द्रावली कंस तौ मरि रह्यौ वाकौ कहा सामर्थ है और अवतौ मैं इहां सवन को वन में लूट लेहुंगो पाछे तुम कंस पें पुकार करियो तव श्री चन्द्रावली जी नें कह्यौ तुम ऐसी वात इहां गढ़ गढ़ कें करत हो परंतु आधी रात के कंस के डर सों भाजे तव कंत वस कंस को क्यौं न मारे तुम लूट को नाम इहां वन में लेत हो जो एक एक नग आंभूषण में ऐसे लगे है जो नंदराय जी की ताको दाम ले न सकेगे तुम्हारे सगरे घर कों गायन कों मोल एक नग में हूं पूरी न परेगी तव श्रीकृष्ण कहे तुम्हारे सगरे नग मेरी गुंजा माला की एक मनका की होड न करे या भरोसे मति रहियो। यह गुंजा व्रज में उपज्यौ है याके आगे आभूषण कों कोंन पूछत है। यह कहि श्रीकृष्ण पाछे श्री चन्द्रावली जी के सिर पर सों दही की मटुकी उतारि कहे झगड़तो भारी भयो कह जानिये कव दान चुकेगो तहां ताईं माथे पर मटुकी को भार काहे कों लियें रहो। यह प्रेम चन्द्रावली जी देखि मटुकी में हाथ डारिकें सुंदर सुंदर ऊपर की मलाई सहित दही श्री ठाकुर जी कों अपुने हाथ सों पवायो। तव श्री ठाकुर जी जाय दौरि कै श्री राधा जी कों अंचल पकरि कहे चन्द्रावली को दही तो वहुत मिष्ट है परंतु देखिए तुम्हारो दही कैसो है। तव ललिता हसिकें वोली हमारी प्यारी राधा को दही या प्रकार मिलेगो नाहीं राधा के आगे नित करो सगरे सखा गान करो तुम मुरली में राधा नाम टेर ले कहो वृषभान दुलारी जीती हैं मैं हारयौ तव तुमकों मन मान्यो दही मिलै। नाहीं तो नख भर हूं अल्यौकिक दह्यौ नाहीं। तव श्री ठाकुर जी पीतांवर

की गाती बांध लकुटी हाथ में लै निर्त करन लागे । ललिता विशाखा तारी बजावन लागी सखा सुबल श्रीदाम मधुमंगल सुर भरन लागे श्री ठाकुरजी मुरली की टेक में कहन लागे श्री वृषभान नंदिनी जीती राधा जीती मैं हार्यौ । या प्रकार प्रेम सों श्रीठाकुरजी को निर्त देखिके बृह्मादिक सिवादिक इन्द्रादिक जै जै सब्द कहि फूलन की वरषा कर कहे धन्य धन्य बृज धन्य वृन्दावन धन्य गोपी धन्य ग्वाल धन्य बृज को दही धन्य ब्रज को प्रेम जहां साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम रंचक दही के लिए निर्त करत हैं । जो भगवान कृपा करिके दान देहि तो हम ब्रज वृंदावन की लता गुल्म वेली होइ सो ऐसो भाग हमारो कहां यह कहि मोहित भये देवांगना सहित । श्री ठाकुरजी को नित देखि श्री राधा जी प्रसन्न होइ अपुने हाथ सो दही सुंदर मीठो श्री ठाकुर जी कूं आरोगायो । पाछे श्री ठाकुर जी सगरी गोपी की मटुकिया में हाथ डारि रंच रंच सबको चाख्यौ पाछे दौरि कै आय श्री राधा जी कों आंचल पकर्यौ और कह्यौ दही को दान तो हम भर पायो परन्तु अंग अंग को दान हमारो है सो देहु सो सुनि श्री राधा जी डरपि के अंचल छोडाय श्री ललिता जी के पीछे जाय छिपी कह्यो ललिता यह नंद को बेटा कैसो ढीठ है अंग अंग को दान मागत है तू ऐसी सांकरी घाटी में क्यों आई के फसी । सगरी गोपी हसेंगी चंद्रावली पास है सगरी हसेंगी । एक तो सगरे ब्रज में मोको गोपी श्री कृष्ण सों लगाय के गारी देत हैं आजु वात सब प्रगट होइगी तब ललिता हसि कै श्री राधा जी सों कह्यौ अहो प्राण प्यारी तुम डरपो मति ये सगरी गोपी सहित चन्द्रावली जी हूं सब या श्री कृष्ण सों लगि रही हैं । तातें ब्रज में कोई या रस को प्रगट न करेगो । या प्रकार श्री राधाजी कौ समा-

धान करि पाछे ललिता ने श्रीकृष्ण सों कहा तुम तो नंद राय के वेटा हो जैसैं नंदराय जी मर्याद में चलत हैं तेसा तुमहू चलो अंग अंग को दान मागत हो सो कहां सो तुम अंग अंग के भूषन वनवाय दीये हो जो ऐसी अनुचित वातें करत हो । तब श्रीकृष्ण वोले ललिता यह सगरी व्रज की गोपी है तिनके अंग अंग मन वनायो अपुने अंग सों । और यह अलौकिक आभरन हूं मैंने वनवाय दीयो है तातें में अपुने सुख के लिए सवन वनायो सो मै मांगत हौं सो तुम उह वात भूलि गई अपुनो अंजादिने देति नाहीं परंतु मैं अंग अंग को दान लिए विना इहां ते कहुं को जान न दहुगो । यह सुनिकें ललिता सगरी गोपिन सों कह्यो अपुना अपुनी मटुकी से चलो दही वेचन की वेरिया टर जायगी तो दही विकेगो नाहीं । यह नंदराय के ढोटा को तो कछु घर को काम काज परत नाहीं ठाले फिरत हैं ताते अनेक वात वनावत हैं । अपुनो तो घर में अनेक काम करनो है सो या धूंत ने वातन में अरुझाय राख्यौ है । यह ललिता के वचन सुनि गोपी सगरी उठी । तव श्री ठाकुर जी नें ललिता को अंचल पकरि हृदय पर हाथ धरि कह्यौ हे ललिता तू ही हमारो दान मेट्यो है । सवको मन दान देन में है परन्तु सवन कों चलने की कही सो सर्व गोपी उठी या भांति ललिताजी को उर को परस कीयो । तव ललिता प्रेम सों व्याकुल होइकैं बैठि गई । तव मधुमंगल कह्यो चन्द्रा वली तो और गांव की व्याही वरसाने आई है तू कछु अवही वरसाने की रीति समुझत नाही और यह श्रीकृष्ण के प्रभाउ को जानत नाही । ये व्रजराज जू वावा नंद और व्रजरानी मैया जसोदा जी को लाडलो वेटा है । अति उनमत व्रज वृंदावन में फिरत है । रसिक सिरोमनि है सो स्वतंत्र है । ब्रह्मा की

और वेद की मर्यादा हू कवहुं मानत हे कवहुं ना मानत है। सगरे देव याके आज्ञा करत है। सगरो व्रज याने अपुने वस करि राख्यौ है। पसु पंछी वृछ लता सगरो व्रज याकी आज्ञा में है सेवा करत है और तुम याकी अवज्ञा वहुत करी हो परन्तु यह सवके अंग अंग को दान लेवेगो। सो एक में तुमकों उपाउ वताऊँ मेरो कह्यौ करौ मोको दही खवावो तो में झगरो मिटाय देहुं। यह सुनिकें विसाखा हसिकें वोली अहो पांडो मधुमंगल तू ब्राह्मण है सो भूखो भयौ है तातैं वात वनावत है यह कहि एक चूलू दही हाथ में भरि कें मधु मंगल के मुख में मेलि कहे मधुमंगल तूतो हमारो है श्रीकृष्ण सो झगरो मिटावै तो भरपेट दही तोको हम खवामें। तव मधुमंगल दही चाख के नाचत कूदत चलो सो श्रीकृष्ण के पास आयो जहां राधा ललिता कों रोके ठाडे हते। श्री राधाजी के मुख चंद्र चकोर की नाई अवलोकन करि स्वरूपानंद को रसपान करि मत्त हते। तहां मधु मंगल आयकें श्रीकृष्ण सों कह्यौ अरे भैया वरसाने की गोपिन कों दही अनिवर्चनीय सवाद है। मैया जसोदा जी को गोरस अमृत समान मधुर है ताहू तें इनके गोरस में अधिक सवाद है ताते तुम इन गोपिन सों झगरो हठ मति करौ। ज्यों ज्यों हठ करोगे त्यों त्यों गोरस चाखन में ठील होत है। वहुत अवार लगावोगे तो गोरस को सवाद घटि कै खटो ह्वै जायगो मोकों विसाखा नें एक चुलू दही दीयो सो सवाद मेरो मन में लाग रह्यो है अव ऐसी उपाय विचारो जो तुमहुं गोरस भली भांति लेहु और हमहुं कों भली भांति पेट भरके खवावो। हमहूं तो भूखे हैं अवही जसोदा जी की छाक आई नाहीं यह सुनि श्री कृष्ण ने सगरी गोपिन कों पुकारि कैं कह्यौ सुनो व्रज की

सब सुंदरियाँ ब्राह्मण ने गोरस थोरो सो तुमसें पायो है सो गोरस पिवावो काहे ते अपने संग में यह ब्राह्मण है सो तुमको पुण्य वहुत होइगो। यह श्रीकृष्ण के वचन सुनिकैं गोपिन ने मधुमंगल कों भरपेट दही आरोगायो और श्रीकृष्ण कों सगरे सखा वलदेवजी कों हूं गोरस दूध आरोगायो। तव श्रीकृष्ण गोपिन सो कह्यौ आजु जसोदा जी की छाक अवही नाहीं आई और भूख तो सगरे सखान को लागी सो तुम भली करी जो तुम आज वेग ईहां आईं। यह सुनिके दस पांच सखी दौरि के वरसाने गईं सों नाना प्रकार की सामग्री ले आय श्रीराधा को और श्रीकृष्ण को एपनवारे में भोजन करायो और सखान को बांटि दीयो सो सखा सब वलदेव जी सहित खान पान करायो इतने में सुवल श्रीदामा जाय सगरी गाय घेर ल्यायो सो दुहि दुहि कें दूध पान करन लागे। तव ललिता नें श्रीराधा जी सों कह्यौ जो आजु तो सगरी सांकरी खोरि की घाटी में आय कें श्रीकृष्ण के पाले परी हैं सो अव इन सों रिस करि विगारिये तो सगरे सखा मिलि के सगरी गोपिन के वस्त्र-आभूषन उतारि लेहिंगे तो हमारी लज्जा जायेगी तव घर कैसे जायंगी तातैं आजु यह श्रीकृष्ण कहे सो करो। काल्ह तें यह मारग वचाय कै निकसैंगी। यह ललिता कहत ही श्रीकृष्ण श्रीराधा की भुजा पकरि उठाय कै परस्पर गलवाईं दैके गहवर वन के भीतर निकुंज में पधारे तव ललिता विसाखा पधारिकें पहिले ही कुसुमन सों सेज्या कुंज में वनाई श्री राधा जी सों कह्यौ विहार लीला की सारी सामग्री या कुंज में सिध है। तव श्री राधा जी ने ललिता विसाखा सों कह्यौ हे सखी में मुखरा ते वहुत डरपति हों कहूं यहां आय जाय तो रस में विरस करे। तव ललिता विसाखा ने कही प्यारी में तुम पर वलजाऊ।

पूर्णमासी जी और वृंदादेवी ऊंचे रुख पर चढ़ि कर वरसाने की ओर देखन लागीं जो कदाचित मुखरा आवेगी तो पूर्णमासी जी और वृंदा जी अटकाय राखेगी। अनेक उपाय करि तातें जहां तहां तें इ श्री कृष्ण को मनोरथ पूर्ण करो अपुने अंग अंग को ताप मिटावो तुम लीला करो सुखेन तहां ताई या वन में काहू को प्रवेश होइगे नाहीं। मुखरा को कहां कोई पसु पछी पुरुष भाव वारे निकट आय न सकेंगे और वा वन में के वांदर वाघ हाथी ऐसे हैं जो लीला के समय को गोप इहां आवें तो आयवे न पावें। ताते या वन के जीव समलीला संवंधी है तातें तुम चिंता छोडि निसंक लीला करो पर आनंद को अनुभव करो तब दोऊ जुगल सरूप हसत हसत सेज के ऊपर जायकें विराजे जहां सघन निकुंज के भीतर रतन खचित वंगला हे तहां ठौर ठौर अलौकिक मनिन के दीवां धरे हैं अनेक हास्य प्रसंग के चित्रामन लिखे है तहां वंगला के चारों ओर अनेक फूल फल लता सों छाय रही है सीतल मंद सुंगध वायु वहत है तहां सेज्या के पास रतन खचित चौकी है सामग्री फूलन की माला बहुत कस्तूरी सुगंध जल की झारी भरी धरी है। फूलन की झरोखा तहां सखी सव नेत्र लगाय लीला सरस दर्सन करि आनंद को अनुभव करत हैं। ता वंगला के दछिन भाग और एक वंगला है परम सुन्दर तहां श्री चन्द्रावली जी ठाकुरजी मिलि के लीला करत हैं। ता वंगला के आगे और अनेक कोटान कोटि वंगला सगरी स्वामिनी सखी के हैं नाना प्रकार के चित्र विचित्र तामसी भक्त के वंगला में तांमसी सामग्री तामसी लाली रस तहां है। राजसी भक्तके वंगला में राजसी सामग्री राज-सीरसको अनुभव है। जहां सात्विक सामिग्री है तहां सात्विकरस को अनुभव है। राजसी तामसी सात्विकी मिले अनेक गुण-

मय अलौकिक भक्त तहां जहां भक्त को जेसो मनोरथ तहां तेसी लीला ताहीं प्रकार के भाव के श्री ठाकुर जी तहां तेसो ही रस प्रगट करत है। श्री स्वामिनी जी और चन्द्रावली जी और कुमारिका के मुख्या राधा सहचरि इनकों निर्गुण भाव अलौकिक रहत है नाना प्रकार के पछी वृछन के ऊपर स्थिर होइ चंचलता छोडि नेत्र मूंद मौन होइ ध्यान धरि लीला रस परस्पर भक्तन के प्रभु के वचन हास्य परस गान रस ताकौ सुनि सुनि पछी सुकादि सब अनुभव करत हैं यह रस कैसो है जा रस के आगे ब्रह्मानंद हूँ लज्जा को पाबत है। कबहुँ सेज्या पर विहार कबहुँ हिंडोरा खाट पर झूलत हैं विहार करत हैं। कबहुँ प्रेम में भक्त अधीर ह्वै जात हैं। कबहुँ प्रेम में श्री ठाकुर जी अधीर ह्वै जात है। या प्रकार विहार करत हैं जो यह रस वेदादिक हूँ को अगम्य है। अंतरंगी भक्त जन मन में आनंद पाय रस को अनुभव करत हैं। सखा सब सुंदर छाया के नीचे दही दूधन फल बलदेव जी सहित आरोगत है। अनेक हास्य विनोद खेल खेलत हैं। गाय सब गहवर वन में चरत हैं। या प्रकार भक्तन के संग लीला करि सगरी सामग्री प्रभु अंगीकार करि अरगजा परस्पर लगाय फूलन की माला सिंगार धरावत हैं। परस्पर बीरी आरोग गार लेत हैं। कबहुँ चौपर खेलत में नाना प्रकार के हास्य बिनोद करत हैं। कबहुँ दोऊ सरुप को गलबाहीं देके जल सीतल देह में लगत है तब दोऊ सरुप सों सीतल तें होत हैं तब परस्पर आलिंगन करत है। कहुँ वृछन लो वेली लपटी देखि श्री राधाजी श्री कृष्ण सों लपट जात हैं। मानों स्याम तमाल सों कनक की बेली लपटी हैं। कहुँ मोर निर्त करत देखि के श्री राधा जी श्री कृष्ण सों कहत हैं यह मोर केसो सुंदर नाचत है या प्रकार तुमसों नाच्यौ जाय। तब श्री कृष्ण फेट पीतांबर सों बांधि मोर

के निकट आय निर्त करत हैं। तब मोर प्रसन्न होइ कुहकन लाग्यौ और निर्त करन लाग्यौ तब श्री राधा जी ने कही मोर में बडी चतुराई है जो नाचत है कुहुकत है तुम तो एक निर्त ही करत हो। तब श्री कृष्ण मुरली कटि सों निकार सुंदर सुर-सों करन लागे निर्त करन लागे तब गान सुन राधा जी कहे अब मोर की नाई निर्त भयो। तब श्री कृष्ण ने राधा जी सौं कह्यौ तुम्हारो निर्त नाही देखो केसो करत हो। तब श्री राधाजी तिरपि बांध के संगीत में ऐसो निर्त कीयो जो मोर हूँ अपनी गति में भूलि गयो और श्री ठाकुरजी हूँ अपनो निर्त करत करत भूल गये चकित होइ देखन लागे। तब ललिता विसाखा सखी सुर देन लगी सुंदर मधुर मृदंग ताल बजाए सो श्रीराधाजो को उस निर्त को देखत ही गोवर्द्धन आदि पर्वत द्रवीभूत भयो। वृछन ते मधुधारा वही सुंदर फूल लतान सो झरि झरि परत हैं। नदी को प्रवाह बंद ह्वै गयो सूर्य को रथ स्थिर ह्वै गयो सखीजन श्रम जान फूलन के पंखा करन लागीं। पाछे श्री कृष्ण और श्रीराधा जी गलवाहीं दे मिलि कें निर्त कियो। पाछे फेरि विहार करि श्रम भयो जान श्री जमुना जी में जल विहार कीये। तब जमुना जी के भीतर श्री श्री कृष्णा के अंग परस करि भली भांति नहवायो। तब श्री कृष्ण श्री राधाजी के सर्वांगमर्दन करि नह-वाय परस कीये केसे दोऊ सरूप के जल में छूटे हैं कंठ पर्यन्त जल में ठाढ़े हैं मानो नील कमल कनक कमल यमुनाजी में फूले हैं या प्रकार जल में अनेक लीलाविहार कर पाछे बाहुर रतन खचित चौकी पर गादी सखीन नें विछाय दीयो तापर दोऊ सरूप सूखे वस्त्र पहिर कें विराजे तब श्री राधाजो नें ठाकुरजो को मुख चुंबन करि सुंदर केसर को तिलक सवारि केसरि की खौरि किये पाछे केस सवारि के गुहे। अलकन पर मोतीन के

लर की अलकावलि वांधी सो मानु स्याम घन में वग पंकति तथा आकास तारा की पंगति है सुंदर सुंदर कुसुम गूथे मोर पछ को मुकुट सवारि कें ऊपर सीस फूल धारन कीये। मकरा-कृत कुंडल कर्ण में धराय चिवुक भूषण हीराको धरायो नासिका में वेसर धराये कपोलन पर कमल पत्र क्रि कंठ श्री पहिराय दुलरी पहिराय चंपकली हमेल गज मुक्ता की माला सौनें की साकर पदिक चौका पहिराये हसुली गजमुक्ता और अनेक अनेक मानिक की मिलिवा माला पहिराय जडाऊ, वाजूवंद पहुची हस्त साकलक मुदरी दसो अंगुरी में धराय कट में काछनी सूथन पीतांवर तन की वैजंती माला पहिरायो चरण कमल में जेहर नूपुर विछुवोनख भूखण पग फूल धराय बनमाला पहिरायौ तव श्री ठाकुरजी श्री राधाजी को हृदय से लगाये वेणी फूलन सों गूथि मोर चंद सीस फूल माथे धर मांग सवारि कें सेंदुर भर कस्तुरी की बेंदी ताके मध्य कुमकुम को वेंदी केसर की आड़ मोती की वेंदी वंदी मोती की लर चिवुक पर स्याम मसि विन्दु नक केसर भृकुटी सवारि कर्ण में जड़ाऊ टेढ़ी कंठ में पोत कंठ श्री हार मेल चंपकली दुलरी पद चौकी पचलरा सतलरा तव धराये स्याम कंचुकी कसिन वांह में वाजू वंदन पहिराय चूडी कंकण पछेली वराहथसों कलमुदरी हथफूल धराय लहगा फरियाई को लाल पहिराय नीलावर पहिराय कटि किंकिनी कसि चरण में महावर दे नूपुर अनवट विछिया जेहर गुजरी पग नख भूखण आदि धराए अंजन नेत्र में वनाये फूल की माला पहिराये। दोऊन को सिंगार भयो। तव ललिता सखी दोऊन कों देखायवै लायो। पाछे दोऊ सरुप फेरि निकुंज में पधारि नाना प्रकार की सामग्री परस्पर आरोग बिहार कीए। बीडी आरोग के परस्पर उगार लीये। तब श्री कृष्ण प्रेम में मगन होइकें श्रीराधाजी सों कहे

या वन के अैसे पंछी हैं तुम्हारो दर्सन कर तुम्हारी स्वरूप लीला को रस पान कर जीवत हैं और ये वृछ फूल वारी सरोवर सब लीला को उदोयन करत हैं और ये फूलन की सुगंध तुम्हारे अंग अंग की सुगंध मिलिकें मेरी नासिका भरि आय हृदय में मोकौं आनंद उपजावत हैं और ये सुन्दर सुन्दर कमल है इनकों परसि करि में जब नेत्र सों देखत हों तब तिहारे हस्त चरण मुख हृदय नेत्र इन को समरन होत है और श्री यमुना जी में भवर परत हैं सो देख कें तुम्हारी नाभि सरोवर को समरन होत है और ये नारंगी के फल लाल देखि तुम्हारे अधर को समरन होत है श्रीफल देखि तुम्हारे कुच को समरन होत है और ये केला के वृछ देखि तुम्हारे जंघ को समरन होत है और यह सरोवर पर हंस चलत हैं तिनको देखि तुम्हारे चरण की चाल को समरन होत है और ये दुपहरिया के पुष्प विवाफल देखि तुम्हारे अधर को समरन होत है और ये दारिम के फाटे हैं सों देखि कें तुम्हारे दंत पांति समरन होत हैं आर ये तिलक के फूल हैं शुक की चंचु हैं इनकों देखि कें तुम्हारी नासिका को समरन होत है। और ये पीपर के पत्र ऐसे सुन्दर देखि तुम्हारे कपोल को समरन होत है और यह वंगला पर कपोत पग की पंग बैठे कुहकत है सो तुम्तारे कंठ सों समरन करावत है और ये कोयल को वानी सुनि तुम्हारे विहार को समरन होत है। यह कहत ही दोऊ सरूप को प्रेम उमग्यौ सो फेर विहार करन लागे। अलिगन चुंवन करि प्रेम के समुद्र में मन दोऊ के परे रस वस भये। सखी उह निकुंज के वंगला के आस पास चहुं ओर ठाढी होइ वारंवार लीला को अवलोकन करि वारम्बार वलैया लेत हैं। तव श्री राधा जी श्री कृष्ण सौं कह्यौ तुम मेरे प्राण प्रिय हो मेरे जीवन हो कोई वडौ अलौकिक पुण्य है जो

तुम्हारो संग पायो है। और तुम विना मेरो घरी छण जो वीतत है सो जुग समान वीतत है तुम्हारो स्याम सरूप है साके भाव सौं में नीलावंर स्याम कंचुकी धारन करि काल व्यतीत करत हौं ताते तुमसों में यह मागति हों जो तुमसों एक छण वियोग मोसो न होइ। तव श्रीकृष्ण ने कही तुमसों वियोग कैसे होइगो तुम मेरे हृदय में विराजत हो मैं तुम्हारे हृदय में विराजत हों यह निश्चय मन में जानो और तुम तो या प्राण जीवन हो तुम्हारे संबंध करि सगरो ब्रज मेरे हृदय में बस रह्यौ है में ब्रज के पात पात त्रिन त्रिन रज को कन कन में व्याप रहा हूँ ताते यह सगरो व्रज मेरो रूप है मोको यह व्रज अैसो प्रिय है अैसो वैकुंठ हू मोको प्रिय नाही है व्रज के जीव मोकों अैसे प्रिय हैं जो मोकों लछिमी आदि वैकुंठ वासी प्रिय नाहीं हैं। तातें में तुम्हारे प्रेम के वस हों! तुमकों एक छिण छोडिवे को मोपै सामर्थ नाही है। मोको व्रजसवंधी पदारथ वहुत प्रिय हैं यह सुनकें श्री राधा जी प्रसन्न होइ श्री कृष्ण कों हृदय सों लगाय लीयो पाछे श्री राधा जी ने श्री कृस्ण सो कह्यौ जैसे मोपर तुम कृपा करत हो तुम प्रिय हो तैसें ही सखी मोकों प्रिय है। काहे तें हमारी तुन्हारी लीला संवंध मिलावनों सगरी सेवा तो सखी की हे ताते सखी वरावर भाग तो काहू को नाहीं है हमको तो सखी जन को भरोसो है। काहे ते सखी जन तुमको मिलावत हैं यह सुन ललिता विसाखा जी आदि सखी सव आय श्री राधा जी कौ डंडौत करि श्री कृष्ण को डंडोत करि दोऊ सरूप के चरण पकरि विनती कियो वलि जाउ मोको तुम्हारे विहार में जो सुख आनंद है सो कहूँ नाही है ताते हम यही तुमतें सदा सर्वदा मांगत है जो जुगल स्वरूप यह तुम्हारो सोई सदा ध्यान रहो और सदा दोऊ स्वरूप की सेवा में मन की हुलास प्रीति

रहो । अखंड तुम्हारो विहार श्री वृन्दावन कुंजन में करि हमको लीला रस को दान करो तुम्हारी प्रसादी वस्त्र आभूषन तें दोऊ सरूप निरखि कें हृदय में सदा मन लगाय कें ध्यान करै श्रवन सों तुम्हारी परस्पर हास्यवानी सुनै रसना सौं तुम्हारी विहार लीला को सदा ध्यान करै सो तुम्हारी सेवा सिंगार करै । नासिका सों तुम्हारे दोऊ के श्री अंग के सुगन्ध कु वास लेय, पायन सो चलि तुम्हारे निकट आय टहल करै मस्तक सदा दोऊ सरूप के चरन कौं नमस्कार करे । तुम विना एक हमको आश्रय मति होउ हम विना मोल की दासी हैं । हमको कछु ज्ञान योग साधन कछु नाहीं है और न कछु चाहिए एक तुम्हारी दोउ सरूप की कृपा कटाछ हमारे पर हो और हम एक और मागत हैं जो तुम्हारे दोऊ स्वरूप की लीला रससुं विरोधी है तथा जाको यह रस प्रिय नाही है उनको संग एक छण सुपने में मति दीजो यह प्रकार सखिन के वचन सुनि के दोउ स्वरूप वहुत प्रसन्न होइ सगरी सखी जन कों हृदय सों लगाय कहे तुम हमारे प्राण प्रिय सखी हो तुम्हारो द्रढ भाव है हम सदा प्रसन्न हैं । यह कहि सगरी सखिन को वीडा दीये और ललिता विसाखा आदि अंत रंग सखी कों उदगार (चर्वन) दे विहार करि बस्त्र आभूषन दूसरे पहरे हते सो प्रसादी वस्त्र आभूषण दीये तव सखी जन अपनो गुण प्रकट कीयो । ललिता जी निर्त कीयों विसाखा जी गान कीयो और सव सखी अनेक वाजे वजाये कें दोउ सरूप नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण पहिराये सवन के मनोरथ पूर्ण कीये सगरी सखी आसीर्वाद दीयो सदा या प्रकार नित्य नौतन विहार वृंदावन की कुंज में करि हमको सुख देहु । या प्रकार सखी जनकी विनती सुनि दोऊ सरूप प्रसन्न होइकें कह्यौ, ललिता विसाखा आदि सव सखी अपनी अपनी कुंज में गईं

तव श्रीराधाजी ने श्रीकृष्ण सों कह्यौ या प्रकार ललिता विसाखा सखी को विहार करि सुख देत हो ता प्रकार सगरी सखी को विहार कर सुख देहु। तव श्री ठाकुर जी अनेक रूप करि सखी जन के कुंज में पधारि के विहार करि सुख दीयो। इहां श्री राधाजी सों विहार करन लागे या प्रकार सव को रसदान पाछे सगरे कुंज सों अन्तर्धान ह्वै एक श्री राधा जी पास श्री कृष्ण तिनके स्वरूप मे लीन भए। या प्रकार श्री राधाजी कों परम आनंद दे मन के मनोरथ पूर्ण करने लगे। तन के ताप नसाइ सेज पर उठके वैठे परस्पर गलवाहीं दीये। तब ललिता विसाखा आदि सखी मव आईं विहार कीये तासों लज्जा सहित निज दृष्टि किये ठाढी भईं। तव श्री राधा जी प्रसन्न होइ कहे ललिता विसाखा लज्जा क्यों करत हौ। तव ललिता विसाखा सखी मुसिकाय कें कह्यौ तुमनें हमसों मन कीनी हमारे सिंगार हू अस्त विस्त विहार करि कराये हमारे हु लाज खोंई तव श्रीराधा जी ने कही जैसो कोई करे तैसो पावे। तुमनै मोकौं श्री कृष्ण सो मिलायो मैं तुमकौ श्रीकृष्ण मिलायो ताते यह श्रीकृष्ण व्रज में वडो कारो नाग है उन नाग कौ काट्यौ विष उपाय कीयो उतरत नहींहै और यह श्री कृष्ण नाग के नैंनन में विष है। सो जाकी ओर दृष्टि भरके देखे ताको अेसो विष चढे जो जन्म जन्म में कोटि उपाय कोऊ करो परन्तु विष उतरत हे नाहीं। यह श्रीराधाजी श्रीकृष्ण सों कह्यौ मेरो सिंगार अस्त विस्त भयो सो सवार देहु। तव श्री कृष्ण नें राधाजी कौ सिंगार सवारो सखी नें परस्पर एक एक को सिंगार सवारो। पाछे सखी जन मेवा मिठाई पकवान थार में सजा कें फेर ल्याई सो जुगल सरूप प्रीति सों आरोगे सगरी सखी नाना पकार के विंजन भोजन कीयो। दोऊ सरूप सखी जन की सहित वीरी आरोगाई।

तब श्रीकृष्ण सों कह्यौ अहो प्राणनाथ छैल छबीले तिहारी कछु मोसों अनिर्वचनीय प्रीति है। जब तुमकौ देखत हौं तब सब कौ छोडि मोहि सो आसक्त हो और मेरे हू मन की कछु ये ही टेक परी है जो विछुरन मिलन में तुम्हारे सरूप में मन लीन रहत है या प्रकार रहसमय वार्ता दोऊ जुगल किशोर करत हे। इतने ही में पूर्णमासी जी वृंदा देवी तहां आय कें दोउ जुगल किसोर की वलैया कहेन लागी अहो प्राण जीवन नंदराय कुमार वृंदावन चन्द्र श्री जशोदा जी की छाक आवन की वेर भई। जसोदा जी के घर तें चली सो मारग में आई है अव कोई घरी में इहां सांकरी खोर में आवेगी ताते अपने सखान के जूथ में पधारि कें भोजन करो और श्री राधा प्राण प्यारी को घर विदा देहु घर में कीरत माना इनकी वाट देखत हैं वृषभांन जी भोजन नाहीं करत यह कहत हे राधा जी आवें तो भोजन करूं। तव उह सघन गहवर वन की देवी सखी ने सुंदर सुंदर फल फूल ल्याय दोउ सरूप के आगे भेट करयौ तव श्रीकृष्ण फल फूल सों श्री राधा जी कौ गौद भरि दीयो पाछे सगरी सखिन कों फल फूल वांटि दीये। कछु आपहु अंगीकार कीये। तव श्री राधा जी ललिता विसाखा आदि सखिन के संग घर कों चली। वारवार श्री कृष्ण की ओर दृष्टि-भरि भरि निरषि कें सरूप हृदय में धरि घर को गई। कीरत जी द्वार पर ठाढी रही सो श्री राधा जी कों गोद में ले हृदय सों लगाय वृषभान जी के पास ल्याय प्रीत सों भोजन कराये। और श्री कृष्ण गहवर वन के निकुंज सों उठिकें सखान के जूथ में सों सांकरी खोर आये इतने में छाक आई तव छाक ले गायन कों घेरि सगरे सखा श्री बलदेव जी सहित तहां ते चले सो गोवर्धन के निकट मानसीगंगा पर छोकर कदंव के कुंज तहां छाया नीचें ग्वाल मंडली कर छाक आरोगे। तहां विश्राम कीयो। सुंदर फूलन के विछोना सखान ने कर दीये। श्रीदामां सखा के गोद में सिर धरि श्री राधा जी कौ ध्यान धरि पौढे। कोई सखा चरण पलोटत है कोई सखा फूलन कौ पंखा ले वयार करत है। उहां श्री राधा

जी सखीन सहित कीरत जी के पास भोजन कर पाछे सखी के संग द्वार पर खेलन मिस आई । श्रीराधाजी श्रीकृष्ण के प्रेम सों व्याकुल भई तब ललिता विसाखा सों कह्यौं हे सखी अब मो कौ महा कठिन भई यह कहि प्रेम में कछु कछु बोलत भई यह नंदलाल श्री कृष्ण महानिलज है । मेरी हू याने लाज खोली है तातें हे सखी इनसों कहो मेरे आगे तें नेंकु दूरि जाहि मेरी बाहु पकरत है मोसों हसंत है सो मुखरा आय जायगी तो देख के खीझेगी । यह कहि फेर कह्यौ पूर्णमासी जी की कृपा तें मोकों श्री कृष्ण मिले अब मेरे प्राणनाथ मोकों कब मिलैंगे । श्रीकृष्ण मेरे प्राण जीवन है मैं इनके आधीन हों । हे कृष्ण मोकों कुज गृह में ले जाय सेज्या के ऊपर विश्राम करो । या प्रकार श्री राधा जी के हृदय में विचित्र भाव उत्पन्न भयो सो कृष्णमय ह्वै गई । तब मुखरा कह्यौ बेटी मुख कमल कुभिलाय रह्यौ है घर चल के कीरत जी पास भोजन करो । तब राधा ने सखी सहित कह्यौ अब ही कीरत जी पास भोजन करि द्वार पर खेलन कौं आईं हैं । तब मुखरा कह्यौ भली मेरी बेटी मध्यान समय दूर खेलन मति जइयो । यह कहि मुखरा अपुने घर गई । तब ललिता विसाखा आदि सखी सहित श्रीराधा गोवर्धन पर्वत पास मानसी गंगा पार आई सो श्रीराधा जी के चरन के नूपुर की धुनि सुनि चौंकि कै उठे । तब दूरि ते श्रीराधा कौं देखि सखान सों कह्यौ तुम इहां विश्राम करो मैं कुंज में होय कें आवत हों यह कहि श्री राधा को सेन दे गोवर्धन की कंदरा में विसाखा सखी के सहित श्री राधाजा भुजा कंठ मेलि पधारे तब नाना प्रकार के विहार किऐ । तहां गोवर्द्धन सखा भेष होय नाना प्रकार की रचना कुंजन की कर राखी है अलौकिक राग भोग सामिग्री से तहां सब गोपिन कों सुख दीयो या प्रकार ब्रज वृंदावन गोवर्द्धन श्री यमुना जी के तीर नित्य विहार करत है ॥ श्रीराधारमणजी ॥

॥ श्री श्री मिभाइ सु. १० र० सं १८७० सं ॥ ॥ इति ॥

बाबा कृष्णदास के द्वारा

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधर भट्टजी की वाणी(राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित)॥)
२. सूरदास मदनमोहन जी की वाणी ,, ॥।)
३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृत) बाबा कृष्णदास के द्वारा ॥=)
४. बल्लभ रसिकजी की वाणी ।=)
५. गीतगोबिन्द पद (श्रीरामरायजीकृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) =)
८. श्री चैतन्यचरितामृत (श्रीसुवलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दाबनदासजीकृता) =)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजीकृत) ।)
११. प्रेमभक्तिचान्द्रका (वृन्दाबनदासजी कृता) ।)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदास कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृत) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।—)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुर महाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायबोधिनी (कविबर मनोहरजी कृता) =)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)
२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ॥)
२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) ।)

२२.ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनीटीका की भाषा(श्रीरामकृपाजीकृ
२३. किशोरीदास जी की वाणी
२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजीकृता)
२५. क्षणदागीतिचिंतामणि (मनोहरदासजी)
२६. अष्टयाम (श्रीवृन्दाबनचन्द्रदास विरचित)
२७. श्रीचैतन्यभागवत (आदि, अन्त्यखंड)
२८. स्मरणमंगलभाषा (गुणमंजरीकृता)
२९. श्री ब्रजयात्रा–एवं चरनपूर्णानन्द जी ग्रन्थावली
३०. रसिकजीवनि (कविवरमनोहरजी)
३१. गोविन्दलीलामृत भाषा तथा पद्यावली भाषा
(शीतलदासजी तथा शिवपद
३२. विदग्धमाधववार्ता
३३. ब्रजभाषाग्रन्थत्रय

पुष्पराज प्रेस, मथुरा।